₹25

क्रान्ति

अप्रैल 2016



- सहिष्णुता
  –मौलाना अबुल आला मौदूदी
- बच्चे और खेल
  –अफ़ज़ल हुसैन
- आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के पीछे मुसलमान
  –डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात
- प्रिंट मीडिया का बदलता इतिहास
  –नरेश सिहाग 'बोहल'

HINDUSTAN
Pavers & Blocks
Group

Established Since 1977

Anwar Khan
+91 9822427700
Akbar Khan
+91 9822497700

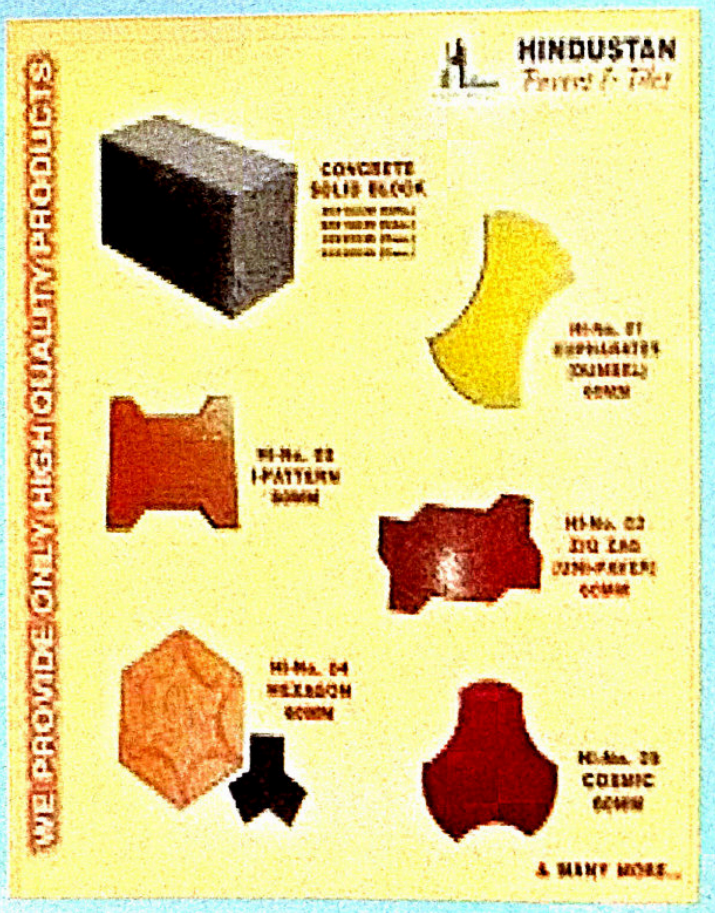

HINDUSTAN INDUSTRIES

Your Lifestyle Paving Company

Manufacturers Of Solid Concrete Blocks, Interlocking Pavers, Tiles & Allied Concrete Products

Colvale IDC, Colvale, Mapusa-Goa
Phone : 0832 2257700, 0832 2257900
Email : hindustanindustriesgoa@gmail.com

www.hindustangroupgoa.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 25 अंक 10 अप्रैल 2016

उन लोगों की ओर तनिक भी न झुकना, जिन्होंने अत्याचार की नीति अपनायी है, अन्यथा आग तुम्हें आ लिपटेगी और अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र न होगा।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

तुम्हारा ख़ून बहा है जहां-तहां लोगो
मर ये ख़ून न जाएगा रायगां[1] लोगो

हमीं बनेंगे तुम्हारे भी तर्जुमां[2] लोगो
ज़रा तुम अश्क तो छलकाओ बेज़बां लोगो

खुदा का शुक्र कि महफ़िल में ज़िक्रे-दार[3] छिड़ा
हमें तो आने लगी थीं जमाहियां लोगो

निकालने हैं तुम्हें ख़ुद ही पांव के कांटे
पलट के तुम को न देखेगा कारवां लोगो

लगी थी ठेस ही कुछ तेज़ो-तुन्द[4] लहजों की
बिखर के रह गयीं शीशा-मिज़ाजियां[5] लोगो

बग़ैर मोजिज़ा[6] यूं फूटते नहीं चश्मे
कोई रगड़ता रहे लाख एड़ियां लोगो

जो चाहते हो कि तारीख़[7] ताबनाक[8] बने
मिला दो ख़ाक में अपनी जवानियां लोगो

सितम के बाद करम के पयाम[9] आएंगे
मक़ाम ये बड़ा नाज़ुक है सख़्तजां लोगो

वहीं-वहीं नज़र आया है सर बलन्द 'हफ़ीज़'
पड़ी है सर की ज़रूरत जहां-जहां लोगो।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. बेकार, व्यर्थ 2. प्रवक्ता 3. फांसी के तख़्ते का ज़िक्र 4. तेज़ और कर्कश 5. नाज़ुक मिज़ाजियां 6. चमत्कार 7. इतिहास 8. रौशन 9. पैग़ाम



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार (हदीस मंजरी)		6
भ्रष्टाचार पर क़ाबू न पाने का निहितार्थ (संपादकीय)		7
मुझे इन्तिज़ार है... (आपके पत्र)		9
सहिष्णुता (उद्‌बोधन)	–मौलाना अबुल आला मौदूदी	15
कुख्यात अपराधियों को पीछे छोड़ते नाबालिग़ (ज्वलंत सामयिक)	–चांद ख़ां रहमानी	21
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (व्यक्तित्व)	–संपादन प्रभाग	23
बच्चे और खेल (विशेष आयोजन)	–अफ़ज़ल हुसैन	26-27
दक्षिण एशियाई खेलों में भारत की बादशाहत (खेल-खिलाड़ी)	–ए॰ एन॰ शिबली	33
घोषणा पत्र, इन्सान (लघुकथाएं)	–रोहित यादव	34
तेरे बिना (कहानी)	–सुमित्रा देवी माला	35
भगदड़ (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	36
भारतीय और इस्लामी दर्शन में इस्लाम (पुस्तक समीक्षा)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	37
आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के पीछे मुसलमान	–डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात	39
सूचकांक सुख शांति का (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	40
क्या करें जब हर्ट फेल्योर हो जाए (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव	41
सूखे का सामना...(सामयिकी)	–भारत डोगरा	43
दीवार, ईनाम (लघुकथाएं)	–रोहित यादव	44
प्रिंट मीडिया का बदलता इतिहास (मीडिया)	–नरेश सिहाग 'बोहल'	45
दोहे	–राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर'	46
अतिरिक्त हूं (कविता)	–शूचि वन्दना	46
बदलनी होगी विकास की अवधारणा (दृष्टिकोण)	–सवाई सिंह	47
चील : तेज़ निगाहों वाला शिकारी (बालवीथी)		49

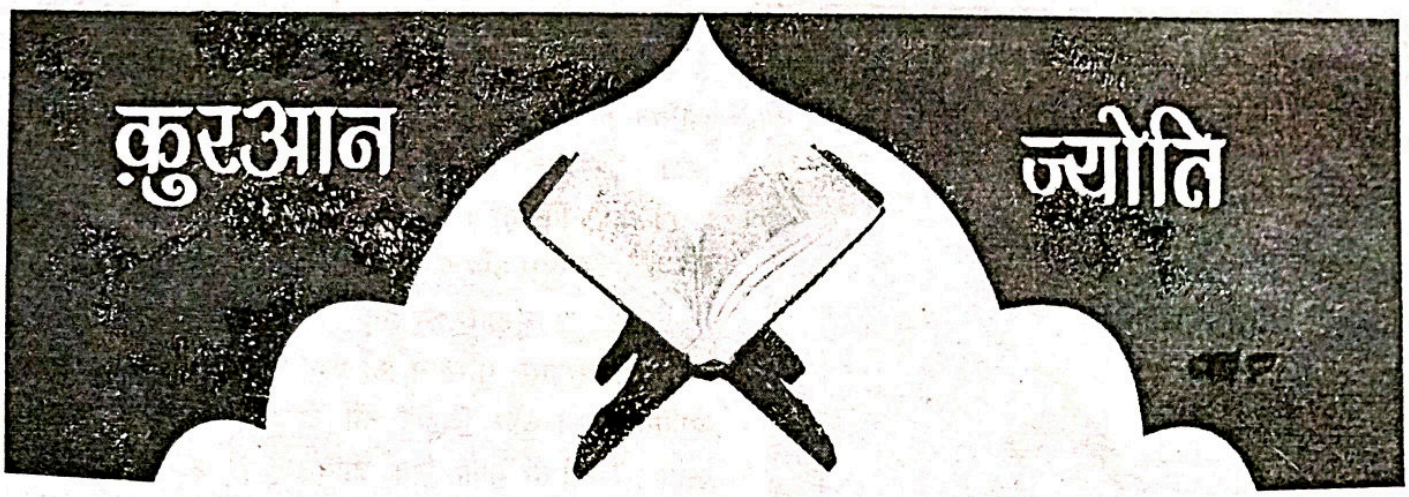

(105) फिर तुम उसकी ओर पलटाए जाओगे जो खुले और छिपे सबको जानता है और वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो ।[100]

(106) कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी अल्लाह के आदेश पर ठहरा हुआ है, चाहे उन्हें सज़ा दे और चाहे उन पर सिरे से मेहरबान हो जाए । अल्लाह सब कुछ जानता है और तत्वदर्शी और सर्वज्ञ है ।[101]

(107) कुछ और लोग हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनायी इस उद्देश्य के लिए कि (सत्य सन्देश को) हानि पहुंचाएं और (अल्लाह की बन्दगी करने के बजाय) कुफ़्र (अवज्ञा) करें और ईमान वालों में फूट डालें और (इस दिखावे की इबादतगाह को) उस आदमी के लिए घात-स्थल बनाएं जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल के विरुद्ध लड़ चुका है । वे अवश्य ही क़समें खा-खाकर कहेंगे कि हमारा इरादा तो भलाई के सिवा किसी दूसरी चीज़ का न था, परन्तु अल्लाह गवाह है कि वे बिल्कुल झूठे हैं ।

–क़ुरआन, 9 : 105-107

---

100. अर्थ यह है कि अंततः मामला उस अल्लाह के साथ है जिससे कोई चीज़ छिप नहीं सकती । इसलिए मान लीजिए अगर कोई आदमी दुनिया में अपने निफ़ाक़ को छिपाने में सफल हो जाए और इंसान जिन-जिन कसौटियों पर किसी के ईमान और निष्ठा को परख सकते हैं उन सब पर भी पूरा उतर जाए, तो यह न समझना चाहिए कि वह निफ़ाक़ की सज़ा पाने से बच निकला है ।

101. गुनाहगार मोमिन होने का । इन दोनों चीज़ों के प्रतीक अभी पूरी तरह न उभरे थे । इसलिए अल्लाह ने इनके गुनाहगार मोमिन होने का । इन दोनों चीज़ों के चिह्न अभी पूरी तरह न उभरे थे । इसलिए अल्लाह ने इनके मामले को स्थगित रखा । न इस अर्थ में कि वास्तव में अल्लाह के सामने मामला संदिग्ध था, बल्कि इस अर्थ में कि मुसलमानों के किसी व्यक्ति या गिरोह के मामले में अपनी रीति-नीति उस समय तक न निश्चित करनी चाहिए जब तक कि उसकी दशा ऐसी निशानियों से स्पष्ट न हो जाए जो ग़ैब (परोक्ष) के ज्ञान से नहीं, बल्कि चेतना और बुद्धि से जांची जा सकती हों ।

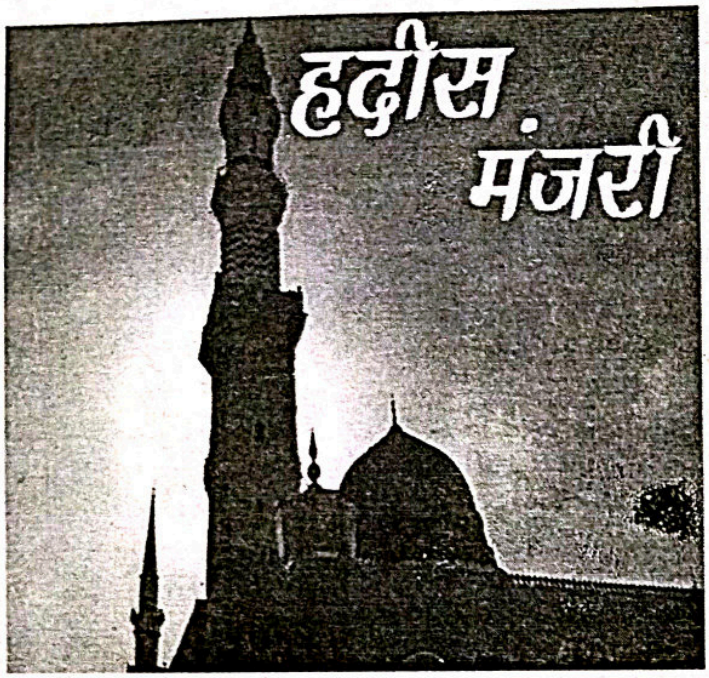

माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार और नातों-रिश्तों को जोड़ना

● एक रिवायत में है : ऐ अल्लाह के रसूल, लोगों में कौन सबसे ज़्यादा मेरे अच्छे व्यवहार और सहचरता का हक़दार है ? आपने कहा : "तेरी मां, फिर तेरी मां, फिर तेरी मां, फिर तेरा बाप; फिर जो रिश्ते-नाते में तुझसे ज़्यादा क़रीब हों जो रिश्ते-नाते में तुझसे ज़्यादा क़रीब हों ।"

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "धूल-धूसरित हो उसकी नाक, फिर धूल-धूसरित हो उसकी नाक, फिर धूल-धूसरित हो उसकी नाक (अर्थात अपमानित हुआ) जिसने अपने माता-पिता को, एक को या दोनों को बुढ़ापे की हालत में पाया और (उनकी सेवा करके) जन्नत में प्रवेश न किया ।" –मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति चाहता है कि उसकी रोज़ी कुशादा की जाए और उसकी आयु दीर्घ हो, तो उसे चाहिए कि नाते-रिश्तों को जोड़े रखे ।"
–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) कहते हैं कि एक व्यक्ति नबी (सल्ल॰) के पास आया और कहा कि मैं आपसे हिजरत और जिहाद पर बैअत करता हूं, ध्येय मेरा अल्लाह तआला से बदला पाने का है । आपने कहा : "क्या तुम्हारे माता-पिता में से कोई जीवित है ?" उसने कहा कि हां, बल्कि दोनों । आपने कहा : "और तुम अल्लाह तआला से बदला चाहते हो ?" उसने कहा कि हां । आपने कहा : "लौट जाओ, अपने मां-बाप के पास और उनके साथ अच्छा व्यवहार करो ।"
–बुख़ारी, मुस्लिम ये शब्द मुस्लिम के हैं ।

और बुख़ारी, मुस्लिम की एक रिवायत में है : "एक व्यक्ति आया और जिहाद की अनुमति चाही । आपने कहा : "क्या तेरे माता-पिता जीवित हैं ?" उसने कहा कि हां । आपने कहा : "तो तुम जिहाद करो उनकी सेवा के रूप में ।"

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "रिश्तों-नातों को जोड़ने वाला वह नहीं है जो बदले में अच्छा व्यवहार करता हो बल्कि नातों-रिश्तों को जोड़ने वाला वह व्यक्ति है कि जब उससे नाता-रिश्ता तोड़ लिया जाए तब भी नाते-रिश्ते को जोड़े रखे ।" –बुख़ारी

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "नाता-रिश्ता अल्लाह के सिंहासन से टंगा हुआ है, कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसे जोड़ेगा और जो तुझे काटेगा अल्लाह उसे काट देगा ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र (रज़ि॰) कहती हैं कि मेरी मां मेरे पास आयी, और वह अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के समय में मूर्तिपूजक थी । मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से पूछा : मेरी मां मेरे पास आयी है और वह कुछ चाहती है, तो क्या मैं अपनी मां के साथ नाते-रिश्ते का बर्ताव करूं ? आपने कहा : "हां, अपनी मां के साथ नाते-रिश्ते का बर्ताव करो । –बुख़ारी, मुस्लिम

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

भ्रष्टाचार पर क़ाबू न पाने का निहितार्थ

लगता है, भ्रष्टाचारी किसी सरकार से नहीं डरते । इसलिए भ्रष्टाचार की घटनाएं बार-बार सामने आ रही हैं । अब एक सर्वे में यह तथ्य उजागर हुआ है कि मोदी सरकार के दौरान भी भ्रष्टाचार कम नहीं हुआ है, जबकि भ्रष्टाचार से परेशान जनता ने सुशासन की चाह में सत्ता-परिवर्तन किया था । ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के करप्शन परसेप्शन इंडेक्स (सी॰पी॰आई॰) की ताज़ा रिपोर्ट में है कि सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार का वही हाल है, जो एक साल पहले था । जनता की भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ लगातार लड़ाई के बावजूद उक्त संगठन के सर्वेक्षण में देश को महज़ 38 अंक मिले हैं । पिछले वर्ष भी भारत के इतने ही अंक थे । 168 देशों की सूची में भारत का स्थान 76वां है । यह इंडेक्स 168 देशों में सरकारी क्षेत्र की कंपनियों में भ्रष्टाचार की स्थिति पर आधारित है । इंडेक्स में जितने अधिक नंबर होते हैं, भ्रष्टाचार उतना ही कम होता है । इस हिसाब से भारत की स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ है । वहीं पिछले साल रैंकिंग में 174 देश शामिल थे और उनमें भारत 85वें नम्बर पर था । ऐसे में इस बार देशों की संख्या कम होने से रैंकिंग भी कम हुई है । पड़ोसी देशों की बात करें तो भूटान के हालात सबसे बेहतर हैं । 65 अंकों के साथ यह देश 27वें नंबर पर हैं । भारत के सभी पड़ोसी सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार की समस्या से बुरी तरह जूझ रहे हैं । इस रैंकिंग में चीन 83 तो बंगलादेश 139वें पायदान पर है । पाकिस्तान, श्रीलंका और नेपाल के अंकों में मामूली इज़ाफ़ा हुआ है । वहीं दुनिया में डेनमार्क सबसे कम भ्रष्ट देश है । उसे 91 प्वाइंट्स के साथ लगातार दूसरे साल यह तमग़ा मिला है । दूसरे नम्बर पर स्थित फिनलैंड के 90 और स्वीडन के 89 नम्बर हैं । उत्तर कोरिया और सोमालिया सूची में सबसे नीचे हैं । दोनों देशों का स्कोर आठ है । ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के एशिया पैसेफ़िक क्षेत्र के डायरेक्टर श्रीरक प्लीपट के मुताबिक़, भारत में भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए किये वादों को तोड़ने के मामले बहुत अधिक हैं । ऐसे मामले मई 2014 में हुए आम चुनाव से फ़रवरी 2015 दिल्ली विधानसभा के बीच ज़्यादा देखे गये हैं । उन्होंने कहा कि इस वर्ष जारी सी॰पी॰आई॰ इंडेक्स से जनता और नेताओं को कड़ा संदेश मिलेगा । जनता अब सरकार से भ्रष्टाचार के ऊपर सवाल पूछ सकेगी और चुनावी वादों को निभाने के लिए दबाव बना सकेगी । साथ ही उन्होंने वर्तमान मोदी सरकार के कामकाज पर कहा कि यह सरकार वादा करने में सबसे आगे है और निभाने में सबसे पीछे ।

सभी जानते हैं कि केन्द्रीय सत्ता में आने से पहले से ही भ्रष्टाचार और काले धन को जिस तरह नरेंद्र मोदी ने अपना बड़ा मुद्दा बनाया था, उससे इस सोच को बल मिला था कि नयी सरकार भ्रष्टाचार और भ्रष्ट लोगों के ख़िलाफ़ सख़्त क़दम उठाएगी, लेकिन लगभग डेढ़ वर्ष से अधिक गुज़र जाने के बाद भी अमलन कुछ ख़ास नहीं हो सका । यह बात अलग है कि सरकार बनते ही प्रधानमंत्री मोदी ने न्यायालयों में भ्रष्ट नेताओं पर चल रहे मामलों की फास्ट ट्रैक सुनवाई करने की अपील की, मगर अभी तक कुछ हो न सका ! दूसरी ओर इस पर भी ग़ौर किया जाना चाहिए कि वर्तमान कैबिनेट में तमाम आपराधिक मामलों में आरोपित लोगों की तादाद पुरानी कांग्रेस सरकार के दागी मंत्रियों से क़रीब दोगुनी है । 66 सदस्यीय वर्तमान कैबिनेट के क़रीब एक तिहाई मंत्री आपराधिक धमकी, धोखाधड़ी, तो कुछ दंगा भड़काने और बलात्कार जैसे गंभीर आरोपों में घिरे हैं । लोकपाल भी अभी तक हवा में है । 'आप' के लोकपाल को भी मोदी सरकार ने रोककर क़ानूनी दांव-पेंच के हवाले कर दिया है और केजरीवाल सरकार को निबटाने पर पूरा ज़ोर लगा रखा है । भ्रष्टाचार विरोधी क़ानून में उचित संशोधन करने के साथ ही लोकपाल जैसी व्यवस्था को लागू करने से भ्रष्टाचार पर रोकथाम में काफ़ी मदद मिल सकती है । आर्थिक विकास से ही भ्रष्टाचार उन्मूलन-संभव नहीं । फिर देश का अपेक्षित आर्थिक विकास भी तो नहीं हो पा रहा ! 1983 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भ्रष्टाचार को वैश्विक चलन कहा था । इस वक्तव्य के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय ने प्रधानमंत्री के ऐसी बात करने पर खेद जताया था । 1989 के लोकसभा चुनाव में भ्रष्टाचार का मुद्दा छाया रहा । तब से लेकर आज तक चुनावी अभियानों में भ्रष्टाचार मिटाने के दावे बढ़-चढ़कर उछाले जाना आम बात हो गयी है । ऐसे में इन दावों की कलई तब खुलती है, जब भारत सूची में बुर्किना फासो, जमैका, पेरु और जाम्बिया जैसे ग़रीब देशों के पायदान जैसा पाया जाता है । वस्तुस्थिति यह है कि आज हमारा देश भ्रष्टाचार और नैतिक पतन से गंभीर रूप से जूझ रहा है । भ्रष्टाचार पूरी व्यवस्था को तबाह और बर्बाद कर रहा है । जब तक इन्सान के नैतिक अस्तित्व को सबल नहीं बनाया जाएगा और उसके अंदर ईशपरायणता एवं ईशभय नहीं पैदा होगा, तब तक भ्रष्टाचार-उन्मूलन असंभव है । पूरी सृष्टि में केवल इन्सान ही ऐसा प्राणी है, जिसे कर्म और इरादे का अधिकार प्राप्त है । वह ईश्वर द्वारा स्रष्ट सभी जीवों और चीजों में सर्वश्रेष्ठ है, अत: सृष्टि की बहुत-सी चीज़ें उसके वशीभूत की गयी हैं, जिनका वह अधिकारपूर्वक उपभोग करता है और कर सकता है । यहां यह तथ्य भी स्पष्ट रहे कि इन्सान के न तो अधिकार असीमित हैं और न ही उपभोग । उसके लिए भी एक सीमा-रेखा है, जिसे मर्यादा कहते हैं । यह चीज़ ही इन्सान को नैतिक अस्तित्व प्रदान करती है । मर्यादा और नैतिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए ही सदाचरण के द्वारा इन्हें परिमार्जित करने एवं जीवन को उच्चता की ओर ले जाने के लिए इन्सान को आध्यात्मिकता की ज़रूरत होती है, जो उसके जीवन की नैसर्गिक, बुनियादी और अपरिहार्य आवश्यकता है । अत: भ्रष्टाचार- निवारण के लिए अनिवार्य है कि इन्सान अपने स्रष्टा-पालनहार की ओर पलटे और उसका आज्ञाकारी और ईशपरायण बने ।

मुझे इन्तिज़ार है...

क्या कोई राष्ट्रभक्त वकील आज सुप्रीम कोर्ट में 3 मार्च को जे॰एन॰यू॰ में कन्हैया कुमार के दिये भाषण और दिल्ली हाईकोर्ट की जज प्रतिभा सिंह के दिये निर्णय तथा एक समाचार पत्र में जज महोदया के कार्टून पर विचार करने हेतु कोई जनहित याचिका दायर करेगा ? जिस प्रकार एक अख़बार ने जज महोदया का कार्टून बनाया है वह जज महोदया का कार्टून नहीं बल्कि देश की न्यायपालिका का भद्दा मज़ाक़ है ?

एक महिला जज के दिये निर्णय से समाचार पत्र स्वामी और मुख्य संपादक सहमत या असहमत हो सकते हैं लेकिन कार्यरत पदासीन जज महोदया का कार्टून नहीं बनाया जा सकता क्योंकि कार्यरत पदासीन महिला जज का कार्टून प्रकाशित करना यौन शोषण की श्रेणी में आता है । विडंबना है कि राष्ट्रीय महिला आयोग इस ज्वलंत विषय पर चुप है जबकि 8 मार्च को राष्ट्रीय महिला दिवस भी है / क्या कोई समाचार पत्र या चैनल भारत के संविधान से भी ऊपर है, क्या मीडिया की आज़ादी का अर्थ यह है कि देश की न्यायपालिका का मज़ाक़ उड़ाया जाए और एक महिला जज का कार्टून प्रकाशित किया जाए ?

शर्म आनी चाहिए उन पाठकों को भी जो ऐसे अख़बारों को पढ़ते हैं जिनके संपादक देश के संविधान और क़ानून व्यवस्था का उपहास उड़ाते हों ? अभिव्यक्ति की आज़ादी पर बड़े-बड़े ब्लॉग लिखने वाले और प्राइम टाइम में बहस करने वाले बुद्धिजीवियों को देश के संविधान और न्यायपालिका का मज़ाक़ उड़ाने का लाइसेंस देने वाले मंत्रालय पर माननीय राष्ट्रपति महोदय को आख़िरकार अब कोई निर्णायक प्रावधान खोजना ही होगा ।

जिस प्रकार की भाषा कन्हैया कुमार ने बोली है और जे॰एन॰यू॰ के कार्यरत टीचर ने कश्मीर संबंधी अपने विचार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा सार्वजानिक किये हैं उससे तो यही लगता है कि भारत को ख़तरा पाकिस्तान से नहीं बल्कि कुछ मीडिया घरानों से अधिक है क्योंकि कुछ मीडिया घराने लगातार भारत को अस्थिर करने का षड्यंत्र रच रहे हैं और यदि समय रहते इनका उपचार नहीं किया गया तो बहुत बड़ा संकट दस्तक दे रहा है ।

यू॰पी॰ के ज़िला बुलंदशहर में भी एक महिला ज़िलाधिकारी की एक अख़बार के रिपोर्टर के साथ कुछ कड़वे वचनों का आदान-प्रदान हुआ और ज़िलाधिकारी महोदया ने अख़बार रिपोर्टर के ख़िलाफ़ मुक़दमा भी दर्ज कराया लेकिन प्रदेश के अग्रणी अख़बार ने एक बार भी उस महिला जिलाधिकारी का कार्टून नहीं छापा लेकिन कन्हैया कुमार के मसले में तो अख़बार का सीधा-सीधा कोई मतलब नहीं था उसके बाबजूद महिला जज का कार्टून छापना आख़िरकार क्या सन्देश देता है ? मुझे इन्तिज़ार है कि क्या मीडिया लोकपाल एक महिला जज के कार्टून छापने वाले अख़बार के विरुद्ध कोई कार्यवाही करेगा ?

रचना रस्तोगी
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ

असहिष्णुता क्या है ?

भारतवर्ष का संविधान स्वतंत्रता समानता बंधुता और न्याय की अभिव्यक्ति के आधार पर लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत शासन सत्ता यलाता है । इस लोकशाही सरकार के दो सदन होते हैं । लोकसभा जिसमें आम जनता के नागरिकों की भागीदारी द्वारा संसद सदस्य निर्वाचित होते हैं और दूसरी है राज्यसभा जिसमें आम नागरिकों की भागीदारी नहीं होती है, परंतु राज्यसभा किसी भी विधेयक को 15 दिनों तक रोक सकती है ।

यदि दोनों सदनों का कोई भी सदस्य असंवैधानिक ढंग से संविधान की और उंगली उठाता है या फिर धार्मिक उन्माद या साम्प्रदायिकता को भड़काने के लिए बयानबाज़ी करता है तो यह क़दम असहिष्णुता कहलाता है । संसद के अन्दर यदि कोई सदस्य यह कहता है कि 2020 तक भारत हिन्दू राष्ट्र बन जाएगा या संविधान के स्थान पर मनुस्मृति का विधान लागू होगा तो यह बात साम्प्रदायिक असहिष्णुता कहलाएगी, ऐसी बातों के लिए सर्वोच्च न्यायालय दंड का विधान सुनिश्चित करता है । क्योंकि भारतीय संविधान

धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध है । किसी भी संप्रदाय, धर्म, जाति, समाज, नस्ल के नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं किया जा सकता है । यदि कोई राजनैतिक नेता प्रतिशोध की भावना भड़काता है तो क़ानून उसे दंड देने का अधिकार रखता है । जातिवाद सबल निर्मल ऊंचा-नीचा दलित ब्राह्मण, शासक शोषित की नीति से सभ्य नागरिकता का ह्रास होता है । सर्वधर्म संम्भाव की करुणा और मैत्री के व्यवहार से मानवजाति का कल्याण निहित है । देश के राजनैतिक नेताओं को महिला, बाल, बृद्ध, दलित, शोषित, ग़रीब, वंचित, बेसहारा पिछड़े और अल्पसंख्यक लोगों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए, तभी भारतवर्ष में सामाजिक समरसता की अविरल धारा बह पाएगी । भारतवर्ष लोकतांत्रिक राज्य है इसमें सभी लोगों की बराबर की भागीदारी है । भारत माता या भारत पिता या हिन्दू राष्ट्र की परंपरावादी विचारधारा से असहिष्णुता का प्रारंभ होना ही साम्प्रदायिकता का विष बन सकता है ।

डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय
कटवरिया सराय, नयी दिल्ली

समस्या या समाधान

केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी का सुझाव है कि गर्भ में भ्रूण का लिंग परीक्षण अनिवार्य कर दिया जाए । इससे कन्या भ्रूण वाली गर्भवती महिलाओं का ध्यान रखने में मदद मिलेगी साथ ही साथ सह सुनिश्चित किया जा केगा की कन्या भ्रूण की हत्या न हो । इस सुझाव पर काफ़ी विवाद हो रहा है ।

हालांकि मेनका गांधी का यह कहना सही है कि देश में लिंग परीक्षण पर रोक से कोई ख़ास फ़ायदा नहीं हुआ और लिंग अनुपात धीरे-धीरे एक भयावह स्थिति की ओर जा रहा है । यह अनुपात बताता है कि भ्रूण हत्या पर क़ानूनी रोक के बावजूद कन्या भ्रूण हत्या का सिलसिला निरंतर जारी है । लिंग परीक्षण को क़ानून बनाकर वैध या अवैध कर देने मात्र से हमें इस समस्या से निजात मिलने वाली नहीं है इसके लिए हमें इसकी जड़ मे जाने की ज़रूरत है जहां से यह समस्या उत्पन्न हो रही है । समाज में लड़कियों के प्रती फैली दुर्भावना जो उन्हें जन्म लेने से पहले ही मौत की नींद सुला देती है । इसके लिए मर्द या औरत में से किसीक एक को दोषी ठहराना क़तई उचित न होगा । सच तो यह है कि इस महापाप के लिए कहीं न कहीं दोनों ही ज़िम्मेदार हैं । हमें समाज में रह रहे एक-एक मर्द औरत के मन मस्तिष्क में यह बात बैठानी होगी की लड़कियां अभिशाप नहीं हैं बल्कि वह तो अल्लाह की नेमत है । हम लड़की पैदा होने पर भी उसी तरह खुशी मनाए जिस तरह लड़का पैदा होने पर मनाते हैं । लड़कियां हमारे लिए अभिशाप नहीं बल्कि ख़ुदा की नेमत है । यह बात पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की इस हदीस से पूरी तरह साफ़ हो जाती है, ''जब किसी के यहां लड़की पैदा होती है, तो ख़ुदा उसके यहां फ़रिश्ते भेजता है, जो आकर कहते हैं, ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो, वह लड़की को अपने परों के साये में ले लेते हैं और उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं, 'यह कमज़ोर जान है, जो एक कमज़ोर जान से पैदा हुई है, जो उस बच्ची की निगरानी और परवरिश करेगा, क़ियामत तक ख़ुदा की मदद उसके शामिले हाल रहेगी ।''

इसका मतलब यह नहीं कि क़ानून बनाना या लागू करना व्यर्थ है बल्कि समाज में रह रहे लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना ज़्यादा ज़रूरी है । लिंग परीक्षण अनिवार्य करने से महिलाओं को कोई फ़ायदा नहीं होने वाला बल्कि इसका सीधा खामियाजा वो गर्भवती महिलाएं भुगतेगी जिनके गर्भ में कन्या भ्रूण होगा । क्या भारत जैसे देश में जहां लगभग आधी आबादी को बुनियादी स्वास्थ्य सुविधा नहीं मिल पा रही है और तीन चौथाई महिलाएं बिना किसी चिकित्सा सहायता के अपने घर पर ही शिशु को जन्म देती है । जिस देश की स्वास्थ्य सुविधा का यह हाल हो वहां पर सभी गर्भवती महिलाओं के गर्भ का लिंग परीक्षण कराना और उन गर्भवती महिलाओं का ध्यान रखना जिनके गर्भ में कन्या भ्रूण है ताकी कन्या भ्रूण की हत्या न होने पाये क्यका संभव है ?

मुझे नहीं लगता कि यह काम सरकारी चिकित्सा साधनों से पूरा होगा अगर इसे निजी चिकित्सा व्यावसायियों के हाथ में दिया गया तो वह खुलेआम मनमानी करने पर उतर आएंगे जो लोग अभी गर्भ में लिंग परीक्षण और कन्या भ्रूण हत्या में शामिल होते हैं । वह अपना कारोबार धड़ल्ले से चलाने लगेंगे जिससे स्थिति और भयावह हो जाएगी जिन लोगों के पास गर्भपात न होने देने की निगरानी का ज़िम्मा होगा वही ऐसे परिवारों पर नाजायज़ दबाव बना सकते हैं, जिन्हें स्वास्थ्य संबंधी वजह से मजबूरन गर्भपात कराना हो तो वह भी मुश्किल होगा । यही नहीं जो परिवार बेटे और

बेटी में कोई फ़र्क़ नहीं करते और लिंग परीक्षण पर विश्वास नहीं रखते उन्हें भी मजबूरन गर्भ का लिंग परीक्षण कराने के लिए तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा साथ ही मोटी रक़म भी ख़र्च करना पड़ेगा । गर्भ का लिंग परीक्षण अनिवार्य कर देने से उन महिलाओं पर जुल्मो-सितम के पहाड़ टूट पड़ेंगे जिन्हें अभी बेटी पैदा करने के बाद बेटे की ख़ाहिश रखने वालों के जुल्म का शिकार होना पड़ेगा उन पर दबाव डालकर गर्भपात कराने के लिए कहा जाएगा अगर उन्होंने इन्कार किया जो उनका जबरन गर्भपात करा दिया जाएगा । यही नहीं कुछ महिलाएं तो ऐसी भी होगी जो पहली बार गर्भवती हुई हो और उनके गर्भ में कन्या हो लेकिन उसके घर वाले बेटे की ख़्वाहिश रखते हो तो उस महिला के न चाहने पर भी अनावश्यक दबाव डालकर उसका गर्भपात करा दिया जाए जिससे उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा, "जिसके यहां लड़की पैदा हुई और उसने जाहिलियत के तरीक़े पर उसे ज़िंदा दफ़न नहीं किया और न उनको हीन जाना और और न लड़के को उसके मुक़ाबले में तर्जीह दी और ज़्यादा समझा, तो ऐसे आदमी को खुदा जन्नत में दाख़िल करेगा ।" (अबू दाऊद)

कन्या भ्रूण हत्या जैसी घिनौनी समस्या से छुटकारा पाने के लिए हमें पुरुष प्रधान समाज में रह रहे लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने की ज़रूरत है । हमें उन्हें यह समझाने की ज़रूरत है कि बेटियां अभिशाप नहीं है और नहीं वह बेटे से किसी मामले में कम है बल्कि वह भी हमारी तरह समाज का एक अभिन्न अंग है । आज हम बेटे की ख़्वाहिश में जिस बेटी को पैदा होने से पहले मार देते हैं । आख़िर हम उनकी हत्या करने से पहले ये क्यों नहीं सोचते की हम जिस औरत के बेटे हैं वह भी तो किसी की बेटी है । जिस दिन हम लोगों के मस्तिष्क में इस बात को बैठाने में कामयाब हो जाएंगे यह समस्या ख़ुद-ब-ख़ुद कम हो जाएगी । "निश्चय ही घाटे में पड़ गये वे लोग जिन्होंने अपनी संतान को अज्ञान व नासमझी के कारण क़त्ल किया और अल्लाह की दी हुई रोज़ी को अल्लाह पर झूठ गड़कर हराम ठहरा लिया । निश्चय ही वे भटक गये और कदापी वे सीधा मार्ग पाने वालों में से न थे ।" (क़ुरआन, 6:140)

मुदस्सिर मुहम्मद
पी-445 गौस नगर करैली, इलाहाबाद

पड़ोसियों के साथ व्यवहार

इस्लाम संपूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिए संसार के रचयिता ने भेजा है । इस्लाम अरबी धातु के स०ल०म० से निकला है । जिसका अर्थ है "शांति, शुद्धता, समर्पण और आज्ञाकारिता है । यानी मालिक की प्रसन्नता उसके प्रति समर्पण, उसकी आज्ञाओं का पालन । समस्त मानवजाति हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) व मां हव्वा की संतान होने से आपस में भाई-भाई हैं । इसलिए जाति धर्म का भेदभाव न हो । अगर दो भाइयों में विवाद हो जाए तो तुरंत सुलह करा दो उन्हें आपस में लड़ाओ नहीं अपने पड़ोसी भाई की इज़्ज़त करो उसके लिए अच्छी सोच रखे ।

इस्लाम एक संपूर्ण जीवन व्यवस्था है । इसमें पड़ोसियों के अधिकारों एवं दायित्वों का वर्णन विस्तार से किया गया है । क़ुरआने हकीम में पड़ोसियों के लिए कई आदेश दिये गये हैं । संक्षेप में है कि "और अल्लाह की बन्दगी करो । उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ और अच्छा व्यवहार करो माता पिता के साथ, अनाथों, मुहताजों, नातेदारों और पड़ोसियों के साथ और उन पड़ोसियों के साथ जिनके साथ संबंध न हो ।" (क़ुरआन, 4:36)

"वह आदमी सच्चा मोमिन और जन्नती नहीं जिसके पड़ोसी उससे मामून और बेख़ौफ़ न हो" "वह शख़्स मोमिन नहीं, जो पेट भर कर सो जाए और उसका पड़ोसी भूखा हो ।"

पड़ोसी पर मोमिन के हुक़ूक़ (1) बीमार पड़ोसी की इयादत करो अगर उसकी मौत हो जाए तो उसके जनाज़े में जाओ, दफ़न में मदद करो, (2) अगर पड़ोसी क़ज़ मांगे तो सहुलियत हो तो क़र्ज़ दो (3) वह कोई बुरा काम कर बैठे तो परदापोशी करो (4) उसको कोई नेमत मिले तो उसे मुबारक बाद दो (5) अपनी इमारत ऐसी न बनाओ कि उसकी हवा और उजाला रुक जाए । (6) अपने घर में अच्छा खाना बने तो उसके घर थोड़ा खाना भेजो ।

पड़ोसियों के तीन प्रकार होते हैं । एक पड़ोसी जिस पर आपका एक ही हक़ हो यानी ग़ैर-मुस्लिम जो पड़ोस में रहता है (2) दूसरा पड़ोसी वह हो जो दीनदार भाई हो लेकिन उससे रिश्तेदारी नहीं है । (3) तीसरा वह जो मुस्लिम भी है, और रिश्तेदार भी है ।

यानी पहले पड़ोसी के साथ भी क़ुरआन व हदीस के अनुसार अच्छा व्यवहार किया जाए । दूसरे नम्बर पर और

तीसरे नम्बर पर भी वही हक़ होंगे ।

अनपढ़ पड़ोसी को तालीम दे या उसे पढ़ाने में सहायता दे । इस्लामी शिक्षा का प्रचार पड़ोसियों में अपने अच्छे अख़्लाक़ से करे । ग़ैर-मुस्लिम पर दीन की शिक्षा ज़बरदस्ती न थोपे, हां अगर वे दीन को समझना चाहे तो गर्मी से सिखाये । पड़ोसी को हर हालत में प्रसन्न रखो । वह भी आपको प्रसन्न व सुखी रखेगा । अच्छे समाज की यह पहचान है ।

मुहम्मद मुश्ताक़ बेग
एडवोकेट
175/3 जुना रिसाला इन्दौर

आत्म निर्भरता

जो व्यक्ति आत्मसम्मान के बल पर आत्म विश्वासी होकर आत्म निर्भर बन जाते हैं, वे अहंकारी नहीं कहलाते । जॉन-काल्हम की निरंतर पढ़ाई में लगा देखकर कॉलेज के एक छात्र ने उसका कपहास किया । कॉल्हम ने उससे कहा, "मुझे अपने समय को इस प्रकार उपयोग करने की आवश्यकता है कि मैं अपना समय शुभ कार्यों से व्यतीत कर सकूं ।

यह सुनक़र वह छात्र ज़ोर से हंसा । इस पर काल्हम ने उससे कहा, "क्या तुम्हें मेरी इस बात पर यक़ीन नहीं है । पर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मैं अपने आत्म-विश्वास, आत्म-निर्भरता आत्म नियंत्रण के आधार पर भविष्य में अपने चरित्र बल को ऊंचा उठाने का प्रयत्न करूंगा ।"

भविष्य में महान बनने वाले व्यक्तियों के ऐसे शब्द उनकी शक्तियों और उनके आत्म-विश्वास के आधार पर कहे जाते हैं । ऐसे व्यक्ति अपनी योग्यता के मूल्य को समझते हैं और उसी के अनुसार आत्म-विश्वास रखना जानते हैं ।

विलियम शेक्स पीयर ने एक स्थान पर लिखा है 'जो हिचकिचाने वाले व्यक्ति हैं वे आत्म-निर्भर रहने वालों के उदार अहंकार को नहीं समझ सकते । आत्म-निर्भर व्यक्ति को यह ख़ुशी होती है कि उसमें राजमुकुट प्राप्त करने की शक्ति है ।

महान

कोई चाहे कितना भी महान
क्यों न हो जाए,
पर उसे इतराना नहीं चाहिए ।
कंठ दिया कोयल को
तो रूप छीन लिया ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें ।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

रूप दिया मोर को,
तो इच्छा छीन ली ।
दि इच्छा इन्सान को,
तो संतोष छीन लिया ।
दिया संतोष संत को
तो संसार छीन लिया ।
मत करना कभी भी गुरूर
अपने आप पर 'ऐ इन्सान'
मेरे रब ने तेरे और मेरे जैसे
कितने मिट्टी से बना बना के मिट्टी में मिला दिये ।

रामस्वरूप झैवर
भीलवाड़ा (राज०)

कैसे रुके महिला अपराध

हम लोग का खान-पान रीति-रिवाज. बदलते जा रहे हैं जैसा भोजन वैसा विचार । दूसरा कारण आज की नारी,बालकिा और बालक आदि पोशाक इतना रद्दी पहनते हैं । महंगी डाल-डाल, फैशन पात-पात । आज आधुनिक ढंग रंग का पहनावा । नारी अर्धनग्न लड़कियां तंग, चुस्त पहनावा से बलात्कार को बढ़ावा मिल रहा है । खुली वस्तु गुड़-शहद पर अधिक मक्खियां आती हैं ।

आज पहनावा का प्रमुख दोष है । आहार, शादी-उत्सव में अधिक शराब कबाब का प्रचलन हो गया है । जैसा अन्न वैसा मन । तीसरा बात कुरआन में सत्य वचन एवं ईमान पर ज़ोर दिया गया है । आज मोबाइल इसको विपरीत दिशा में ले जा रहा है झूठ को सरासर बढ़ावा दे रहा है । एक कहता है कहां हो तो दूसरा जवाब देता है–में पीरो हूं परन्तु आरा स्टेशन पर बाते करता है ।

लुभावना वस्त्र लड़कियां हिजाब का प्रयोग करती है । बुर्के का बहिष्कार हो रहा है । परदे की शरहद टूटती जा रही है । परदा को मान्यता देते हुए परदे में औरतें रह सकती हैं परंतु ऐसा नहीं कर पा रही है । सिनेमा, टी०वी० तथा अश्लील गीत जो आज प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें आकाशवाणी पर निषेध है ।

हरिद्वार प्रसार 'किसलय'
राजापुर, भोजपुर, बिहार

साहसी महिलाएं

'कान्ति' मासिक का बसंत में खिले फूलों की खुशबू से भरा फ़रवरी 2016 का अंक पढ़कर मन मयूर झूम उठा । कहानी 'कल जो बहू' से शिक्षा मिलती है कि हर सास यदि अपनी बहू को बेटी समझे और बहू सास को मां समझे तो दोनों का जीवन सुखी बन जाए । शराब पर पाबन्दी लगा दी जाए तो कई जीवन तबाह होने से बच जाएं । घेवर चन्दजी के पत्र से यही पैग़ाम जाता है ।

'स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं का योग' अतीत के झरोखे से पढ़कर मुस्लिम महिलाओं द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में की गयी कुरबानियों, बलिदानों, उनका साहसिक कार्यो का जानकर उनके प्रति मन-मस्तक झूग गया । उनके बलिदानों को देश हमेशा याद रखेगा । सभी लेखकों बधाई । सभी रचनाएं श्रेष्ठता लिए हुए हैं ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
राजापार्क, जयपुर (राज०)

पड़ोसी का ध्यान रखें

इस्लाम में स्पष्ट आदेश है कि पड़ोसी का पूरा ध्यान रखा जाए कि वे कहीं भूखा तो नहीं–एक अच्छी सीख है । इसे इस तरह भी समझा जाना चाहिए कि हमें पड़ोसी से कभी बिगाड़ नहीं करना चाहिए, क्योंकि हम मित्रों के बिना तो रह सकते हैं परन्तु पड़ोसी के बिना नहीं । पड़ोसी के सुख-दुख में सहभागी बनने की ज़रूरत है । कारण कि यदि पड़ोसी के घर आग लगे तो समझिये हमारी संपत्ति भी ख़तरे में है । यदि हम पड़ोसी के घर आज नमकीन भेजते हैं तो निश्चित मानिए वह आपके यहा ज़रूर मिठाई भेजेगा । इसलिए उससे कभी बिगाड़ नहीं करना चाहिए ।

आज का सच

अध्यापक ने बच्चों को ईमानदार लकड़हारा कहानी को याद करने के लिए कहा । अगले दिन कहानी सुनी जा रही थी । सुनाते समय एक बालक की ज़ुबान लड़खड़ा गयी । "लकड़हारा ईमानदार आदमी था" कहने के बजाय वह बोला "ईमानदार आदमी लकड़हारा था ।" अध्यापक सोच रहा था कि यही तो आज के वक़्त का सच है कि ईमानदार आदमी लकड़हारा ही है । अर्थात मज़दूर है, ग़रीब है, बेबस है, मामूली आदमी है, वही तो ईमानदार है, परंतु जो भ्रष्ट है वे मालिक हैं, शहंशाह हैं जिन्हें शर्म नाम की कोई चीज़ नहीं ।

घेवरचन्द गोदीका
किशनपोल बाज़ार, जयपुर

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Chairman
Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

सहिष्णुता

● मौलाना अबुल आला मौदूदी

यदि एक ही वस्तु को एक व्यक्ति काला कहे, दूसरा सफ़ेद, तीसरा पीला और चौथा लाल, तो संभव नहीं है कि चारों सच बोल रहे हों । यदि एक ही काम को एक बुरा कहता है और दूसरा अच्छा, एक उससे मना करता है और दूसरा उसका आदेश देता है तो यह किसी तरह संभव नहीं है कि दोनों के विचार सही हों, दोनों हक़ पर हों और दोनों ''हां'' और ''नहीं'' करने के खुले अन्तर के बाद भी अपने आपमें सही हों । जो व्यक्ति ऐसे विपरीतार्थक कथन की पुष्टि करता है और एक-दूसरे को काटने वाले आदेशों को सही समझता है, उसका यह कर्म दो बातों से ख़ाली नहीं होगा । या तो वह सबको ख़ुश करना चाहता है, या उसने इस समस्या के बारे में सिरे से विचार ही नहीं किया है और बिना सोचे-समझे अपने सुझाव दे डाले हैं । बहरहाल दोनों परिस्थितियां बुद्धि, विवेक एवं सच्चाई के विरुद्ध हैं और किसी बुद्धिमान और सच्चे व्यक्ति को यह शोभा नहीं देता कि वह किसी भी कारण से विभिन्न विचार वाले लोगों की पुष्टि करता फिरे ।

आम तौर पर लोग इस ग़लतफ़हमी में फंसे हुए हैं कि दस भिन्न-भिन्न विचारों वाले लोगों की एक-दूसरे को काटने वाली बातों को सही ठहरा देना रवादारी और सहिष्णुता है । हालांकि वास्तव में यह सहिष्णुता नहीं है, बल्कि मिथ्याचार है । सहिष्णुता के अर्थ यह हैं कि जिन लोगों की आस्थाएं या कर्म हमारे विचार में ग़लत हैं उनको हम सहन करें । उनकी भावनाओं को देखते हुए उन पर कोई ऐसी टिप्पणी न करें, जो उनको दुख पहुंचाने वाली हों, और उन्हें उनकी आस्थाओं से फेरने या उनके अमल से रोकने के लिए ज़ोर-ज़बरदस्ती न करें ।

आम तौर पर लोग इस ग़लतफ़हमी में फंसे हुए हैं कि दस भिन्न-भिन्न विचारों वाले लोगों की एक-दूसरे को काटने वाली बातों को सही ठहरा देना रवादारी और सहिष्णुता है । हालांकि वास्तव में यह सहिष्णुता नहीं है, बल्कि मिथ्याचार है । सहिष्णुता के अर्थ यह हैं कि जिन लोगों की आस्थाएं या कर्म हमारे विचार में ग़लत हैं उनको हम सहन करें । उनकी भावनाओं को देखते हुए उन पर कोई ऐसी टिप्पणी न करें, जो उनको दुख पहुंचाने वाली हों, और उन्हें उनकी आस्थाओं से फेरने या उनके अमल से रोकने के लिए ज़ोर-ज़बरदस्ती न करें । इस तरह का संयम और इस तरीक़े से लोगों को आस्था और कर्म की आज़ादी प्रदान करना न केवल यह कि प्रशंसनीय है बल्कि विभिन्न विचारों वाले संगठनों में शांति और सुरक्षा बनाये रखने के लिए ज़रूरी है ।

लेकिन यदि हम स्वयं एक आस्था को मानते हैं और केवल दूसरे लोगों को ख़ुश करने के लिए विभिन्न आस्थाओं की पुष्टि करें या एक जीवन व्यवस्था को मानते हुए किसी अन्य जीवन व्यवस्था की पैरवी करने वालों से कहें कि आप सभी हक़ पर हैं तो इस दोग़ली विचार- अभिव्यक्ति को किसी तरह भी सहिष्णुता नहीं कहा जा सकता । किसी कारणवश चुप रह जाने और जान-बूझकर झूठ बोलने में कुछ तो अन्तर होना चाहिए ।

वास्तविक सहिष्णुता तो वह है जिसकी शिक्षा इस्लाम ने दी है । हमसे कहा गया है--''(ऐ ईमान वालो) ये लोग अल्लाह के सिवा जिनको पुकारते हैं उन्हें गालियां न दो, कहीं ऐसा न हो कि ये शिर्क (बहुदेववाद) से आगे बढ़कर अज्ञान के कारण अल्लाह को गालियां देने लगें । हमने तो

इसी प्रकार हर गिरोह के लिए उसके कर्म को ही सुंहावना बना दिया है, फिर उन्हें अपने प्रभु ही की ओर पलटकर आना है, उस समय वह उन्हें बता देगा कि वे क्या करते रहे हैं।" (क़ुरआन, 6 : 109)

"और रहमान के बन्दे वे हैं जो झूठ के गवाह नहीं बनते और किसी बेहूदा चीज़ पर उनका गुज़र हो जाए तो सज्जन आदमियों की तरह गुज़र जाते हैं।"

(क़ुरआन, 25 : 72)

"कह दो कि ऐ इन्कारियों (धर्मविरोधियों), मैं उनकी बन्दगी नहीं करता जिनकी बन्दगी तुम करते हो, न तुम उनकी बन्दगी करने वाले हो जिसकी बन्दगी मैं करता हूं। और न मैं उनकी बन्दगी करने वाला हूं जिनकी बन्दगी तुमने की है, और न तुम उसकी बन्दगी करने वाले हो जिसकी बन्दगी मैं करता हूं। तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा।" (क़ुरआन, 109 : 1-6)

"दीन (धर्म) में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है।"

(क़ुरआन, 2 : 56)

"ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिदान दुगना दिया जायेगा, क्योंकि वे जमे रहे और भलाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी हमने उन्हें दी है, उसमें से ख़र्च करते हैं, और जब वे व्यर्थ बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे किनारा खींच लेते हैं कि : "हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म हैं। तुमको सलाम है। जाहिलों को हम नहीं चाहते।" (क़ुरआन, 28 : 55)

"अत: इसीलिए (उन्हें सत्य की ओर) बुलाओ, और जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है स्वयं क़ायम रहो, और उनकी इच्छाओं का पालन न करना। और कह दो : "अल्लाह ने जो किताब अवतरित की हो, मैं उस पर ईमान लाया। मुझे तो आदेश हुआ है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूं। अल्लाह ही हमारा भी रब है और तुम्हारा भी। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। हममें और तुममें कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा और अन्तत: उसी की ओर जाना भी है।" (42 : 15)

यही वह सहिष्णुता है जो एक हक़परस्त (सत्यवादी) सच्चा और सुलझा हुआ व्यक्ति अपना सकता है। वह जिस मत को सही समझता है, उस पर वह मज़बूती के साथ क़ायम रहेगा। अपनी धारणाओं की स्पष्ट शब्दों में घोषणा करेगा। दूसरों को उस धारणा की ओर बुलाएगा, परन्तु किसी का दिल न दुखाएगा, किसी के लिए अपशब्द का प्रयोग नहीं करेगा, किसी की आस्थाओं पर चोट न करेगा, किसी की इबादतों या कर्मकांडों में बाधा न डालेगा, किसी को बलात् अपने मत या पंथ पर लाने की कोशिश नहीं करेगा।

लेकिन सत्य को सत्य समझते हुए सत्य न कहना, या मिथ्या को मिथ्या मानते हुए मिथ्या कह देना, यह तो कभी किसी सच्चे आदमी का काम नहीं हो सकता। और ख़ास तौर पर लोगों को ख़ुश करने के लिए ऐसा करना तो बहुत ही घिनौना काम है। ऐसी ख़ुशामद या चापलूसी न केवल नैतिक दृष्टि से गिरी हुई चीज़ है, बल्कि उस उद्देश्य में भी सफलता नहीं मिलती जिसके लिए इन्सान अपने आपको इतना नीचे गिरा लेता है। क़ुरआन का साफ़ और सच्चा फ़ैसला है–"न यहूदी तुमसे कभी राज़ी होने वाले हैं और न ईसाई जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लग जाओ। कह दो : "अल्लाह का मार्गदर्शन ही वास्तविक मार्गदर्शन है।" और यदि उस ज्ञान के पश्चात जो तुम्हारे पास आ चुका है, तुमने उनकी इच्छाओं का अनुसरण किया, तो अल्लाह से बचाने वाला न तो तुम्हारा कोई मित्र होगा और न सहायक। (क़ुरआन, 2 : 120)

झूठी सहिष्णुता का प्रदर्शन तो राजनीति उद्देश्यों के लिए किया जाता है और इस दौर में इसे 'वैध' मान लिया गया है, क्योंकि पश्चिमी राजनेताओं की कोशिशों से नैतिकता और राजनीति के बीच अलगाव की एक लंबी अवधि बीत चुकी है। लेकिन अफ़सोस तो उन शोधकर्ताओं पर आता है, जो सोच-विचार किये बिना अपने धार्मिक अनुसंधान में एक अजीब दृष्टिकोण पेश करते हैं कि "सभी धर्म सच्चे हैं।" यह वाक्य आम तौर पर उन लोगों के मुंह से सुना जाता है, जिनका दावा है कि हम कोई बात उस समय तक नहीं करते और न उसे स्वीकार करते हैं जब तक कि उसे बुद्धि एवं विवेक की कसौटी पर परख न लें, लेकिन बुद्धि व विवेक की कसौटी का हाल यह है कि वह उनके अनोखे शोध को तनिक भी वज़न देने के लिए तैयार नहीं हैं। जिन विभिन्न धर्मों को हक़ पर होने का प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है, उनके उसूलों में काले और सफ़ेद का खुला हुआ अन्तर पाया जाता है।

एक कहता है कि ख़ुदा एक है। दूसरा कहता है कि दो हैं। तीसरा कहता है कि तीन हैं। चौथा कहता है कि

बहुत-सी शक्तियां ईशवरत्व में भागीदार हैं । पांचवें की शिक्षा में ईश्वर की कल्पना ही नहीं है । क्या यह संभव है कि पांचों सच्चे हों ?

एक इन्सान को ईश्वरत्व के पद तक पहुंचा देता है । दूसरा ईश्वर को खींचकर इन्सानों के बीच उतार लाता है । तीसरा इन्सान को पूज्य और ईश्वर को पुजारी क़रार देता है । चौथा पूज्य और पुजारी दोनों की कल्पना को नकार देता है । क्या वास्तव में चारों कल्पनाएं सही हो सकती हैं ?

एक मुक्ति को केवल कर्म का प्रतिफल मानता है । दूसरा मुक्ति के लिए केवल ईमान को काफ़ी समझता है । तीसरा ईमान और कर्म दोनों को मुक्ति के लिए ज़रूरी शर्त मानता है । क्या ये तीनों एक ही समय में सही हो सकते हैं ? एक की दृष्टि में मुक्ति की राह दुनिया और उसकी ज़िन्दगी के बाहर से निकलती है । दूसरों की दृष्टि में मुक्ति की राह दुनिया और उसकी ज़िन्दगी के अन्दर से गुज़रती है । क्या ये दोनों रास्ते समान रूप से सही हो सकते हैं ?

विभिन्न धर्मों में जो बातें समान दिखायी देती हैं, अफ़सोस की बात है कि छिछली नज़र रखने वाले उनकी वास्तविकता तक पहुंचने की कोशिश नहीं करते और केवल ऊपरी सतह पर निगाह डालकर ग़लत परिणाम निकाल लेते हैं, हालांकि वास्तव में यह समानता एक अहम सच्चाई की ओर इशारा करती है । यह पता देती है कि वास्तव में ये सभी धर्म एक ही मूल से निकले हैं । इन समस्त कल्पनाओं और शिक्षाओं का स्रोत एक ही है । ज्ञान का कोई ऐसा माध्यम है, जिसने इन्सान को विभिन्न देशों, विभिन्न कालों, विभिन्न भाषाओं में भी इन सच्चाइयों से अवगत कराया ।

कोई एक ही सोच है जो पूरब और पश्चिम की सभ्यताओं के टकराव के बावजूद और सैकड़ों एवं हज़ारों वर्षों के समयान्तरालों के बाद भी एक ही रूप में लोगों को प्राप्त हुई । इस सोच के नतीजे में सबके सब एक ही प्रकार के परिणाम तक पहुंचे । लेकिन धर्म जब अपने मूलाधार और अपने स्रोत से दूर हो गये तो उनमें कुछ बाहरी कल्पनाओं एवं कुछ विचित्र धारणाओं । कुछ अनजानी सोचों ने राह पा ली ।

चूंकि ये बाद वाली चीज़ें उस सोच और उस स्रोत से जुड़ी हुई नहीं थीं, बल्कि विभिन्न रुझानों और विभिन्न स्तर के ज्ञान व बुद्धि रखने वाले लोगों के ज़ेहन की उपज थी, इसलिए उन्होंने इन समान बुनियादों पर जो इमारतें खड़ी कीं वे अपने नक़्शों और अपने रंग-रूप की दृष्टि से एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हो गयीं ।

अत: विभिन्न धर्मों में सत्य-शिक्षाओं की पहचान उन शिक्षाओं से हो सकती है जो सभी धर्मों में समान रूप से पायी जाती हैं । न कि उन विभिन्न विस्तारयुक्त सूरतों और रंग-रूप पर जो विभिन्न धर्मों में पाये जाते हैं, क्योंकि सत्य (हक़) एक बहुत व्यापक शब्द है और उसके अवयवों में भी कोई अन्तर नहीं हो सकता । जिस तरह हम काला और सफ़ेद, लाल और हरा पर 'रंग' शब्द का प्रयोग समान रूप से कर सकते हैं, उस तरह ईश्वर एक है, ईश्वर दो हैं और ईश्वर करोड़ों हैं सभी को सत्य (हक़) नहीं कह सकते ।

यह बात कि तमाम धर्मों का मूल एक है और एक सच्चाई है जो विभिन्न क़ौमों पर विभिन्न भाषाओं में प्रकट की गयीं, क़ुरआन मजीद में विस्तारपूर्वक बयान की गयी हैं । क़ुरआन में बार-बार कहा गया है कि हर क़ौम में ईश्वर के पैग़म्बर आये हैं :

"हमने हर समुदाय में कोई न कोई रसूल भेजा ।"
(क़ुरआन, 16 : 36)

"और जो भी समुदाय गुज़रा है, उसमें अनिवार्यत: एक सचेतकर्ता हुआ है ।" (क़ुरआन, 35 : 24)

जितने भी नबी या रसूल गुज़रे हैं, वे सभी एक स्रोत से सच्चाई का संदेश हासिल करते थे ।

"...तुमसे पहले भी कितने ही रसूल झुठलाये जा चुके हैं तो खुली निशानियां, "ज़बूरें" और प्रकाशमान किताब लेकर आए थे ।" (क़ुरआन, 3 : 184)

"निश्चय ही हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों ।" (क़ुरआन, 57 : 25)

उन सभी पैग़म्बरों एवं नबियों का सन्देश एक ही था, और वह यह था : "अल्लाह की बन्दगी करो और ताग़ूत (बढ़े हुए फ़सादी) से बचो ।" (क़ुरआन, 16 : 36)

सभी पैग़म्बरों पर ईश्वर की ओर से एक ही वह्य (प्रकाशना) थी :

"हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि, "मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं । अत: तुम मेरी ही बन्दगी करो ।" (क़ुरआन, 21 : 25)

उनमें से किसी ने यह नहीं कहा कि जो कुछ हम पेश कर रहे हैं, वह हमारी अपनी बुद्धि एवं विवेक का नतीजा

है । बल्कि सब यही कहते रहे कि यह सब ईश्वर की ओर से है : "और यह हमारा काम नहीं कि तुम्हारे सामने कोई प्रमाण ले आएं । यह तो बस अल्लाह के आदेश के पश्चात ही संभव है । और अल्लाह ही पर ईमान लाने वालों को भरोसा करना चाहिए । आख़िर हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखाये हैं ?" (क़ुरआन, 14 : 11-12)

फिर उनमें से किसी ने यह भी नहीं कहा कि हमारी बन्दगी करो, बल्कि सब यही कहते रहे कि ईश्वर-भक्त बन जाओ । क़ुरआन में है :

"किसी मनुष्य के लिए यह संभव न था कि अल्लाह उसे किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) और पैग़म्बरी प्रदान करे और वह लोगों से कहने लगे : "तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे उपासक बनो ।" बल्कि वह तो यही कहेगा कि : "तुम रब वाले बनो ।" (क़ुरआन, 3 : 79)

ये थी वे समान शिक्षाएं, जो तमाम क़ौमों के उनके धार्मिक नेताओं ने दी थी । क़ुरआन मजीद का बयान है कि पहले तमाम इन्सान एक ही उम्मत थे । अर्थात एक विशुद्ध मानवीय स्वभाव के अधीन थे । उनके पास अल्लाह की ओर से प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान आया था फिर उनमें मतभेद उत्पन्न हुआ । यह मतभेद इस कारण उत्पन्न हुआ कि उनमें से कुछ लोगों ने अपनी सीमाएं लांघनी शुरू कर दी । उन्होंने अपने प्राकृतिक दर्जे से अधिक ऊंचा दर्जा हासिल करने और अपने प्राकृतिक अधिकारों से बढ़कर कुछ और अधिकार हासिल करने के लिए प्रयत्न करना शुरू कर दिया । तब अल्लाह की ओर से नबियों के आने का सिलसिला शुरू किया गया, ताकि लोगों को हक़ का ज्ञान हो सके और उनके बीच सामाजिक न्याय स्थापित हो सके । सभी नबियों का यही मिशन रहा है । जिन लोगों ने इस मिशन को स्वीकार किया और उनकी शिक्षाओं की पैरवी की और नबियों के बताए हुए क़ानूनों पर चले, केवल वही सत्य पर हैं और शेष सभी मिथ्या पर हैं ।

वे भी अनृत जिन्होंने नबी (अलैहि०) की पैरवी से इन्कार किया और वे भी अनृत जिन्होंने नबी (अलैहि०) की शिक्षाओं को अपनी इच्छानुसार ढाल लिया । क़ुरआन में है:

"सारे मनुष्य एक ही समुदाय थे । वे तो स्वयं अलग-अलग हो रहे ।" (क़ुरआन, 10 : 19)

"सारे मनुष्य एक ही समुदाय थे उन्होंने विभेद किया), तो अल्लाह ने नबियों को भेजा, जो शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले थे, और उनके साथ हक़ पर आधारित किताब उतारी, ताकि लोगों में उन बातों का जिनमें वे विभेद कर रहे हैं, फ़ैसला कर दे । इसमें विभेद तो बस उन्हीं लोगों ने, जिन्हें वह मिली थी, परस्पर ज़्यादती करने के लिए इसके पश्चात किया, जबकि खुली निशानियां उनके पास आ चुकी थीं । अत: ईमान वालों को अल्लाह ने अपनी अनुज्ञा से उस सत्य के विषय में मार्गदर्शन किया, जिसमें उन्होंने विभेद किया था । अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर चलाता है ।" (क़ुरआन, 2 : 213)

"निश्चय ही हमने रसूलों को किताब के साथ भेजा और उनके साथ किताब और तुला उतारी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों । और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी दहशत है और लोगों के लिए कितने ही लाभ हैं ।" (क़ुरआन, 27 : 25)

"जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया, वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ़ में पड़ेगा । और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुंह मोड़ा तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे ।" (क़ुरआन, 20 : 123-124)

यह क़ुरआन का ऐतिहासिक दृष्टिकोण या इतिहास की नैतिक व्याख्या (Moral Interpretation of History) है जो समाजिक विभेद की गुत्थियों की तरह धार्मिक विभेद की गुत्थियों को बड़े ही संतोषजनक तरीक़े से हल कर देता है । इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दुनिया की तमाम क़ौमों के पास अल्लाह के नबी इसलिए आते रहे, क्योंकि जिस प्राकृतिक जीवन-व्यवस्था से वे अपनी बग़ावत के कारण हट गये थे, उसी की तरफ़ फिर उन्हें ले जाएं और उन्हें हक़ और न्याय के तरीक़े पर क़ायम कर दें । परन्तु वही बग़ावत की भावनाएं जो उनकी गुमराही का असली कारण थीं, उन्हें बार-बार हटाकर फिर टेढ़े रास्तों की तरफ़ ले जाता रहा है । अत: जो थोड़े बहुत सही दृष्टिकोण और नैतिकता के सच्चे उसूल दुनिया के विभिन्न क़ौमों में पाये जाते हैं, वे सभी नबियों की शिक्षाओं के ही बचे-खुचे प्रभाव हैं, जो अपने शक्तिशाली प्रभाव के कारण क़ौमों के दिलो-दिमाग़ और उनकी ज़िन्दगी में रच-बस गये हैं ।

इसके बाद क़ुरआन जो दावा पेश करता है वह यह है कि जिस "इस्लाम" की तरफ़ वह बुला रहा है, वह वही

"अस्ल दीन" है जिसको शुरू से तमाम क़ौमों में सभी सन्देश-वाहक और नबी पेश करते रहे हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) कोई निराला सन्देश लेकर नहीं आये जो पहले कभी पेश न किया गया हो । कुरआन में है :

"ऐ नबी (सल्ल०), उनसे कह दो कि मैं कोई निराला सन्देशवाहक नहीं हूं ।" (कुरआन, 4 : 123)

इस सन्देश से अरब, मिस्र, ईरान, भारत, चीन, जापान, अमेरिका, यूरोप, अफ़्रीक़ा यहां तक कि किसी भी भू-भाग को वंचित नहीं रखा गया । सभी अल्लाह के रसूल अल्लाह की शिक्षाएं लेकर आये हैं । और बहुत संभव है कि बुद्ध, कृष्ण, राम, कन्फ़्यूशियस, ज़रदुश्त, मानी, सुक़रात आदि भी उन्हीं रसूलों में से रहे हों । लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उन दूसरे पेशवाओं में अन्तर यह है कि उनकी अस्ल शिक्षाएं तो लोगों के विभेद के कारण गुम हो गईं । मगर अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जो कुछ पेश किया, वह अस्ली शक्ल में सुरक्षित है ।

अर्थात सच्चाई यह है कि इस्लाम धर्मों में से एक धर्म नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति का अस्ल धर्म यही है । शेष सभी धर्म उसी की बिगड़ी हुई शक्लें हैं । धर्मों में जो कुछ हक़ और सच्चाई पायी जाती है वह उसी अस्ल इस्लाम का बचा-खुचा प्रभाव है जो सबके यहां आया था और विभेदों में गुम कर दिया गया । जिस धर्म में इस बचे-खुचे सत्य की जितनी अधिक मात्रा में मौजूद है, उसमें उतना ही अधिक 'इस्लाम' मौजूद है । रही वे बातें जो इस्लाम के विरुद्ध हैं तो वे सब निश्चित रूप से मिथ्या हैं । और उन्हें सत्य कहकर पुकारना सरासर ज़ुल्म है ।

इसके बदले कि हम झूठी सहिष्णुता का प्रदर्शन करें हमें तो अपने तमाम इन्सानी भाइयों से यह कहना चाहिए कि दोस्तो, कृपया पक्षपात और संकीर्णता को छोड़ दो । सत्य और असत्य के घाल-मेल पर जमे रहने के बदले उस चीज़ को स्वीकार करो जो विशुद्ध सत्य है । हक़ किसी नस्ल या क़ौम या देश की पैतृक सम्पत्ति नहीं है, बल्कि तमाम इन्सानियत की मिली-जुली मीरास है । यह मीरास अल्लाह तआला की ओर से सब देशों और क़ौमों और नस्लों को बांटी गयी थी । दूसरों ने उसे यदि गुम कर दिया और इसके साथ व्यक्तिपूजा, ज़ुल्म व अन्याय और अनुचित भेद-भाव के ज़हर मिला लिये, तो यह एक दुर्भाग्य था । हमारा और तुम्हारा सबका दुर्भाग्य था । कोई कारण नहीं कि आप इस दुर्भाग्य के साथ अनावश्यक रूप से चिमटे रहें ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने यदि इस धरोहर को पाकर जस का तस पहुंचा दिया और उसके अन्दर किसी का, किसी ज़ालिमाना और अन्यायपूर्ण रीति-रिवाजों का और किसी प्रकार के अनुचित भेद-भाव का ज़हर शामिल न हो सका, तो यह एक सौभाग्य की बात है । हमारी और तुम्हारी और समस्त मानवता की यह ख़ुशक़िस्मती है । उसका शुक्र अदा कीजिए और उससे लाभ उठाने में केवल इसलिए न झिझकिए कि खुदा की यह नेमत अरब मूल के एक व्यक्ति के माध्यम से तुम्हें मिल रही है । सत्य (हक़) तो उसी तरह की आलमगीर नेमतों में से एक नेमत है । जिस तरह हवा, पानी और रौशनी उसकी विश्वव्यापी नेमतें हैं । फिर यदि हवा से तुम केवल इसलिए नाक बन्द नहीं कर लेते हो कि वह पूरब से आ रही है, पानी को तुम अपने हलक़ से उतारने में केवल इस आधार पर झिझक महसूस नहीं करते कि उसका स्रोत अमुक भू-भाग में स्थित है । और रौशनी से लाभ उठाते समय तुम केवल इसलिए नहीं झिझकते कि वह अमुक व्यक्ति के चराग़ से निकल रही है । तो आख़िर क्या कारण है कि विशुद्ध सत्य की जो नेमत तुमको हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा मिल रही है, उसको लेने में तुम केवल इसलिए झिझक महसूस करो कि उसका पेश करने वाला तुम्हारे भू-भाग में पैदा नहीं हुआ ।



मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

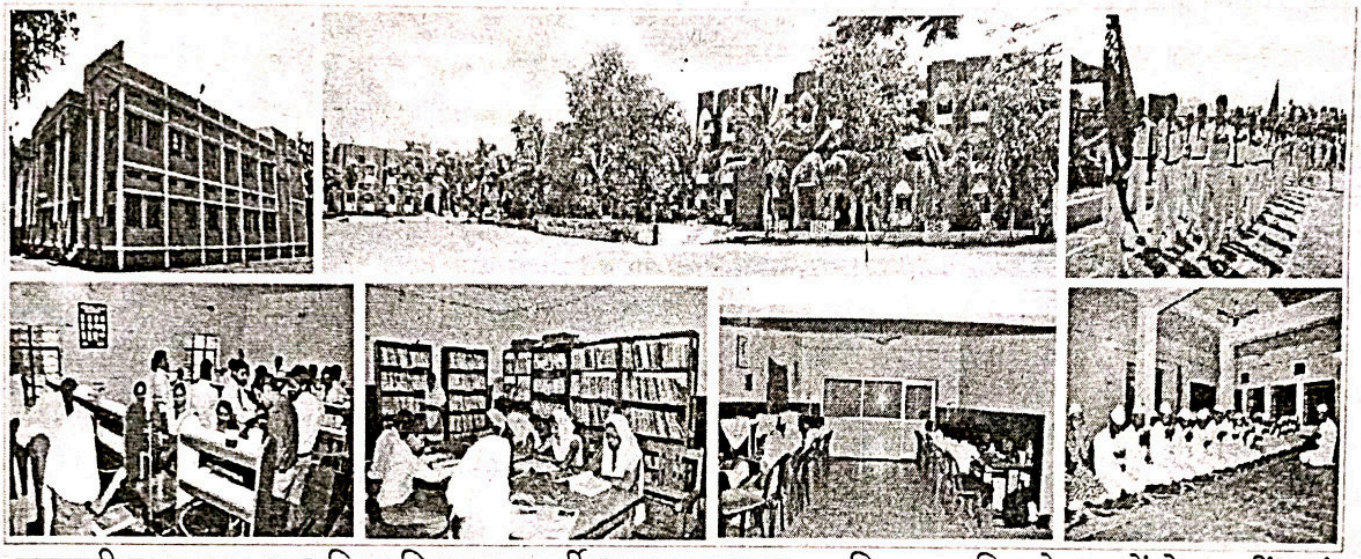

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम.ए., बी.एड.ए (अलीग.)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम.एस.सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

कुख्यात अपराधियों को पीछे छोड़ते नाबालिग़

■ चांद ख़ां रहमानी

आज अपराध करने वालों में उन नाबालिों की संख्या ज़्यादा है जो साधन संपन्न परिवार से होते हैं । कई ऐसी ख़बरें भी पढ़ने को मिलती हैं कि अच्छी-ख़ासी नौकरी छोड़कर लोग अपराध की दुरिया में जा पहुंचे । एक वक़्त वह था जब बच्चे भूख मिटाने या अपनी छोटी-मोटी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए चोरी-चकारी करते थे । अब यह स्थिति नहीं है ।

अब ये लोग चोरी, लूटपाट, हत्याएं, अपहरण, डकैती, फिरौती और बलात्कार जैसे गंभीर अपराध अपनी भूख मिटाने के लिए नहीं बल्कि अय्याशी के लिए करते हैं । आये दिन अख़बारों में पढ़ने को मिलता है कि प्रेमिका को खुश करने के लिए फलां किशोर ने यह गंभीर अपराध किया । किसी ने कार लेने तो किसी ने हवाई यात्रा करने तो किसी ने धनाढ्य बनने तो किसी ने फ़िल्मी बांस बनने के लिए यह रास्ता अपना रहे हैं । अब यह पढ़ने को नहीं मिलता कि पेट भरने के लिए किसी होटल या घर से किसी ने रोटी चुराई ।

23 दिसम्बर 2015 को टी॰वी॰ में देखने को मिला कि चार लोगों ने दिल्ली की कड़कड़डूमा अदालत के कोर्ट रूम 73 में दिनदहाड़े गोलियां बरसा दीं । इस वारदात में चार में से तीन नाबालिग़ शामिल थे । बताया जाता है कि ये लोग छैनू नामक कुख्यात अपराधी को मारने के लिए आये थे । जैसे ही छैनू को पुलिस ने जज के सामने पेश किया तभी इन लोगों ने उस पर गोलियां बरसा दीं । छैनू को तीन गोलियां लगीं जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया । इस वारदात में एक हेड कांस्टेबल की गोलियां लगने से मौत हो गयी । जज साहब बाल-बाल बचे । उन्हें नायब कोर्ट ने किसी तरह बचाया लेकिन एक गोली जज साहब की कुर्सी में छेद करती हुई निकल गयी । यह सुनने में आया कि यह दो गैंग के बीच अस्तित्व की लड़ाई है जिसे दूसरे गैंग के लोगों ने छैनू को निबटाने के लिए इन हत्यारों को हायर किया गया था ।

इससे पहले दिल्ली में ही कुछ समय पहले एक मां ने अपने किशोर बेटे को क्रिकेट खेलने से मना किया तो उसने मां की क्रिकेट खेलने के बैट से मारकर हत्या कर दी । हत्या करने के बाद आराम से बैठकर टी॰वी॰ देखने लगा । इससे पहले यू॰पी॰ के मेरठ की एक अदालत में एक किशोर ने पेशी पर आये एक व्यक्ति की हत्या कर दी । किशोर ने बताया कि इस व्यक्ति ने कई साल पहले उसके पिता की हत्या कर दी थी । उसे सज़ा नहीं मिल पा रही थी इसलिए उसने उसे मारने का प्लान बनाया । वह आरोपी जब पेशी पर आया तो उस किशोर ने उसकी हत्या कर दी । अभी 27 दिसम्बर को मुंबई में एक टी॰वी॰ अभिनेत्री ने आरोप लगाया कि एक नाबालिग़ ने उससे उगाही करने के लिए उसे धमकी दी । इस मामले में पुलिस ने उस किशोर को गिरफ़्तार कर लिया । यहां इन घटनाओं को दोहराने का उद्देश्य यह बताना है कि नाबालिग़ किस तरह ख़ूंख़ार अपराधियों को गुनाह के मामले में पीछे छोड़ रहे हैं ।

जैसे ही ज्योति सिंह के नाबालिग़ दोषी रिहाई की बात हुई की फ़लां तारीख़ को उसे रिहा कर दिया जाएगा तभी से एक बार फिर सज़ा देने यानी उसे रिहा न करने की मांग मांग ने ज़ोर पकड़ लिया । इस मांग को देखते हुए सरकार ने एक अध्यादेश पेश किया जो लोकसभा और राज्यसभा दोनों में ही पास कर दिया । इसके तहत अब 16 साल तक का किशोर यदि सात साल या उससे अधिक सज़ा का अपराध करता है तो उसे बाल सुधार गृह में नहीं भेजा जाएगा बल्कि उसे उसी तरह सज़ा मिलेगी जिस तरह किसी बालिग़ अपराधी को मिलती है ।

यह क़ानून बनने से पहले 18 साल से कम उम्र का अपराधी कितना ही बड़ा कांड कर दे उसे तीन साल तक सुधार गृह यानी बाल जेल में रखकर छोड़ दिया जाता था लेकिन अब यह क़ानून बनने के बाद उसे भी कठोर और पूरी सज़ा मिलेगी । इस अध्यादेश के आते ही जुवेनाइल जस्टिस को लेकर देश में बहस छिड़ गयी है । कुछ लोगों का तर्क है कि नाबालिग़ अपराधी को उसी तरह सज़ा

मिलनी चाहिए जैसे पहले मिलती थी लेकिन देश की अधिसंख्य जनता के साथ केन्द्रीय मंत्री मेनका गांधी का मानना है इन किशोर अपराधियों को भी कठोर सज़ा मिलनी चाहिए । दोनों पक्षों के अपने-अपने तर्क हैं । जो पक्ष नाबालिग़ अपराधियों को कठोर सज़ा की मांग कर रहा है उसका तर्क कि अब समय बदल गया है, किशोर अब किशोर नहीं रह गये । वे मानसिक और शारीरिक रूप से परिपक्व यानी की युवा हो गये हैं इसलिए उन्हें उसी तरह का दंड मिलना चाहिए जिस तरह एक आम अपराधी को मिलता है । इससे अपराधों में कमी आएगी । दूसरी तरफ़ वे लोग हैं जो इस तरह के दंड के ख़िलाफ़ हैं । वे लोग अमेरिका समेत दूसरे देशों के उदाहरण देकर यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि नाबालिग़ अपराधियों को कठोर सज़ा देने से अपराध कम नहीं होंगे । इन लोगों का तर्क है कि किशोर अपराधियों को काउंसलिंग कर रास्ते पर लाया जा सकता है । सुधार गृह में रहकर वे लोग नागरिक बनते हैं जबकि जेल में कठोर सज़ा पाकर और बड़े अपराधी बन जाते हैं ।

ज़्यादातर लोगों का मानना है कि नाबालिग़ बच्चे भूख, ग़रीबी और बेरोज़गारी के कारण अपराध करते हैं । लेकिन उन लोगों का यह तर्क पूरी तरह सही नहीं है क्योंकि आज अपराध करने वालों में उन नाबालिग़ों की संख्या ज़्यादा है जो साधन संपन्न परिवार से होते हैं । कई ऐसी ख़बरें भी पढ़ने को मिली हैं कि अच्छी ख़ासी नौकरी छोड़कर लोग अपराध की दुनिया में जा पहुंचे । एक वक़्त वह था जब बच्चे भूख मिटाने या अपनी छोटी-मोटी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए चोरी-चकारी करते थे । अब यह स्थिति नहीं है । एक जनवरी 2016 को एक चैनल ने एक रिपोर्ट जारी कि देश की राजधानी में हर रोज़ छह नाबालिग़ अपराध करते हैं । यह रिपोर्ट पुलिस रिकार्ड से लेकर बतायी गयी । बाल अपराधों का यह आंकड़ा सिर्फ़ एक शहर का है तो देश के बाक़ी शहरों और गांवों-क़स्बों का आंकड़ा क्या होगा ।

दिल्ली की अदालत में फायरिंग करने वालों को इसलिए बाल अपराधी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उन्हें हत्या करने के लिए हायर किया बताया जाता है । इसका मतलब यह हुआ कि वे प्रोफ़ेशनल अपराधी हैं । ऐसे अपराधियों पर रहम का कोई मतलब नहीं है । हमारे यहां छूट का लाभ लेने का बहुत चलन ही नहीं बल्कि लोगों को इसकी आदत है । जो नाबालिग़ अपराधी हैं उन्हें मालूम है कि जघन्य अपराध करने के बाद भी उन्हें जेल नहीं होगी बल्कि बाल सुधार गृह में भेज दिया जाएगा और मात्र तीन साल में छूटकर बाहर आ जाएंगे और इसी बात का फ़ायदा गैंगस्टर भी उठाते हैं । वे इन नाबालिग़ों को अपने जाल में फंसा लेते हैं और उनसे अपराध कराते रहते हैं ।

जिस समय नाबालिग़ अपराधियों को कम सज़ा का प्रावधान किया गया था उस समय नाबालिग़ मजबूरी में अपराध करते थे । अब ये लोग चोरी, लूटपाट, हत्याएं, अपहरण, डकैती, फिरौती बौर बलात्कार जैसे गंभीर अपराध अपनी भूख मिटाने के लिए नहीं बल्कि अय्याशी के लिए कर रहे हैं । आये दिन अख़बारों में पढ़ने को मिलता है कि प्रेमिका को खुश करने के लिए फ़लां किशोर ने यह गंभीर अपराध किया । किसी ने कार लेने तो किसी ने हवाई यात्रा करने तो किसी ने धनाढ्य बनने तो किसी ने फ़िल्मी बॉस बनने के लिए यह रास्ता अपना रहे हैं । अब यह पढ़ने को नहीं मिलता कि कि पेट भरने के लिए किसी होटल या घर से किसी ने रोटी चुराई । आज गांव-शहरों से लेकर क़स्बों तक में नयी पीढ़ी ने उत्पात मचा रखा । आज उनके अन्दर बड़ों का सम्मान करने और भारतीय संस्कृति की उपेक्षा करने की भावना बढ़ी है । यह अब आम देखने को मिल रहा है कि किशोर और किशोरियां अपने अभिभावकों की बात सुनते ही नहीं । उन्हें मनमानी न कर दी जाए तो मरने को तैयार हो जाते हैं । वह इसलिए समयानुसार नाबालिग़ों अपराधियों को भी कड़ा दंड मिलना चाहिए । इससे निश्चित रूप से अपराधों में कमी आएगी और उन्हें एहसास होगा कि अब उन्हें दंड में छूट नहीं मिलेगी ।

मनोविज्ञानियों का तर्क है कि समय के साथ बच्चे जल्दी जवान और वयस्क हो जाते हैं । वे फ़िल्मों और सीरियलों से बहुत जल्दी प्रभावित हो जाते हैं । उनमें जल्दी धनी होने और वैभवशाली जीवन जीने की भावना बढ़ रही है । मशहूर मनोचिकित्सक डॉ॰ टी॰पी॰ जिंदल का कहना है कि बदलते समय में बच्चे जल्दी ही अपने को जवान महसूस करने लगते हैं और उन गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं जो सामाजिक और क़ानूनी रूप से ग़लत होते हैं । इसलिए इन्हें कठोर दंड दिया जाना चाहिए । इसके साथ ही उन गतिविधियों पर भी नज़र रखी जानी चाहिए जो इन्हें अपराध करने के लिए प्रेरित करती हैं ।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

● संपादन प्रभाग

'भारत रत्न' से सम्मानित मौलाना अबुल कलाम मुहीउद्दीन अहमद (जन्म 11 नवम्बर 1888-मृत्यु 22 फ़रवरी 1958) एक मुस्लिम विद्वान थे । उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया । वे वरिष्ठ राजनीतिक नेता थे । उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन किया और सांप्रदायिकता पर आधारित देश के विभाजन का विरोध किया । स्वतंत्र भारत में वह भारत सरकार के पहले शिक्षा मंत्री थे, उन्हें 'मौलाना आज़ाद' के नाम से जाना जाता है । 'आज़ाद' उनका उपनाम है ।

अबुल के पिता मौलाना ख़ैरुद्दीन एक विख्यात विद्वान थे, जो बंगाल में रहते थे । उनकी मां आलिया एक अरब थीं और मदीना के शेख़ मुहम्मद ज़ाहिर बसरी की भतीजी थी । अरब देश के पवित्र मक्का में रहने वाले एक भारतीय पिता और अरबी माता के घर में उनका जन्म हुआ । पिता मौलाना ख़ैरुद्दीन ने उनका नाम मुहीउद्दीन अहमद या फ़िरोज़ बख़्त रखा । आगे चलकर वे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद या मौलाना साद के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

बचपन से ही उनमें कुछ ख़ास बातें नज़र आने लगी थी, जो जीवन भर उनके साथ रहीं । मौलाना आज़ाद को एक 'राष्ट्रीय नेता' के रूप में जाना जाता है । वास्तव में राष्ट्रीय नेता तो वे थे, लेकिन वे नेता बनना चाहते ही नहीं थे । एक मित्र को उन्होंने पत्र में लिखा था, "...मैं राजनीति के पीछे कभी नहीं दौड़ा था । वस्तुतः राजनीति ने ही मुझे पकड़ लिया...।"

अन्य किसी छोटे लड़के की तरह बचपन में आज़ाद को गैसवाले रंगीन गुब्बारे, तैरने और खेल-कूद का बहुत शौक़ था । उनकी याददाश्त इतनी तेज़ थी कि विश्वास नहीं होता था । सीखने, पढ़ने-लिखने और बोलने की इच्छा उनमें दिन-ब-दिन बढ़ती जाती थी । दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना, अपनी ही उम्र के बच्चों के साथ रहना, मैदानों में खुलकर खेलना, बच्चे आमतौर से जो करते हैं, वैसी शरारतें करना उन्हें पसन्द था । लेकिव वे ये कर नहीं सकते थे ।



उनके पिता यह चाहते थे कि वे एक निष्ठावान धार्मिक विद्वान बनें और इसीलिए वे सब चीज़ें करने की उन्हें इजाज़त नहीं थी तेरह साल की आयु में उनका विवाह ज़ुलेखा बेगम से हो गया । मौलाना आज़ाद एक विद्वान, पत्रकार, लेखक, कवि, दार्शनिक थे और इन सबसे बढ़कर अपने समय के धर्म के एक महान विद्वान थे । उन्होंने पवित्र क़ुरआन के भावरूपों पर कई निबंध लिखे । उनकी कृतियों में 'तर्जुमानुल क़ुरआन' अधिक मशहूर है । गांधी जी की तरह भारत की भिन्न-भिन्न जातियों के बीच, विशेष तौर पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता के लिए कार्य करने वाले कुछ महान लोगों में से वह भी एक थे । अपने गुरु की तरह उन्होंने भी जीवनभर दो दुश्मनों ब्रिटिश सरकार और देश की एकता के विरोधियों का सामना किया ।

10 वर्ष की छोटी-सी आयु में ही वह क़ुरआन के पाठ में पुर्णतः निपुण हो गये थे । 17 वर्ष की अल्प आयु में ही अबुल कलाम इस्लामी दुनिया के धर्मशास्त्र में शिक्षित हो गये थे । क़ाहिरा के 'अल-अज़हर विश्वविद्यालय में उन्होंने

शिक्षा प्राप्त की, जो उनके गंभीर और गहन ज्ञान का आधार बनी । परिवार के कोलकाता में बसने पर उन्होंने 'लिसानुस सिद्क़' नामक पत्रिका प्रारंभ की । उन पर उर्दू के दो महान आलोचकों 'मौलाना शिब्ली नोमानी और 'अल्ताफ़ हुसैन हाली' का बहुत प्रभाव था ।

आज़ाद के पास बहुत-सी किताबें थीं और बड़े-बड़े विद्वान शिक्षक उन्हें अरबी, फ़ारसी, उर्दू और धार्मिक विषयों के साथ-साथ गणित, यूनानी, चिकित्सा पद्धति सुलेखन और दूसरे विषयों की शिक्षा देते थे । अंग्रेज़ी सीखना तो मानो मना ही था । क्योंकि वह तो 'घृणित फ़िरंगियों' की भाषा थी । भाग्य से ऐसे एक आदमी से भेंट हो गयी जो अंग्रेज़ी भाषा जानते थे । आज़ाद ने कुछ दिनों में उनसे अंग्रेज़ी वर्णमाला और पहली कक्षा की किताब पढ़ी । कुछ ही समय बाद उन्होंने शब्दकोश के सहारे बाइबल और अंग्रेज़ी अख़बार पढ़ना शुरू कर दिया । मोमबत्ती की हल्की रोशनी में वे रात में देर तक पढ़ते रहते थे । सवेरे जल्दी उठकर भी पढ़ते थे और कभी-कभी तो वे खाना भी भूल जाते थे । अक्सर अपने पैसे किताबों पर ही ख़र्च कर देते थे ।

उन्होंने कहा–''लोग बचपन खेल-कूद में बिताते हैं, लेकिन मैं बारह-तेरह साल की उम्र में ही किताब लेकर लोगों की नज़रों से बचने के लिए एक कोने में अपने आपको छिपाने की कोशिश करता था ।

उनके लेखन के बारे में एक बड़े विद्वान ने लिखा है, ''प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक सॉमरसेट मॉम की तरह ही मौलाना आज़ाद ने लिखना शुरू किया, वैसे ही जैसे मछली अपने आप तैरना सीख लेती है या बच्चा सांस लेना सीख लेता है ।'' आज़ाद में एक नया गुण यह था कि बहुत-सी बातों में वे अपनी उम्र से बहुत आगे रहे । बारह वर्ष के होने से पहले ही वे एक पुस्तकालय वाचनालय और डिबेटिग सोसाइटी चला रहे थे ।

जब वह केवल पन्द्रह वर्ष के थे तब वह अपने से दुगुनी उम्र के विद्यार्थियों की एक क्लास को पढ़ाते थे । तेरह से अठारह साल की उम्र के बीच उन्होंने बहुत-सी पत्रिकाओं का संपादन किया और सोलह साल की उम्र में स्वयं एक उच्च स्तर की पत्रिका निकाली ।

इन बातों को देखते हुए नेहरू ने कहा था कि मौलाना आज़ाद सन 1923 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे युवा प्रमुख थे ।

उर्दू बोलने वाले लोगों ने एक बार 'एक बड़े विद्वान' को सन 1904 में एक राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भाषण देने के लिए आमंत्रित किया । उस 'बड़े विद्वान' के लेखों के वे बड़े प्रशंसक थे, लेकिन जब मौलाना दुबले-पतले, बिना दाढ़ी के और गोरे रंग के मौलाना आज़ाद रेल की प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतरे तो लाहौर स्टेशन पर जमा हुए उनके हज़ारों प्रशंसकों को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ । कुछ लोगों को निराशा भी हुई और जब उस लड़के ने कोई ढाई घंटे तक बिना लिखित भाषण के सीधे ही अपना भाषण दिया तो कान्फ्रेंस के अध्यक्ष मौलाना हाली, जो स्वयं 67 वर्ष के मशहूर शायर और विद्वान थे, उनको प्यार से अपनी बाहों में भरकर बोले, ''प्यारे बेटे, अब मैं अपनी ज्ञानेंद्रियों पर तो भरोसा कर रहा हूं, लेकिन अभी भी मेरा आश्चर्य बना हुआ है ।''

इस तरह सन 1910 के क़रीब एक लज्जाशील युवक जो अपनी तस्वीर तक प्रकाशित कराने के लिए तैयार नहीं होता था, उसका शरीर दुर्बल था लेकिन निश्चय दृढ़ था, उसके दिल में आग सुलगती थी पर मन शांत था, उसकी आदतें उत्कृष्ट थीं किन्तु निश्चय अटल था, उसकी बुद्धि तेज़ थी पर स्वभाव कोमल था–देश को आज़ादी की ओर ले जाने वाले महान सिपाहियों के दल में शामिल हो जाने के लिए तैयार हो गया था । सच कहा जाए तो मौलाना किताबों की दुनिया में रहने वाले थे । कड़ी सर्दी एकांत, सबसे बढ़िया चाय-इनकी पसन्द थी । वे सवेरे जल्दी उठते थे और समय के पाबन्द थे । किसी भी कठिनाई को सह लेने के लिए और अपने देश और उसके लोगों की ख़ातिर कुछ भी बलिदान कर देने के लिए तैयार रहते थे ।

आज़ाद ने राजनीति में उस समय प्रवेश किया, जब ब्रिटिश शासन ने 1905 में धार्मिक आधार पर बंगाल का विभाजन कर दिया था । मुस्लिम मध्यम वर्ग ने इस विभाजन का समर्थन किया, किन्तु आज़ाद इस विभाजन के विरोध में थे । आज़ाद ने स्वतंत्रता आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया । वह गुप्त सभाओं और क्रांतिकारी संगठन में शामिल हो गये । तत्पश्चात आज़ाद अरविंद घोष और श्यामसुंदर चक्रवर्ती के संपर्क में आये और वे अखंड भारत के निर्माण में लग गये ।

उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'इंडिया विंस फ्रीडम' में लिखा है कि–'लोगों को यह सलाह देना सबसे बड़े धोखों

में से एक होगा कि भौगोलिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से भिन्न क्षेत्रों को धार्मिक संबंध जोड़ सकते हैं ।'

वे जोशीले भाषण देते, उत्तेजना भर लेख लिखते और और पढ़े-लिखे मुसलमानों के साथ संपर्क बढ़ा रहे थे । बंगाल के क्रांतिकारी श्यामसुन्दर चक्रवर्ती से उन्होंने क्रांति के लिए प्रशिक्षण प्राप्त किया था और उनकी ही सहायता से सन 1905 में महान क्रांतिकारी अरविंद घोष से उनकी मुलाक़ात हुई थी । मुसलमानों के कुछ गुप्त मंडलों की भी उन्होंने स्थापना की थी । मौलाना को लगा कि कुछ ऐसे कारण हैं, जिनको लेकर सन 1857 की आज़ादी की लड़ाई के बाद मुसलमान बहुत-सी बातों में अपने दूसरे देशवासियों से पीछे रह गये हैं । बहुत से मुसलमान ऐसा सोच रहे थे कि भारत में हमेशा अंग्रेज़ों का ही राज बना रहेगा और इसलिए उनको अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष करने की कोई आवश्यकता नहीं है । लेकिन अपने लेखों द्वारा मौलाना ने उन्हें समझाया कि विदेशी सरकार की गुलामी से छुटकारा पाना सिर्फ़ राष्ट्रीय ध्येय ही नहीं है बल्कि यह उनका धार्मिक कर्तव्य भी है ।

एक बार उन्होंने घोषणा की कि, ''मुसलमानों के लिएउ बिच्छू और सांप से सुलह कर लेना, पहाड़, गुफ़ा और बिलों के भीतर घूमना और वहां जंगली जानवरों के साथ चैन से रहना आसान है, लेकिन उनके लिए अंग्रेज़ों के साथ संधि के लिए हाथ बढ़ाना मुमकिन नहीं है ।''

अपने इस संदेश को फैलाने के लिए सन 1912 में उन्होंने अपना प्रसिद्ध साप्ताहिक अख़बार 'अल-हिलाल' आरंभ किया । जब कांग्रेस नेताओं ने 1947 के विभाजन को स्वीकार कर लिया था, किन्तु मौलाना इसका विरोध करते रहे । हिन्दू-मुस्लिम एकता पर उनका विश्वास था ।

वे कहते हैं–अगर एक फ़रिश्ता आसमान से उतर कर कुतुब मीनार की ऊंचाई से यह घोषणा करता है कि हिन्दू मुस्लिम एकता को नकार दें तो 24 घंटे के भीतर स्वराज तुम्हारा हो जाएगा, तो मैं इस स्वराज को लेने से इन्कार करूंगा, लेकिन अपने रुख़ से एक इंच भी नहीं हटूंगा, क्योंकि स्वराज से इन्कार सिर्फ़ भारत को प्रभावित करेगा लेकिन हमारी एकता की समाप्ति से हमारे समूचे मानव जगत को हानि होगी ।

1912 में 'अल-हिलाल' नामक एक उर्दू अख़बार का प्रकाशन प्रारंभ किया । इस अख़बार में उन्होंने अपने प्रगतिशील विचार, कुशल तर्क और इस्लामी इतिहास के प्रति अपने दृष्टिकोण को प्रकाशित किया । यह अख़बार भारत और विदेशों में इतनी जल्दी प्रसिद्ध हो गया कि आज यह बात एक चमत्कार ही लगती है । कुछ ही दिनों में 'अल-हिलाल' की 26,000 प्रतियां बिकने लगीं । लोग इकट्ठे होकर उस अख़बार के हर शब्द को ऐसे पढ़ते या सुनते जैसे वे स्कूल में पढ़ाया जाने वाला कोई पाठ हो । कुछ ही दिनों में उस अख़बार ने न सिर्फ़ मुसलमानों में बल्कि उस समय के उर्दू पढ़ने वाले बहुत से लोगों में जागृति की एक लहर उत्पन्न कर दी । 'भारत की खोज' में नेहरू जी ने लिखा है कि–''मौलाना ने तार्किक दृष्टिकोण से धर्म-ग्रंथों की व्याख्या की है ।''


الهلال

बच्चे और खेल

■ अफ़ज़ल हुसैन

बच्चे खेल के रसिया होते हैं । जी-जान से लग-लिपट कर खेलते हैं । खेल से ज़्यादा शायद दुनिया की कोई चीज़ उन्हें प्यारी नहीं । खेल में उनकी लगन देखिए । तन-बदन का भी होश नहीं रहता । तन-मन से पूरी तरह मगन नज़र आते हैं । भूख लगी हो, लगी रहे । कपड़े ख़राब हो रहे हों, होते रहें । थककर चूर हो गए हों, कोई परवाह नहीं । सर्दी हो, गरमी हो, कीचड़ हो, पानी हो, हुआ करे, उनका खेल जारी रहेगा । खेल के लिए समय या जगह की क़ैद नहीं । जब भी और जहां भी मौक़ा मिले, खेलने के लिए तैयार हैं । कक्षा से छूटते और बिस्तर से उठते ही खेल में लग जाएंगे । मां-बाप की नाराज़गी, शिक्षकों की सख़्ती, साथियों की बेरुख़ी कोई चीज़ भी उन्हें खेल से दूर नहीं रख सकती । वे हर दुख झेलेंगे और बहरहाल खेलेंगे ।

बच्चे शान्त और निठल्ले बैठ नहीं सकते । शान्त और निठल्ला बैठना बीमारी या बुद्धूपन की निशानी है । भाग-दौड़, उछल-कूद, तोड़-फोड़, शोर-शराबा--ये सब तो बचपन कळ अनिवार्य काम हैं, तन्दुरुस्ती, ताक़त और बुद्धिमानी तो जीवन के लक्षण हैं। जो बच्चे इन गुणों से वंचित रहते हैं, वे बच्चे नहीं, बूढ़े हैं । ये सारी हरकतें तो उनके जन्मजात अधिकार हैं। इन अधिकारों से उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता ।

सच्ची ख़ुशी बच्चों को खेल ही में प्राप्त होती है । खेल का सामान और खेलने के लिए कुछ साथी मिल जाएँ, फिर क्या है ? ऐसा महसूस होगा कि उनकी मुरादें पूरी हो गईं । जन्नत के ये फूल खिल उठेंगे, चेहरे पर मुस्कराहट और निखार खेलने लगेगी। उनको तो ख़ैर मज़ा आता ही है, हंसते-खेलते बच्चों को देखकर कौन मनुष्य बाग़-बाग़ नहीं हो जाता। खेल में बच्चों की ग़ैर-मामूली लगन और तन्मयता और खेल से उनका गहरा और दिली प्यार अस्ल में इस बात का सुबूत है कि खेल एक प्रबल इच्छा और नैसर्गिक प्रवृत्ति है, जिसकी बहरहाल जायज़ हदों में पूर्ति और तृप्ति होनी चाहिए । जो लोग बच्चों को खेल से वंचित रखते हैं, वे



अस्ल में प्रकृति से जंग और बच्चों पर अत्याचार करते हैं । प्रकृति ने यह प्रबल प्रवृत्ति अकारण ही नहीं रखी है । बच्चों के मानसिक और शारीरिक, सामाजिक और नैतिक विकास के लिए खेल बहुत ज़रूरी है ।

बच्चे क्यों खेलते हैं ?

इस संबंध में बहुत-से विचार हैं । उदाहरण के लिए–

(1) खेल के द्वारा बच्चे अपनी अतिरिक्त ऊर्जा ख़र्च करते हैं । बच्चों में अपने क़ैद की दृष्टि से बहुत ज़्यादा ऊर्जा होती है । इस ऊर्जा को किसी गंभीर काम में लगाने की उन्हें ज़रूरत नहीं पड़ती, क्योंकि जहां तक ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरी करने का संबंध है, यह काम उनके अभिभावक अंजाम देते हैं ।

बच्चे तो हर हाल में मस्त रहते हैं । कल की उन्हें चिन्ता नहीं होती । इसलिए वे अपनी अतिरिक्त ऊर्जा खेलों में ख़र्च करते हैं । अगर वे ऐसा न करें, तो जिस तरह भाप की अतिरिक्त मात्रा इंजन को नुक़सान पहुंचा सकती है, उसी तरह अतिरिक्त ऊर्जा बच्चों के शरीर को प्रभावित कर सकती है ।

खेल का महत्व



(2) खेलों के द्वारा बच्चे अपने को भविष्य की ज़िम्मेदारियों के लिए तैयार करते हैं । बच्चियां गुड़ियां खेलकर घर के काम-काज की जानकारी प्राप्त करती हैं और बच्चे नक़ल के खेलों के द्वारा विभिन्न तरह के कर्तव्यों को पूरा करने का तरीक़े सीखते हैं ।

(3) बच्चे खेल-खेल में तरक़्क़ी के उन मरहलों को दोहराते हैं, जिनसे गुज़रते हुए मानव-जाति मौजूदा स्थान पर पहुँची है। बच्चों का दौड़ना-भागना, उछलना-कूदना, पीछा करना, पेड़ पर चढ़ना, गुफा या खोह में उतरना, शिकार करना, मछलियां फंसाना, घरौंदे बनाना इत्यादि, ये सारी हरकतें शुरुआती दौर के लोगों की याद ताज़ा करती हैं । इस तरह वे विभिन्न अनुभव और तरह-तरह की महारतें प्राप्त करते हैं।

(4) बच्चों की अपनी उलझनें और परेशानियां होती हैं । उनकी विभिन्न नैसर्गिक मांगों और मौलिक इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती । उनकी भावनाएं भी अक्सर आहत होती रहती हैं । इन दुखों और परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए बच्चे खेलते और खेल-कूद कर अपनी तबीअत का बोझ हलका करते हैं ।

(5) हर बच्चे में प्रतिस्पर्धा और होड़, प्रतियोगिता और बराबरी करने की भावनाएं होती हैं । चूंकि खेल उनकी अभिव्यक्ति के बहुत मौक़े उपलब्ध करते हैं, इसलिए खेलों के द्वारा बच्चे अपनी उन भावनों की तृप्ति का उपाय करते हैं ।

(6) बच्चों के खेल, उनके रचनात्मक क्रिया-कलापों का प्रदर्शन है । बच्चे अपने स्वभाव से मजबूर हैं । चैन से बैठ नहीं सकते । हर समय कुछ न कुछ करते रहना चाहते हैं । खेल उनकी इस इच्छा की पूर्ति का बेहतरीन माध्यम है ।

(7) पलने-बढ़ने के विभिन्न मरहलों पर शरीर और मन तरह-तरह की हरकतों की मांग करते हैं । तरह-तरह के खेल उन मांगों को पूरा करते हैं । इसलिए बच्चे तरह-तरह के खेल खेलते हैं ।

ये हैं बच्चे के खेल की विभिन्न व्याख्याएं, जो विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने अवलोकन, प्रत्यक्षीकरण या अधययन से पेश की हैं । उनके विचारों से पूरी तरह सहमत होना ज़रूरी नहीं, लेकिन इस बात से बहरहाल मतभेद सम्भव नहीं कि बच्चों के समुचित विकास के लिए खेल अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी हैं ।

खेलों के प्रकार

बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं । एक बच्चा कब किस तरह के खेल-खिलौने में दिलचपस्पी लेगा, यह उसकी उम्र, लिंग, स्वभाव, वातावरण, मौसम और साधन-संसाधनों इत्यादि पर निर्भर है । छोटे बच्चे अकेले खेलना पसन्द करते हैं, तो उनसे बड़े टोलियां बनाकर ।

बच्चों को नक़ल के खेलों में मज़ा आता है, तो नौजवानों को मुक़ाबले के खेलों में । लड़के गेंद-बल्ला खेलते हैं, तो लड़कियां गुड़ियों से जी बहलाती हैं । कमज़ोर घरेलू खेलों में दिलचस्पी लेते हैं, तो ताक़तवर मैदानी खेलों में । प्रतिभाशाली बच्चे ज़्यादा खेलते हैं । मिल-जुलकर खेलते या विचारप्रधान खेल पसन्द करते हैं, तो मंदबुद्धि बच्चे खेलों से दूर रहते हैं । झगड़ा करते या कम उम्र के

बच्चों के साथ खेलते हैं । शहरी बच्चों के खेल में विविधता होती है, तो ग्रामीण बच्चों के खेल में सादगी और समानता होती है । गरमी-बरसात में घरेलू खेल खेले जाते हैं, तो बारिश थमने पर कीचड़, पानी और तैराकी के । जाड़े में पिकनिक में मज़ा आता है, तो वसन्त ऋतु में दौड़-भाग और आंख-मिचौली में ।

नीचे अलग-अलग उम्र के बच्चों के तरह-तरह के खेलों के बारे में संक्षिप्त जानकारियां दी जा रही हैं–

1. अपने शरीर से खेलना

बच्चों के प्रारम्भिक खेल उनके अपने शरीर से संबंधित होते हैं । पैदाइश के कुछ दिन बाद ही से वे हाथ-पैर मारना और चीख़ना-चिल्लाना शुरू कर देते हैं । इन हरकतों से उनकी मांसपेशियों और स्नायुओं का विकास होता है । इसके बाद रेंगने, बैठने, खड़े होने और चलने की कोशिश करते हैं । इन कोशिशों के नतीजे में धीरे-धीरे वे अपने शरीर और उसके विभिन्न अंगों पर नियंत्रण प्राप्त करते हैं । नन्हे बच्चों को हाथ-पांव मारने और अपने शरीर को संभालने का पूरा मौक़ा मिलना चाहिए । जो लोग नादानी या लाड़-प्यार के कारण बच्चों को गोद का आदी बना देते हैं, वे बहुत बड़ी ग़लती करते हैं । इससे बच्चों का विकास रुक जाता है और अंग कमज़ोर हो जाते हैं ।

2. चीज़ों से खेलना

अपने शरीर पर किसी हद तक क़ाबू पा लेने के बाद बच्चे अपने आसपास की चीज़ों से खेलना और बेतुकी आवाज़ें निकालना शुरू कर देते हैं । जो भी हाथ लग जाए, उसे छूने, पकड़ने, अपनी तरफ़ खींचने, उठाने, मुंह में डालने, फेंकने, तोड़ने-फोड़ने और उसमें से आवाज़ें निकालने, सुराख़ों में उंगलियां डालने और नाखुन से खोदने-कुरेदने की कोशिश करते हैं । इस तरह वे विभिन्न चीज़ों की बनावट, रंग, स्वाद, आकार, वज़न इत्यादि के बारे में अचेतन रूप से बहुत-सी जानकारियां प्राप्त करते हैं । इस मरहले में बच्चों को सुन्दर चटकीले रंग, बजने और हरकत करने वाली लकड़ी, रबड़, प्लास्टिक के ऐसे खिलौने और ख़ाली डब्बे इत्यादि मिलने चाहिएं, जिनका रंग पक्का हो, ताकि मुंह में डालने या पानी में भिगोने से रंग न छूटे और जो आसानी से टूट न जाएं और न जल्द मैले और ख़राब हों और ऐसी चीज़ें बच्चों की पहुंच से बाहर होनी चाहिए, जिनको हाथ लगाना या मुंह में डालना बच्चों के लिए हानिकारक हो या जिनके टूटने-फूटने और ख़राब हो जाने की आशंका हो । उदाहरण के लिए, शीशे, चीनी मिट्टी के बरतन, घड़ी, ऐनक, क़लम इत्यादि । इसी उम्र में के बच्चों को कोयला, मिट्टी, राख इत्यादि खाने या पाख़ाना-पेशाब से खेलने की घिनौनी आदत पड़ जाती है । इसलिए काफ़ी देख-भाल होनी चाहिए ।

हां, तोड़-फोड़ के इन खेलों से घबराना नहीं चाहिए और न बहुत ज़्यादा रोक-टोक और डांट-फटकार करनी चाहिए, क्योंकि निर्माण की ओर बच्चों का यही पहला क़दम है । इसी से वे धीरे-धीरे जोड़ने और बनाने की ओर आकृष्ट होते हैं और घर-घरौंदे और मिट्टी के खिलौने इत्यादि बनाने की कोशिश करने लगते हैं । स्कूल और मदरसे में मिट्टी, काग़ज़ और दफ़्ती का काम करवाकर और शैक्षिक खेलों, उदाहरण के लिए लकड़ी और प्लास्टिक के ब्लॉक मैक्नोविस्ट इत्यादि की व्यवस्था करके खेल में बच्चों की रचनात्मक योग्यताओं को उभारा और सही रुख़ पर डाला जा सकता है ।

3. मिल-जुलकर खेलना

चार-पांच साल की उम्र तक के बच्चे आम तौर पर या तो अकेले खेलते हैं या दूसरे बच्चों के पास बैठकर अपने-अपने खिलौनों से अलग खेलना पसन्द करते हैं । बच्चे-बच्चियों के खेलों में भी कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं होता । इसके बाद धीरे-धीरे मिल-जुलकर टोलियों में खेलने लगते हैं । लड़के लड़कों के साथ और लड़कियां लड़कियों के साथ । अब कई बच्चे जमा होकर एक साथ शोर-गुल मचाएंगे, निरर्थक आवाज़ें निकालेंगे, बेकार बातें बोलेंगे, सुर में सुर मिलाकर अर्थहीन वाक्य दोहराएंगे । आवाज़ की नक़ल उतारेंगे, विभिन्न स्वांग भरेंगे, शादी-विवाह रचाएंगे, खेल-खेल में विभन्न प्रकार के उत्सव मनाएंगे । दौड़ना-भागना, उछलना-कूदना, एक-दूसरे का पीछा करना, छिपना, ढूंढ़ना, जानवरों के पीछे भागना, उन्हें तरह-तरह से सताना और उनपर सवारी गांठना, टोलियां बनाकर इधर-उधर फिरना, पेड़ों पर चढ़ना, गड्ढों और गुफाओ में उतरना इत्यादि क्रमशः उनके पसन्दीदा खेल होते हैं । शुरू-शुरू में टोलियां छोटी होती हैं, ताकि हर एक को खेलने और अपने करतब दिखाने का पूरा मौक़ा मिल सके । मुक़ाबले और प्रतिस्पर्धा के खेलों

से भी शुरू में बच्चे घबराते हैं, क्योंकि वे हारना नहीं चाहते । अगर मुक़ाबला पड़ ही जाए और संयोग से वे हार जाएं, तो या तो वे रोने और झगड़ने लगेंगे या धांधली, बेईमानी और झूठ से काम लेंगे । इस अवस्था में बच्चों को ख़ास तौर पर सम्भालने की ज़रूरत होती है । धीरे-धीरे उनमें खिलाड़ियों की स्प्रिट पैदा कराई जाए और हार-जीत की परवाह किए बिना ईमानदारी से खेलने की प्रेरणा दी जाए । शुरुआत में ऐसे खेल खिलवाए जाएं, जिनमें मिल-जुलकर खेलना हो और मुक़ाबले और प्रतिस्पर्धा की नौबत क़म आए । उदाहरण के लिए, नक़ल के खेल जिसमें हर बच्चे का पार्ट अलग-अलग होता है । कोई डॉक्टर बनता है, कोई रोगी, कोई कम्पाउंडर बनता है, कोई सेवा-सुश्रूषा करनेवाला, कुछ बच्चे मेहमान बनते हैं, कुछ मेज़बान इत्यादि । धीरे-धीरे बच्चे प्रतियोगी खेलों में दिलचस्पी लेने लगते हैं और पिट-पिटाकर नियम-क़ानून के पाबन्द और टोली के लीडर के आज्ञाकारी और फ़रमांबरदार बन जाते हैं । शुरू में उन्हें कुर्सी- दौड़, चमचा-दौड़, जलेबी-दौड़, नारंगी-दौड़, चीता-चीतल, रूमाल झपट, छिपना-ढूंढ़ना, आंख पर पट्टी बांध कर खेले जानेवाले विभिन्न खेल खिलवाए जाएं । आठ-नौ साल से बारह-तेरह साल की उम्र तक विभिन्न प्रकार के दौड़, ऊंची-लम्बी कूद, गेन्द-बल्ला, कबड्डी, रस्साकशी इत्यादि में भाग लेने के मौके उपलब्ध कराए जाएं । कभी-कभी शैक्षिक पर्यटन या पिकनिक के लिए बाहर ले जाएं । कमज़ोर और मजबूर बच्चे का साथ मुहब्बत और हमदर्दी का बरताव और देख-भाल और लालन-पालन की भावना भी स्वाभाविक है । इस भावना को उभारने के लिए कोई पक्षी या जानवर जैसे मुर्ग़ियां, कबूतर, बकरी, ख़रगोश इत्यादि पालने, फूल-पौधो उगाने, छोटे भाई-बहनों या कमज़ोर साथी-संगियों की देख-भाल का काम उनके सुपुर्द किया जाए, तो बच्चे खेल-खेल में जानवरों को सताने, कमज़ोरों को दबाने और आपस में लड़ने-झगड़ने से बचने लगेंगे ।

नवजवानी में दाख़िल होने के बाद बच्चों के खेल ज़्यादा व्यवस्थित होने लगते हैं । प्रतिस्पर्धा और मुक़ाबले की स्प्रिट भी बढ़ जाती है । शोर-शराबा कम और हरकत ज़्यादा होने लगती है । स्थायी टीमें और क्लब बनने लगते हैं और दूसरी टीमों और क्लबों को चैलेंज देने और उनसे टक्कर लेने की फ़िक्र होती है । उड़ान भी ऊंची हो जाती है और टोलियां बनाकर पर्यटन और मनोरंजन के लिए घर से बहुत दूर निकल जाने का शौक़ उभरता है । मानसिक कुश्ती, पहेलियां बुझाने, हाथ की सफ़ाई और महारथी खेलों में दिलचस्पी होने लगती है । अब लड़कों को फुटबॉल, वॉलीबॉल, रिंग बॉल, बैडमिंटन, पिंग-पांग, क्रिकेट, हॉकी, रस्साकशी, कबड्डी, बिनव्वट, तैराकी, साइकिल-सवारी, पी॰ टी॰ के व्यायाम, जिस्मनॉस्टिक और मैचों, मुक़ाबलों इत्यादि में भाग लेने का मौक़ा मिलना चाहिए और लड़कियों को हंड-कुल्हिया, होम-पिकनिक, इंडोर गेम्स और हल्के व्यायामों का धीरे-धीरे परिश्रम और कला-कौशल के कामों में खेल की स्प्रिट पैदा करके लड़के-लड़कियों को इनका आदी बनाना चाहिए, ताकि तन्दुरुस्ती भी ठीक रहे और उनका समय लाभदायक और उपयोगी कामों में ख़र्च हो ।

खेल, काम और बेगार

इन तीनों के स्वरूप और इनमें अंतर समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करना लाभदायक होगा–

(1) एक बच्ची अपनी गुड़ियों के लिए कपड़े तैयार कर रही है। वह सीने-पिरोने में मगन है या उसने अपनी गुड़िया का ब्याह रचा रखा है और बारातियों के लिए हंड-कुल्हिया पका रही है ।

(2) वही बच्ची स्कूल और मदरसे गयी है । स्कूल और मदरसे में सीने-पिरोने या खाने-पकाने में महारत प्राप्त करने के लिए घंटे रखे गए हैं । सिलाई के घंटे में वह सीने-पिरोने में या खाने-पकाने के घंटे में वह खाने पकाने में लगी हुई है ।

(3) वही बच्ची अपनी गुड़ियों से खेल रही थी । उसकी सहेली भी पास ही बैठी उसकी गुड़िया का साज़ो-सामान देख रही थी । इतने में मां ने उसे उठाकर खाना पकाने या छोटे भाई का पाजामा सीने पर लगा दिया । अब वह खाना पकाने या सीने-पिरोने में व्यस्त हो गयी है ।

उपर्युक्त तीनों रूपों में व्यस्तताएं एक ही तरह की हैं या सीना-पिरोना या खाना पकाना । लेकिन तीनों रूपों में व्यस्तता के समय इस बच्ची के दिलो-दिमाग़ की दशा एक समान नहीं होती, बल्कि अलग-अलग होती है । मानसिक और हार्दिक स्थितियों में विभिन्नता के ही कारण वही काम

पहली स्थिति में बच्ची के लिए खेल है, तो दूसरी स्थिति में काम और तीसरी सूरत में बेगार ।

इससे ख़ूब अच्छी तरह अन्दाज़ा हो गया होगा कि खेल, काम या बेगार की निर्भरता व्यस्तता के स्वरूप पर नहीं है, बल्कि दिलो-दिमाग़ की उस दशा पर है, जो किसी काम में व्यस्त रहने के समय हुआ करती है–

खेल : वह व्यस्तता है जिसमें अनैच्छिक धयान, स्वाभाविक रुचि और आज़ादी और ख़ुशी महसूस होती है ।

काम : वह क्रिया-कलाप है, जिसमें धयान और दिलचस्पी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में होती है । सीधे तौर पर इस क्रिया-कलाप में स्वभाविक आकर्षण नहीं होता, आज़ादी भी सीमित हो जाती है । एक ख़ास अंदाज़ ही से इसे अंजाम देना होता है और इसे पूरा करने में ख़ुशी और आनन्द का होना भी ज़रूरी नहीं ।

बेगार : इसके विपरीत बेगार वह क्रिया-कलाप है, जो किसी आदमी की दिलचस्पी को नज़रअन्दाज़ और उसकी आज़ादी को छीनकर उस पर बाहर से थोप दिया जाता है और अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उसे चाहे-अनचाहे अंजाम देना पड़ता है ।

खेल एक ऐसा क्रिया-कलाप है, जो ख़ुद एक उद्देश्य होता है, लेकिन काम स्वयं एक उद्देश्य नहीं होता, बल्कि किसी ऐसे सोचे-समझे उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन होता है, जिस पर हर समय करने वाले की नज़र जमी रहती है । बेगार में आदमी को किसी और के उद्देश्य की पूर्ति का साधन बनना पड़ता है या उद्देश्य उसकी नज़रों से ओझल होता है और दूसरों का काम समझकर मजबूरन अंजाम देना पड़ता है ।

क्रिया-कलापों की यही विशेषताएं कभी-कभी खेलों को भी काम, बल्कि बेगार बना देती हैं या काम को खेल में बदल देती हैं । उदाहरण के लिए, एक बच्चा स्कूल और मदरसे में होने वाले तीसरे पहर के खेलों में अपने शौक़ से शामिल होता है । ऐसी दशा में खेल उसके लिए सचमुच खेल है । दूसरा इसलिए शामिल होता है कि खेलने से तन्दुरुस्ती ठीक रहती है या साथियों से मुलाक़ात हो जाती है । स्पष्ट है, यह खेल उसके लिए काम है । एक तीसरा बच्चा है, जिसकी दिलचस्पियां किसी और तरफ़ हैं, लेकिन वह नियम के कारण पाबन्द है और सज़ा के डर से उन खेलों में भाग लेता है, तो यह खेल उसके लिए बेगार है । इसी तरह खेल के पर्यवेक्षक की सख़्ती, उसकी ओर से लागू की गई असाधारण पाबन्दियां भी खेल को आम तौर पर काम या बेगार बना देती हैं ।

इसके विपरीत कामों में अगर खेल की स्प्रिट पैदा कर दी जाए यानी बच्चों की दिलचस्पी, आज़ादी और ख़ुशी का यथासंभव ध्यान रखा जाए, बाहरी दबाव और हदबन्दियां कम से कम हों, तो वे काम को भी खेल ही समझेंगे, पूरे ध्यान, लगन और एकाग्रता से हिस्सा लेंगे और ज़ोर-ज़बरदस्ती से उनके व्यक्तित्व और कारकर्दगी पर जो प्रभाव पड़ते हैं, उनसे भी वे सुरक्षित हो जाएंगे ।

खेल-खेल में शिक्षा

छोटे बच्चे खेल के बहुत रसिया होते हैं । वे काम से घबराते हैं और बेगार तो उनके स्वतंत्रताप्रिय स्वभाव पर बहुत ही नागवार गुज़रती है । खेल में वे जी-जान से लगते और पूरी दिलचस्पी और लगन से हिस्सा लेते हैं । बाक़ी हर काम से वे जी चुराते हैं । खेल बच्चों का सबसे ज़्यादा रुचिकर क्रिया-कलाप ही नहीं, बल्कि ज़िन्दगी की पहचान है । तंदुरुस्ती और मनोरंजन का साधान, विकास में सहयोगी, शिक्षा-दीक्षा का सबसे ज़्यादा प्रभावकारी साधान भी है । इसके विपरीत चाहे औपचारिक शिक्षा आम तौर पर उनके



लिए बेगार और उनकी नाजुक तबीअत पर भारी बोझ होती है । लिखने-पढ़ने जैसे नीरस काम से उनका मन ऊब जाता है। इसी लिए बहुत ही मारे जी से और इच्छा के विरुद्ध वे इसमें शामिल होते हैं । इसी लिए छोटे बच्चों को खेल-खेल में शिक्षा देने और स्कूल और मदरसे के विभिन्न कामों में खेल की स्प्रिट पैदा करने पर बहुत बल दिया जाता है । लेकिन इसका यह हरगिज़ मतलब नहीं कि बच्चों को ज़िन्दगी भर के लिए खेल-तमाशे का आदी बना दिया जाए, बल्कि छोटे बच्चों को खेल के ज़्यादा मौक़े दिए जाएं । यथासम्भव खेलों को भी शिक्षा-दीक्षा का साधान बनाया जाए और कामों में खेल ही की स्प्रिट पैदा करके धीरे-धीरे कड़ी मेहनत, ध्यान और लगन से काम करने का आदी बनाया जाए। अभीष्ट तो शिक्षा-दीक्षा है, खेल तो इसे प्राप्त करने का केवल साधन है ।

खेल से लाभ

खेलों से बच्चों को सच्ची ख़ुशी मिलती है । उनका ग़म ग़लत होता है, उनकी उलझनें और परेशानियां दूर होती हैं । उनके चेहरे खिले रहते हैं, उनकी भावनाओं की तृप्ति होती है और कुल मिलाकर उनके व्यक्तित्व के हर पहलू को परवान चढ़ाने में बड़ी मदद मिलती है । खेलों से बच्चों को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं–

(1) शारीरिक लाभ : खेलों में शरीर को बहुत हरकत देनी पड़ती है और शारीरिक परिश्रम और मेहनत की ज़रूरत पड़ती है । इसलिए सांस के आने-जाने, रक्त-संसार, पाचन-व्यवस्था, अवशिष्ट पदार्थों के शरीर से बाहर निकलने में नियमितता बनी रहती है। स्यानुओं और मांसपेशियों पर नियंत्रण प्राप्त होता है । अंग-प्रत्यंग अपनी-अपनी जगह ठीक काम करते हैं । मेहनत के लिए शरीर में ऊर्जा और बीमारियों का सामना करने के लिए प्रतिरोधक क्षमता पैदा होती है । कुल मिलाकर तंदुरुस्ती ठीक रहती है और पलने-बढ़ने और विकास में बड़ी मदद मिलती है ।

(2) मानसिक लाभ : खेलों में बच्चों को विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों और तरह-तरह के साथियों का सामना होता है । उन सबसे निबटने के लिए उन्हें सोचने-समझने और समय पर ही फ़ैसला लेने और क़दम उठाने की ज़रूरत होती है । माहौल और विभिन्न चीज़ों के बारे में तरह-तरह की जानकारियां प्राप्त होती हैं । चीज़ों को बनाने-बिगाड़ने और तोड़ने-जोड़ने और अक़्ल के खेल खेलने से कल्पना-शक्ति का विकास होता और आविष्कार और खोज-बीन की सलाहियत उभरती है । अपनी सलाहियतों का ठीक-ठीक अन्दाज़ा लगाने का मौक़ा मिलता है । ध्यान और लगन का प्रशिक्षण होता है । अनुभवों और अवलोकनों (मुशाहिदों) में वृद्धि होती है। वास्तविक दुनिया में बच्चों की अक्सर स्वाभाविक मांगों और नैसर्गिक इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती, जिससे वे उलझनों और मानसिक उथल-पुथल में ग्रस्त हो जाते हैं । खेलों के द्वारा वे कल्पना की दुनिया में उनकी पूर्ति कर लेते हैं और इस तरह उलझनों से उन्हें मुक्ति मिलती और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है ।

(3) सामाजिक लाभ : सामूहिक खेलों के द्वारा बच्चे अपने साथियों के साथ सहयोग और सहानुभूति, नियम-क़ायदों की पाबन्दी, मुक़ाबला और प्रतिस्पर्धा में सन्तुलन, आज्ञापालन और नेतृत्व, हक़ मारे जाने और धांधलियों का सामना और अपनी बारी का इन्तिज़ार करने का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं । साथियों का सम्मान करना, नियमहीनता की हद तक बढ़ी हुई आज़ादी को दूसरों के लिए सीमित करना और अपनी इच्छाओं और व्यक्तिगत दिलचस्पियों को सामूहिक हित पर न्योछावर करना भी वे संगठित खेलों के द्वारा सीखते हैं।

(4) नैतिक लाभ : खेलों के द्वारा बच्चों में विभिन्न प्रकार के नैतिक गुणों का भी विकास होता है । उदहारण के लिए, दृढ़ता और बहादुरी, इन्द्रियों पर नियंत्रण, आत्मविश्वास, वफ़ादारी और आज्ञापालन इत्यादि ।

तात्पर्य यह कि खेलों के द्वारा बच्चों के सर्वांगीण और समुचित विकास में बड़ी मदद मिलती है । इनकी वजह से पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है । लेकिन वाज़ेह रहे, अगर इन विशेषताओं के बजाय खेलों ही को लक्ष्य बना लिया जाएगा, तो उनका प्रदर्शन केवल खेल के मैदानों ही में होगा–ज़रूरी नहीं कि दैनिक जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी इन गुणों और विशेषताओं का प्रदर्शन हो । इसलिए ज़रूरी है कि खेल को सिर्फ़ साधान समझा जाए और विभिन्न कामों में खेल की स्प्रिट पैदा करके धीरे-धीरे इन गुणों को विकसित करने की चिन्ता और कोशिश की जाए ।

● अनुवाद : **मुहम्मद इलियास हुसैन**

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़



HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

A/c Rooms & Non A/c Rooms

With

Attatch Bath Rooms

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माकूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

दक्षिण एशियाई खेलों में भारत की बादशाहत

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

वही हुआ जिसका अनुमान हर किसी को पहले से ही था । लगातार 12वीं बार दक्षिण एशियाई खेलों में भारत ने अपनी बादशाहत साबित करते हुए रिकार्ड 308 पदक जीते । इस बार भारत ने 188 स्वर्ण, 90 रजत और 30 कांस्य पदक जीते । इस बार कुल 239 स्वर्ण पदक दांव पर थे यानी भारत ने तीन चौथाई से अधिक पीले तमगे अपने नाम किये । श्रीलंका 25 स्वर्ण, 63 रजत और 98 कांस्य जीतकर दूसरे स्थान पर रहा । पाकिस्तान 12 स्वर्ण, 37 रजत और 57 कांस्य के साथ तीसरे स्थान पर था । इससे पहले भारत ने 1995 में मद्रास में हुए खेलों में कुल 143 में से 106 स्वर्ण पदक जीते थे । भारत अभी तक दक्षिण एशियाई खेलों में हमेशा शीर्ष पर रहा है लेकिन इस बार मुक्केबाजी, तीरंदाजी, टेनिस, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, निशानेबाजी, एथलेटिक्स, कुश्ती, तैराकी, भारोत्तोलन, साइकिलिंग, जूडो और वुशू में भारत ने लगभग क्लीन स्वीप किया । कबड्डी और खो-खो में भारत ने पुरुष और महिला दोनों वर्ग में ख़िताब जीते । ताइक्वांडो में अफ़ग़ानिस्तान ने भारत को हराया जिसमें भारत को पांच स्वर्ण, तीन रजत और दो कांस्य मिले जबकि अफ़ग़ानिस्तान ने छह स्वर्ण जीते ।

भारत को सबसे बड़ी निराशा पुरुष हाकी में हाथ लगी जिसमें पाकिस्तान ने फिर उसे फ़ाइनल में हराया । पाकिस्तान का यह इन खेलों की पुरुष हाकी स्पर्धा में लगातार तीसरा स्वर्ण पदक था । महिला हाकी टीम ने हालांकि आसानी से पीला तमग़ा अपने नाम किया । भारतीय पुरुष फुटबाल टीम भी स्वर्ण नहीं जीत सकी और फाइनल में नेपाल से हार गयी । महिला टीम ने हालांकि स्वर्ण जीता । भारत ने एथलेटिक्स, कुश्ती और भारोत्तोलन में दोयम दर्जे की टीम उतारी थी हालांकि निशानेबाज़ी, बैडमिंटन, मुक्केबाज़ी और तीरंदाज़ी में उसके शीर्ष खिलाड़ियों ने भाग लिया । एथलेटिक्स में भारत ने 28 स्वर्ण पदक जीते जबकि निशानेबाज़ी, तैराकी, कुश्ती और भारोत्तोलन में उसे क्रमश: 26, 18, 14 और 13 स्वर्ण पदक मिले । भारत ने मुक्केबाज़ी, बैडमिंटन, टेनिस, तीरंदाज़ी और टेबल टेनिस में भी क्लीन स्वीप किया । एथलेटिक्स में लंबी दूरी की धाविका कविता राउत ने महिलाओं की मैराथन जीतकर ओलंपिक के लिये भी क्वालीफाई कर लिया । वह इन खेलों से रियो ओलंपिक का टिकट कटाने वाली एकमात्र एथलीट रही । मनप्रीत कौर (महिलाओं की शाटपुट), नितेंद्र सिंह रावत और खेता राम (पुरुषों की मैराथन) रियो ओलंपिक के लिये पहले ही क्वालीफाई कर चुके हैं । मनप्रीत ने स्वर्ण जीता लेकिन अपने ही 17-96 मीटर के राष्ट्रीय रिकार्ड की बराबरी नहीं कर सकी । कविता ने स्वर्ण और खेताराम ने रजत पदक जीता ।

निशानेबाज़ी में भारत ने मज़बूत टीम भेजी थी जिसमें रियो के लिए क्वालीफाई कर चुके छह निशानेबाज़ शामिल थे । चैन सिंह ने 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशंस, 50 मीटर राइफल प्रोन और 10 मीटर एयर राइफल में स्वर्ण पदक जीते । उन्होंने टीम स्पर्धा में भी तीन स्वर्ण पदक हासिल किये । स्टार निशानेबाज़ गगन नारंग को एक भी स्वर्ण नहीं मिल सका । लंदन ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता नारंग ने 50 मीटर राइफल प्रोन में रजत और 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशंस में कांस्य पदक जीता । गुरप्रीत सिंह (25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल) और अपूर्वी चंदेला (10 मीटर एयर राइफल) ने स्वर्ण पदक जीता ।

ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकी हीना सिद्धू 10 मीटर एयर पिस्टल में रजत ही जीत सकी । मुक्केबाज़ी में लंदन ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता एम॰सी॰ मेरीकाम की अगुवाई में भारत ने 10 स्वर्ण पदक जीते । मेरी (51 किलो) के अलावा एल॰ सरिता देवी (60 किलो)

और शिवा थापा (56 किलो) ने भी स्वर्ण जीते । तीरंदाज़ी में भी भारत ने सभी दस स्वर्ण और चार रजत पदक जीते । बैडमिंटन में साइना नेहवाल और पारूपल्ली कश्यप के भाग नहीं लेने के बावजूद भारत ने क्लीन स्वीप किया । उदीयमान खिलाड़ी रूत्विका शिवानी ने महिला एकल फाइनल में पी०वी० सिंधू को हराकर बड़ा उलटफेर किया । कुश्ती में भारत ने 14 स्वर्ण और दो रजत पदक जीते । भारोत्तोलन में भारत ने 12 स्वर्ण और आठ रजत पदक हासिल किये । टेनिस में भारत ने सभी पांच स्वर्ण और रजत जीतकर क्लीन स्वीप किया ।

खेलों के 32 साल के इतिहास में किसी देश का यह सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था लेकिन अधिकांश खेलों में सिर्फ़ भारत का दबदबा रहने के कारण इनके औचित्य पर सवाल उठने लगे हैं ।

खेल के जानकार कहते हैं कि किसी बड़े आयोजन में यदि अधिकतर पदक कोई एक देश ही ज़ीत ले तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह देश बहुत अच्छा खेल बल्कि इसका मतलब यह है कि बाक़ी के देश इस आयोजन को संजीदगी से नहीं ले रहे हैं । यदि ऐसी सोच पायी जा रही है तो यह खेलों के लिए अच्छी बात नहीं है ।

खेल का मज़ा तो तब है जब अंतिम समय तक किसी को यह पता नहीं हो कि यह मुक़ाबला कौन-सा खिलाड़ी या कौन-सी टीम जीतेगी । भारत के सबसे अधिक पदक जीत कर कमाल तो कर दिया मगर दूसरे देश का ख़राब प्रदर्शन चिंता की बात है । श्रीलंका 25 स्वर्ण , 63 रजत और 98 कांस्य पदक के साथ दूसरे नंबर पर रहा । पाकिस्तान को 12 स्वर्ण, 37 रजत और 57 कांस्य पदक के साथ तीसरा नंबर मिला ।

अफ़ग़ानिस्तान चौथे नंबर पर रहा जिसने 7 स्वर्ण, 9 रजत और 19 कांस्य पदक जीते । बंगलादेश को पांचवां स्थान मिला जिसने 4 स्वर्ण, 15 रजत और 56 कांस्य पदक जीते । नेपाल 3 स्वर्ण, 23 रजत और 34 कांस्य पदक के साथ छठे नंबर पर रहा । मालदीव और भूटान दो ऐसे देश थे जिन्हें एक भी स्वर्ण पदक नहीं जीता । मालदीव को 2 रजत और एक कांस्य मिला जबकि भूटान को 1 रजत और 15 कांस्य पदक मिले । 2019 में इन खेलों का आयोजन काठमांडू में होगा और ऐसी उम्मीद है कि भारत यहां भी सर्वाधिक पदक जीतेगा ।

लघुकथाएं

घोषणा पत्र

चुनाव प्रचार अपने यौवन पर था । विपक्षी दल ने आज पार्टी कार्यालय में एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया था । पार्टी अध्यक्ष जब पत्रकारों को संबोधित करने लगे तो एक पत्रकार ने उनसे पूछ लिया–

अध्यक्ष महोदय जी, सत्तारूढ़ दल ने अपना चुनाव घोषणा पत्र जारी कर दिया है । अब आप अपनी पार्टी का घोषणा पत्र कब जारी कर रहे हैं ?''

पत्रकार का यह प्रश्न सुनकर अध्यक्ष जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया–

''पत्रकार महोदय, हमें इसके जारी करने की क्या ज़रूरत है ? जो वादे सत्तारूढ़ दल ने अपने घोषणा पत्र में किये हैं, वे सब हमारे ही तो हैं । हम इन वादों को पूरा करेंगे । फिर भी जिन वादों को सत्तारूढ़ दल ने छोड़ दिया है, उन शेष वादों को भी हमारी पार्टी पूरा करेगी । इसका मैं वचन देता हूं ।'' अध्यक्ष महोदय का यह जवाब सुनकर सभी पत्रकार स्तब्ध रह गये ।

इन्सान

चौपाल में बैठे लोग अलाव तापते हुए हुक़्क़ा गुड़गुड़ा रहे थे । हुक़्क़े का कश खींचते-खींचते उनके बीच बातों का अलाव भी गर्म हो चला । बात खेत-खलिहान से होती हुई आज की राजनीति और नेताओं पर आ गयी । किसी ने राजनीति को वेश्या बताया तो किसी ने नेताओं को दलाल की संज्ञा दे डाली ।

उनमें इसी प्रकार की बहस शुरू थी । तभी काका हरचंद ने उनसे नेता और इन्सान के बीच के अन्तर के बारे में पूछा तो मामला और भी ज़्यादा गर्म हो गया । कोई कुछ बोल रहा था तो कोई कुछ । जब वे बात-बात में आपस में उलझने लगे तो बोहरा जी ने उन्हें चुप कराते हुए कहा–

''अरे मूर्खों इतनी छोटी-सी बात पर तुम लोगों ने महाभारत मचा दिया । इन्सान बना आदमी नेता बन सकता है । परन्तु नेता बना आदमी इन्सान नहीं बन सकता । नेता और इन्सान में बस इतना-सा अन्तर है ।''

बोहरा जी की बात सुनकर वे निरुत्तर हो गये ।

● रोहित यादव

तेरे बिना

■ सुमित्रा देवी माला

'मेरे लाल संभालकर' स्टेशन पर विदा करने आयी मेरी मम्मी के शब्द रुलाई में खो गये थे ।

'नहीं मम्मी तू रो मत, मेरा तो एक-एक पल तेरे साथ बीतता है, तू हर पल मेरे साथ रहती है ! तेरा यह आभायुक्त चेहरा मेरी आंखों में सदैव क़ैद रहता है, यही मेरा पथ प्रदर्शक है मम्मी' दीपक ने ढाढस बंधाने का प्रयत्न करते हुए कहा ।

'मैं तेरे बिना कहां रह पाती हूं । मेरी ममता क्या सदैव इसी तरह तड़पती रहेगी !' कहते हुए मां ने अपना सिर बेटे के सीने पर टिका दिया ।

'मम्मी तू रोकर मेरी हिम्मत हारना चाहती है ? मुझे साहस से विदा कर, कॉलेज की छुट्टियां होते ही पुन: आऊंगा, बस, अब तो यह अंतिम वर्ष है, तेरी तपस्या का फिर मां और बेटा, बेटा और मां ही होंगे, कहते हुए दीपक अपनी मां के चरण छूने जैसे ही झुका, वैसे ही सुनीता ने उसके सिर को अपने सीने से लगा लिया और फफक कर रो पड़ी ।

इतने में गाड़ी ने सीटी दी । गाड़ी स्टेशन से खुलने ही वाली थी कि सुनीता ने अपने बेटे को गाड़ी में सीट पर बिठाया और प्लेटफार्म पर उतर पड़ी । उसने अपने भीतर के ममता के तूफान को रोकने का भरसक प्रयत्न किया ।

दीपक देख रहा था, कैसी हो गयी थी उसकी मम्मी इतनी दुबली कि अब हड्डियां बची रह गयी थीं । शरीरा का रंग भी तो बदल गया था । भला इसमें मम्मी का क्या दोष, इतने में गाड़ी एक झटके के साथ आगे की ओर सरकने लगी, दीपक ने देखा मम्मी का रूमाल हवा में देर तक लहराता रहा । लगा मम्मी फिर प्रतीक्षा करती खड़ी रह गयी है । ट्रेन का पिछला डिब्बा ओझल हो जाने पर मम्मी मुड़ी होगी । यह सब सोचते-सोचते दीपक बर्थ पर लेट गया । बीते दिनों की तस्वीरें उसकी आंखों के सामने रेंगने लगी । वे यादें आंखों में सजीव हो उठी ।

बचपन से देखा करता था मम्मी चुप साधे रहा करती थी । लेकिन जब कोई घर आता मिलने तब मम्मी का रूप-उफ़ ! पता ही नहीं चल सकता था कि मम्मी इतनी ख़ामोश कैसे रह पाती होगी । खिलखिलाता वह चेहरा नन्हें दिमाग़ में अक्सर प्रश्नों की झड़ी लगा देता, औरों के समान मम्मी रंग-बिरंगी साड़ियां क्यों नहीं पहनती । वैसे एकदम सफ़ेद साड़ी पहने और लाल बिंदी लगाए मम्मी जब कॉलेज के लिए निकलती तो लगता जैसे सफ़ेद परी आसमान से उतर पड़ी है । कपड़ों पर पड़ी एक शिकन तक मम्मी पसन्द नहीं किया करती ।

एक दिन दीपक खेलने में इतना खो गया था कि उसे समय का ध्यान ही नहीं रहा, जब घर में घुसा तभी मम्मी की अंगारे बरसाती आंखों ने उसे घूरा था, यह पूछते हुए कि कहां गये थे ?

'खेलने' कांपते हुए दीपक की आवाज़ निकली थी । आजकल देख रहा हूं तुम पढ़ाई-लिखाई में ध्यान नहीं देते हो ?

'पढ़ता तो हूं' कहते मम्मी से दूर निकल जाना चाहा था, लेकिन मम्मी के हाथों में क़ैद हो गया था । देखा वे आंखें दुखी थी । लगा उसके पीछे आंसुओं का समुद्र उमड़ रहा है । उसे अपने किये पर बहुत पछतावा हुआ, तभी मम्मी का ज़ोरदार चांटा उसके गाल पर पड़ा था–'तू तो जानता है मैं जीने की इच्छा सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरे कारण करती हूं । अगर तूने ही मुझे निराश किया तो किसके विश्वास पर जिऊंगी ।'

तब दीपक चुपचाप सोने का बहाना करते लेट गया शायद रात आधी से अधिक व्यतीत हो चुकी थी । दीपक निद्रा और अनिद्रा के बीच झूलता सो रहा था । सहसा उसे लगा जैसे कोई धीरे-धीरे उसके बालों को सहला रहा है । एक पल को तो उसे सपना लगा ।

उसने अपने हाथ पर चिकोटी काटी–नहीं वह सपना नहीं था, वह जाग रहा था सिर्फ़ आंखें बन्द थीं उसकी । धीरे-धीरे उसने आंखें खोली, नाइट लैम्प के मद्धिम प्रकाश में देखा मम्मी उसके पास में बैठी है । गहरी चिंता में डूबी,

नज़र झुकाए । उनकी आंखों से आंसुओं की बूंदें लुढ़ककर दीपक के सिर पर पड़ रही थी । गहरी चोट लगी दीपक के मन को । वह तो सोच भी नहीं सकता था कि मम्मी उसे लेकर इतनी संतप्त होगी । उसके धीरज का बांध जैसे टूट गया था । 'मम्मी' कहकर पखेरू की तरह वह मम्मी की गोद में दुबक गया था । मम्मी ने उसे अपनी बांहों में बांध लिया था ।

बेटे क्षमा करना क्या करूं मैं तेरे लिए ही तो, मेरा यह सारा संघर्ष है अगर तू ही भटक जाएगा तब इस जीवन में रह ही क्या जाएगा । इस जीवन में पति का प्यार तो लाख चाहने पर भी पा न सकी । उन्होंने मुझे छोड़ अपना संसार अलग बसा लिया । मेरा कितना प्रयत्न रहता, लेकिन वे हमेशा अन्य स्त्रियों से तेरी तुलना किया करते, 'तू सुन्दर नहीं, सोसायटी में बैठने-उठने योग्य नहीं, इतनी सारी अवहेलना तिरस्कार मिला कि पलट कर देखती हूं तो आश्चर्य होता है कि इसे मैंने कैसे सहा होगा, लेकिन तेरे पैदा होने पर तुझे बनाने के लिए मैंने उस नगर को ही छोड़ दिया और हिम्मत से यहां नौकरी पा ली ।'

मां ने झुककर स्नेह से उसकी आंखें चूम ली थी । सच मां-मां ही होती है, जिसकी गोद में हर थकान मिट जाती है । वह अपलक अपनी मम्मी का चेहरा निहारता रहा था । वे आंखें जैसे कह रही थी–तुम्हारे इस प्यार का क़र्ज़ मैं कभी नहीं चुका सकूंगी ।

उसके बाद मम्मी खाना लायी थी और अपने हाथ से कौर मुंह में डाला था, तब बेटे ने भी अपने हाथों मां को खाना खिलाया था । दर्द मानो बंट गया था ।

उस घटना के बाद दीपक का बचपन जैसे मीलों दूर छूट गया था । उसने होस्टल में रहते कसकर मेहनत की और आज उसकी ग्रेज्युएशन का अंतिम वर्ष था । नौकरी मिलने की उसे पूरी आशा थी ।

जब-जब छुट्टियों में वह घर आता है । मम्मी उसका कितना ध्यान रखती है–स्टेशन चलने से पहले आज भी मम्मी ने उसकी तारीफ़ की थी । माथे पर प्यार का टीका लगाया था । एक टक बेटे की ओर देखती, उनकी आंखें डबडबा गयी थी । जिन्हें नज़र बचाकर उन्होंने पोंछ लिया था । फिर भी वे आंसू बेटे की नज़रों से छुप नहीं सके थे...कैसे कहा था मम्मी ने पास खड़ी रहकर–'देख कितना लंबा हो गया है ।'

'मम्ती अब और देर नहीं, मैं तेरा अकेलापन दूर करूंगा । तेरे बिना तेरा बेटा भी तो अकेला हो जाता है मम्मी ।'

सबके बीच रहते भी वह होस्टल में अपने आपको अवेला पाता था । मम्मी की मीठी यादों की धनी भीड़ में कोई दूसरा घुसता ही नहीं ।

भगदड़

अभिशप्त हैं हमारी
महिलाएं बच्चे और बुजुर्ग
भगदड़ में कुचल कर
दर्दनाक मौत करने के लिए ।

धार्मिक और सामाजिक सम्मेलनों में
लाज़मी है बेपनाह भीड़ का जुटना
और उतना ही लाज़मी है हर बार
मूलभूत व्यवस्थाओं का चरमरा जाना ।

आयोजक और प्रशासन
तत्परता दिखाते हैं केवल
मुआवज़े की घोषणाएं करने में
और इति मान लेते हैं अपने
समस्त उत्तरदायित्व की !

जारी रहता है सम्मेलनों का होना
भीड़ का जुटना, व्यवस्थाओं का गड़बड़ाना
और ढेरों निर्दोषों का
अकाल मौत मर जाना ।

कोई नहीं होता दंडित
कोई नहीं लेता कोई सीख
मान लिया है सबने
इसे एक सामान्य घटनाक्रम ।

ओमप्रकाश बजाज

जबलपुर, म०प्र०

भारतीय और इस्लामी दर्शन में इस्लाम

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

सुप्रसिद्ध इस्लामी चिन्तक और लेखक मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां ने अपनी दोनों पुस्तकों में–'आत्मा और परमात्मा' एवं 'अध्यात्म का महत्त्व और इस्लाम' भारतीय और इस्लामी दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । पहली पुस्तक में विद्वान लेखक ने आत्मा क्या है और परमात्मा क्या ? दोनों में परस्पर क्या और कैसा सम्बन्ध है ? शरीर और आत्मा क्या के बीच क्या सम्बन्ध है ? क्या यह सम्बन्ध शाश्वत है ? इत्यादि प्रश्नों पर विचार किया है और दूसरी पुस्तक में अध्यात्म को परिभाषित करने के पश्चात उसकी महत्ता को प्रतिपादित किया है और हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म की दृष्टि में अध्यात्म क्या है ? मानव-जीवन में अध्यात्म क्या भूमिका निभाता है, इन तथा इन्हीं जैसे अनेक प्रश्नों पर बुद्धिसंगत एवं तर्कसंगत ढंग से प्रकाश डाला है ।

'आत्मा और परमात्मा' शीर्षक पुस्तक में विद्वान लेखक ने भारतीय एवं इस्लामी दर्शनों के आधार पर आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को प्रमाणित किया है । जैन मत, न्यायिक दर्शन, वेदान्त, वैशेषिक दर्शन, कुरआन और हदीस के आधार आत्मा और परमात्मा के पारस्परिक सम्बन्ध और इस सम्बन्ध के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है ।

मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है । अध्यात्म इसकी आत्मा का आहार है और यह इसके रोम-रोम में बसा है । अध्यात्म ही वह अनुपम अमूर्त तत्त्व है, जो मानव-आत्मा को अनुपम आनन्द की अनुभूति कराता है । मनुष्य की चिर अभिलाषा है कि लोक-परलोक दोनों में शाश्वत सुख और अनुपम आनन्द की प्राप्ति हो । पुण्य कर्म द्वारा ही मनुष्य दोनों लोकों में सफलता और मुक्ति का पात्र बन सकता है । नकारात्मक सोच और कर्म से जो जितना अधिक अपने को बचाएगा, वह उतना ही अधिक सुखानन्द पाएगा । उसकी आत्मा को परमात्मा मनचाहा आहार प्रदान करेगा । आत्मा का आहार क्या है ? प्रेम आत्मा का आहार है । लेखक के शब्दों में, "आत्मा का वास्तविक आहार प्रेम है । उसकी इच्छा होती है कि उसे प्रेम मिले और उसका कोई प्रेम-पात्र और इष्ट हो, जिससे वह प्रेम कर सके । उसका सामीप्य और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए वह अपने प्रेम-पात्र की इच्छाओं और आदेशों का पालन करे और इसे अपना सौभाग्य समझे और उसके सौन्दर्य की छाया में अपना जीवन व्यतीत करे और उसके सौन्दर्य के अनुरूप अपने व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करे । उसके शब्दों को अपनी आत्मा में उतारकर अपने को कृत-कृत्य करे ।" (पृ० 12) मनुष्य क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर इन शब्दों में दिया गया है, "वास्तव में तुम एक आत्मा हो, जिसे एक शरीर प्राप्त है । यह नहीं कि तुम एक शरीर हो, जिसे एक आत्मा प्राप्त है ।"

परमात्मा के सम्बन्ध में धर्मग्रंथों में कहा गया है कि परमात्मा सर्वगुण-सम्पन्न, सर्वशक्तिमान सत्ता का नाम है, वह एक अव्यक्त सत्ता है, जिसकी शक्ति, सामर्थ्य और अपार एवं असीम ज्ञान परिचय हमें इस जगत के माध्यम से होता है । उसी को ईश्वर और अल्लाह कहा जाता है और परमात्मा भी । वह हर जगह रहनेवाला प्रकाश है । एक सत्य ही है, जिसे ज्ञानी लोग अनेक नामों से याद करते हैं । परमात्मा ही है, जो सम्पूर्ण जगत उत्पन्न करता है । पवित्र

1.	पुस्तक	: आत्मा और परमात्मा
	लेखक	: मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां
	पृष्ठ	: 48
	मूल्य	: ₹ 24.00
	प्रकाशक	: एम० एम० आई० पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25, फ़ोन : 011-26981652
2.	पुस्तक	: अध्यात्म का महत्त्व और इस्लाम
	लेखक	: मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां
	पृष्ठ	: 36
	मूल्य	: ₹ 20.00
	प्रकाशक	: एम० एम० आई० पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25, फ़ोन : 011-26981652

क़ुरआन के शब्दों में, "ईश्वर के सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं । वह जीवन्त सत्ता है । सबको संभालने और क़ायम रखनेवाला है । उसे न ऊंघ आती है, न निद्रा । उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है । कौन है जो उसके यहां उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके ? वह जानता है जो कुछ उसके आगे है और जो कुछ उसके पीछे है । और वे उसके ज्ञान में से किसी पर भी हावी नहीं हो सकते सिवाय उसके जो उसने चाहा । उसकी कुर्सी (प्रभुत्व)आकाशों और धरती को व्याप्त है और उसकी सुरक्षा उसके लिए तनिक भी भारी नहीं और वह उच्च, महान है ।" (2 : 285) अत: "रात गये तक उसका सुमिरन करो और उसके प्रेम का आनन्द लो ।"

(क़ुरआन, 76 : 26)

'अध्यात्म का महत्त्व और इस्लाम' शीर्षक पुस्तक में भी विभिन्न भारतीय दर्शनों और इस्लामी दर्शन के आधार पर अध्यात्म के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है । मौलाना ने इस पुस्तक में मानव-जीवन में अध्यात्म की भूमिका की विवेचना की है और बताया है कि अध्यात्म मानव-जीवन को सुवासित और आनन्दमय बनाता है । वह धन्य-धन्य हो गया, जो अध्यात्म के मर्म तक पहुंच गया; जो अध्यात्म के मर्म पहुंच गया, उसका जीवन अध्यात्म के सुगंध से सुवासित हो गया, उसका जीवन आनन्द से परिपूर्ण हो गया । जीवन का परम और चरम लक्ष्य अमरत्व की प्राप्ति है और अध्यात्म के द्वारा ही इसकी प्राप्ति हो सकती है । लेखक के शब्दों में, "जीवन को पूर्ण रूप से समझना और उसके अनुसार आचरण करना ही अध्यात्म है । ...मानव-जीवन का वास्तविक उद्देश्य जीवन की संभावनाओं से परिचित होना है, जिसके परिणामस्वरूप जीवन सुन्दर, सुखद और भयरहित हो जाता है और अमरत्व उसका भाग्य सिद्ध होता है ।" (अध्यात्म का महत्त्व और इस्लाम, पृ॰ 7)

आगे चलकर लेख़क ने अध्यात्म को जीवन में घटित होनेवाली एक अद्भुत घटना कहा है, जिससे जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन आ जाता है । लेखक ही के शब्दों, "हममें कोई चीज़ है जो कभी बदलती नहीं है । वह चीज़ आत्मा है और वही वास्तव में हम हैं । आत्म स्वयं प्रकाश है और ज्ञान ही उसका स्वरूप है । मनुष्य को जब आध्यात्मिता का भान हो जाता है तो उसकी दुनिया ही बदल जाती है । लेखक के शब्दों में, "आध्यामिक शिक्षा से हमें अपनी अनुभूति होती है, जो जीवन में एक अद्भुत घटना है । यह घटना जब किसी के जीवन में घटित होती है तो उस व्यक्ति के जीवन में मौलिक परिवर्तन आ जाता है । वह प्रत्येक संकीर्णता से मुक्ति प्राप्त कर लेता है ।" (पृ॰ 11)

लेखक ने लिखा है कि आत्मा, परमात्मा और अध्यात्म की दृष्टि से इस्लामी दर्शन ही तुलनात्मक रूप से अधिक सरल और सुग्राह्य है । यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन करता है । विचार, भाव और कर्म प्रत्येक दृष्टि से इसकी शिक्षाएं पूरी तरह सत्य पर आधारित और पूर्ण हैं । इस्लामी दर्शन की सरलता, सरसता और व्यावहारिकता मानव-मन को सदा-सर्वदा अपनी ओर आकर्षित करती रही है । यह लोगों द्वारा पैदा की हुई रुकवटों को दूर करता है और उन बंधनों से मानव को छुटकरा दिलाता है, जिनमें वे जकड़े हुए हैं । इस्लाम दिलों की शांति और सुकून का नाम है, पूर्ण समर्पण और आज्ञाकारिता का नाम है । इसमें कहीं कोई द्वैत नहीं है । यह अध्यात्म और ईमान, मानव-आचरण और नैतिकता, सदाचार और परोपकार का संबंध दैनिक जीवन से जोड़ता है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के बीच सुन्दर सामंजस्य और एकात्मकता पैदा करता है । यह इस्लाम का सबसे बड़ा कारनामा है ।

कुल मिलाकर ये दोनों पुस्तकें आत्मा, परमात्मा और अध्यात्म जैसे गूढ़ विषयों का हिन्दू-इस्लामी दर्शनों का तुलनात्मक एवं रोचक अध्ययन प्रस्तुत करती हैं । लेखक ने इन विषयों को मनोयोगपूर्ण कठोर परिश्रम और आकर्षक लेखन-शैली के बल पर मनमोहक एवं सुवासित पुष्प बना दिया है, जिसकी भीनी-भीनी से ख़ूशबू से पाठक आनन्दित हुए बिना नहीं रह सकेगा ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के पीछे मुसलमान

■ डॉ॰ सुरेन्द्र अज्ञात
(एम॰ए॰, पी-एच॰डी॰)

यदि आधुनिक विश्व के इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो पता चलता है कि 14वीं सदी के आरंभ से ही इटली में वैचारिक परिवर्तन होने लगे थे, जो शीघ्र ही आग की तरह सारे यूरोप में फैल गये । परिणामस्वरूप यूरोप में भी बदलाव आने लगा । इन्हीं वैचारिक परिवर्तनों को 'पुनर्जागरण आन्दोलन' कहा जाता है ।

यह पुनर्जागरण आन्दोलन 1515 से 1559 की अवधि में फ्रांस में अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया था । इसके प्रभाव के कारण ही 17वीं सदी में बौद्धिक चेतना का विकास हुआ, जिसके कारण उस काल को 'तर्कप्रधान युग' की संज्ञा भी दी जाती है । स्पष्ट है कि यदि युरोप में पुनर्जागरण नहीं हुआ होता और बौद्धिक विषयों में लोगों की रुचि नहीं जगी होती तो शायद यह 'तर्कप्रधान युग' पैदा ही न होता ।

17वीं सदी के आस-पास का समय अत्यंत महत्वपूर्ण था । इस अवधि में लोग नयी संभावनाओं के प्रति जागरूक हुए और संसार व ब्रह्मांड का नये दृष्टि से पुनर्निरीक्षण करने लगे । यह महान दार्शनिकों व वैज्ञानिकों का युग था । निकोलस कूपरनिक्स, जान लौक, आइज़क न्यूटन, फ्रांसिस बेकन, गैलीलिओ गैलिली और रेने कार्टेस इसी समय हुए । इन लोगों ने बुद्धिमत्ता की जो नींव रखी, उसी से आधुनिक विश्व व मानव का विकास हुआ है ।

यह सब पढ़कर अच्छा लगता है पर प्रश्न पैदा होता है कि 14वीं शताब्दी से यह पुनर्जागरण क्यों शुरू हुआ ? इसका प्रेरक तत्व कौन था ? इसका एक शब्द में उत्तर तो यही हो सकता है कि यह मुसलमानों का कमाल था ।

बात झटपटी लगी ? इससे मुस्लिम तुष्टीकरण की बू आती है ? यदि यूरोप के इतिहास पर नज़र डालें तो पाएंगे कि पुनर्जागरण से पहले यूरोप अंधकार से ग्रस्त था । लगभग 1000 वर्षों से वहां घोर अज्ञान और जड़ता का साम्राज्य था,

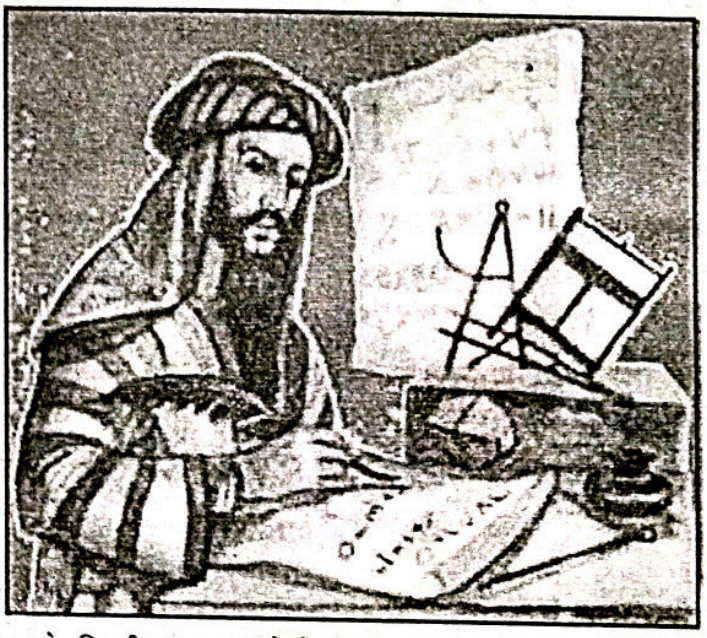

इसके विपरीत मुसलमानों ने 7वीं-8वीं शताब्दी से ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में बहुत कुछ एकत्र कर लिया था ।

मंसूर (754-775 ई॰), हारून (786-809 ई॰) और मामून (811-833 ई॰) ऐसे मुस्लिम शासक थे जिन्हें राहुल सांकृत्यायन ने 'अरबी शालिवाहन और विक्रम' कहा है, क्योंकि इनके दरबार में देश-विदेश के विद्वानों का बड़ा सम्मान होता था । वे स्वयं विद्वान थे और उनके शाहज़ादों की शिक्षा में कुरआन के साथ-साथ यूनानी दर्शन, भारतीय ज्योतिष और गणित भी शामिल थे ।

यज़ीद प्रथम (680-717 ई॰) के पुत्र ख़ालिद (मृ॰ 704) को कीमिया (रसायन(का बहुत शौक़ था । उसी ने पहले पहल कीमिया की एक यूनानी पुस्तक का अरबी में अनुवाद करवाया था । मंसूर (754-775 ई॰) के शासन में वैद्यक, तर्कशास्त्र, भौतिक विज्ञान आदि के ग्रंथ पहलवी या सुरियानी भाषा से अरबी में अनुवादित हुए थे । मुक़फ़्फ़ा ने कितने ही यूनानी दर्शन-ग्रंथों के अनुवाद अरबी में किये थे ।

हारून और मामून के अनुवादकों में कुछ संस्कृत के पंडित भी थे, जिन्होंने वैद्यक (आयुर्वेद) और ज्योतिष के कितने ही ग्रंथों को अरबी में अनुदित करने में सहायता की ।

इस तरह हम देखते हैं कि मुसलमान तब न केवल स्वयं ज्ञान पैदा कर रहे थे, बल्कि जहां से भी वह प्राप्त किया जा सकता था वहां से भी प्राप्त करने के लिए यत्नशील थे । इनकी उस युग के यूरोप से तुलना करें जहां एकदम अज्ञानता का अंधकार फैला हुआ था । हेंड्रिक विलेमू वान लून ने अपनी पुस्तक 'The story of Mankind' (मनुष्य जाति की कहानी) में लिखा है कि वे ऐसे सारे तथ्यों या बातों से अनवगत थे जिन्हें आजकल का बारह वर्षीय लड़का अच्छी तरह जानता है । इनके पास कुल एक पुस्तक थी अर्थात बाइबल । इसी पुस्तक को वे विद्या का क्रोश मानते थे, किन्तु बाइबल के वे अंश जिन्होंने मानवजाति के इतिहास को प्रभावित किया है, न्यू टेस्टामेंट के वे अध्याय हैं जिनमें प्रेम, दान और क्षमा की धार्मिक शिक्षाएं दी गयी हैं । ज्योतिष, प्राणि-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान और ज्यामिति जैसे अन्य अनेक विषयों के लिए यह पवित्र पुस्तक बिल्कुल ही विश्वसनीय नहीं ।

(मनुष्य जाति की कहानी, हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, पृष्ठ 198-99)

बाइबल के बाद यूरोप के लिए अरस्तु की कृतियों का महत्व रहा है, वस्तुतः सदियों बाद यूनानी दर्शन की ओर मुड़ने का ही तो नाम पुनर्जागरण है । लेकिन यूरोप को इस दर्शन व साहित्य को पढ़ने का अवसर दिया मुसलमानों ने और उनके द्वारा किये गये अरबी अनुवादों ने ।

जब 7वीं शताब्दी में मुसलमानों ने मिस्र पर विजय पायी तो उन्होंने अरस्तु की रचनाओं का अरबी में अनुवाद कराया । फिर वहां से मुसलमानी सेनाओं के साथ यह अनुवाद स्पेन पहुंचा और अरस्तु का दर्शनशास्त्र कारडोवा के मूरिसी विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने लगा । इसके बाद ईसाई शिक्षार्थी जब शिक्षा ग्रहण करने के लिए स्पेन पहुंचने लगे तो उन्होंने उस अरबी अनुवाद का लैटिन भाषा में अनुवाद कर लिया । उन्होंने और भी मौलिक अरबी पुस्तकों का और विभिन्न भाषाओं से अरबी में अनूदित पुस्तकों का भी लैटिन में अनुवाद किया । इस तरह तैयार की गयी ज्ञान-विज्ञान की ये पुस्तकें उत्तर-पश्चिम यूरोप के विभिन्न स्कूलों में पढ़ाई जाने लगीं ।

इस अध्ययन ने मध्यकालीन यूरोप के अंधकार को धीरे-धीरे नष्ट करना शुरू कर दिया । वह पुनर्जागरित हुआ और ज्ञान-विज्ञान का एक नया युग शुरू हो गया ।

अब आपको थोड़ा समझ में आ रही गया होगा कि मुसलमान आधुनिक विश्व की उन्नति के पीछे कैसे कार्यरत रहे हैं । यदि उन्होंने यूनानी दर्शन व साहित्य का अरबी में अनुवाद न करवाया होता और यदि मुसलमानों ने यूरोप विजय के लिए अभियान न छेड़ा होता तथा स्पेन में यदि सुमेल न हुआ होता तो यूरोप पता नहीं कब तक अंधकार में ही डूबा रहता । आज का विश्व भी तब शायद इस तरह का न होता ।

आज यूरोप ने मानवीय ज्ञान और सुविधा में वृद्धि की है, उसके पीछे मुसलमानों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता । राहुल सांकृत्यायन ने तो 'दर्शनदिग्दर्शन' में 'यूरोप पर इस्लामी दार्शनिकों का ऋण' शीर्षक एक पूरा अध्याय ही लिख दिया है, जिसे दर्शन में रुचि रखने वालों को अवश्य पढ़ना चाहिए ।

सूचकांक सुख-शांति का

संयुक्त राष्ट्र की 2015 की
वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट में
भारत का स्थान 117वां है !
जबकि पाकिस्तान का 81वां
छोटे से भूटान का 79वां !
स्विटज़रलैंड प्रथम स्थान पर है
कनाडा 5वें, अमेरिका 15वें
ब्रिटेन 21वें, फ्रांस 29वें
जापान 46वें, रूस 64वें नम्बर पर 1
क्यों हैं हम इतने पीछे इस मामले में भी ?
क्यों हैं नेता से लेकर आम आदमी तक
उद्योगपति से बाबू तक रात-दिन
तनावग्रस्त चिंतित परेशान ?
क्यों नहीं ध्यान देता कोई इस ओर ?
छोटे से संयुक्त अरब अमीरात ने
एक अनोखी पहल की है–
हैप्पीनेस और सहिष्णुता मंत्रालय बनाए हैं
जो लोगों की खुशहाली सुनिश्चित करेंगे !

ओमप्रकाश बजाज
166-कालिंदी कुंज, पिपलिहाना,
रिंग रोड, दंदौर (म०प्र०)

क्या करें जब हार्ट फेल्योर हो जाए

■ डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव

दरअस्ल हार्ट फेल्योर हृदय की उस अवस्था को कहा जाता है जब उसकी मांसपेशी कमज़ोर हो जाया करती है तथा वह हर धड़कन के साथ रक्त की आवश्यक मात्रा को पम्प करने में सक्षम नहीं होता । यह स्थिति मुख्य रूप से हृदय की मांसपेशी (कार्डियोमायोपैथी) की अन्दरूनी दुर्बलता के कारण होती है । इसके कारण हृदय वाहिकाओं में रुकावट (कोरोनरी धमनी का रोग, दिल के वाल्ब की बीमारी तथा जन्मजात विकृति (दिल में छेद) सहित अन्यान्य कारणों से भी हार्ट फेल्योर की समस्या के होने की संभावना रहती है ।

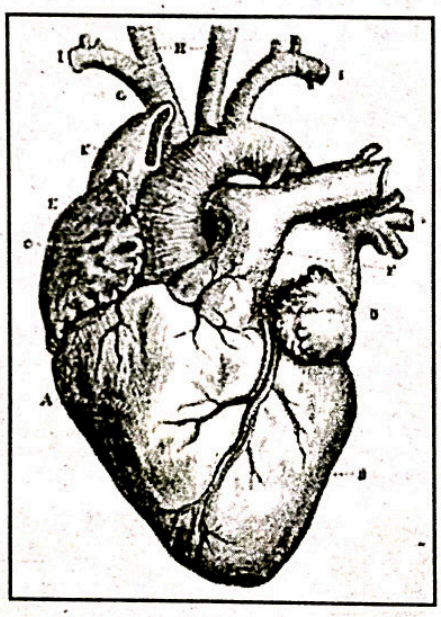

हार्ट फेल्योर की पहचान अनेक लाक्षणिक आधार पर की जा सकती है । इस मर्ज़ के सामान्य लक्षणें के संबंध में जानकारी के अभाव में लोगों में अमूमन इन्हें उम्र बढ़ने तथा अधेड़ावस्था अथवा वृद्धावस्था का संकेत माना जाता है । इस बीमारी के कतिपय प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं । हार्ट फेल्योर की स्थिति में रोगी की सांस फूलने लगती है.। किसी प्रकार का शारीरिक कार्य तथा हलका श्रम करने पर भी सांस संबंधी तकलीफ़ महसूस होती है । रोग की गंभीर अवस्था में बिस्तर पर लेटे रहने पर भी मरीज़ की सांस फूलती है । उसे थकान तथा कमज़ोरी का अनुभव होता है । टख़नों तथा पैरों में सूजन होने लगती है तथा हृदय स्पन्दन तीव्र अथवा अनियंत्रित हो जाती है ।

हार्ट पेल्योर दो प्रकार का होता है । पहला सिस्टोलिक हार्ट डिसफंक्शन तथा दूसरा डाइस्टोलिक हार्ट डिस्फंक्शन । रोगी में ये दोनों प्रकार के हृदय रोग एक साथ या अलग-अलग मौजूद हो सकते हैं । सिस्टोलिक हृदय रोग तब होता है हृदय कमज़ोर हो जाता है तथा इसका आकार सामान्य अवस्था से बड़ा हो जाया करता है । इस परिस्थिति में हृदय मानव शरीर के शेष भागों को आक्सीजन तथा पौष्टिक तत्वों की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति करने हेतु आवश्यकतानुसार रक्त की पम्पिंग में असमर्थ हो जाता है । डाइस्टोलिक हार्ट डिसफंक्शन की स्थिति तब होती है जब हृदय में जकड़न महसूस होती है तथा इस अवस्था में हृदय पर अस्वाभाविक दबाव बढ़ जाता है और यह फेफड़ों तक फैल जाया करता है । हृदय की दीवार बढ़ जाती है तथा हृदय के वाम कक्ष का आकार सामान्य अवस्था से कम तथा संकुचित हो जाया करता है ।

इस रोग के अनेकानेक कारक हैं । उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रेशर), मधुमेह, हृदय बाल्व रोग तथा रयूमेटिक हृदय रोग से पीड़ित रोगियों में यह रोग होने की संभावना अधिक रहती है । अत्यधिक मदिरा सेवन, मांसाहार, मिर्च मसालों की खाने तथा अनियंत्रित खानपान जैसे कारणों से भी यह बीमारी होती है ।

हार्ट फेल्योर का उपचार मूल रूप से तीन प्रकार से किया जाता है । सार्वप्रथम इसका उपचार डाइयूरेटिक्स, बीटा ब्लाकर्स, एंजियोटेनसिन, रिसेप्टर ब्लाकर्स (ए॰आर॰बी॰) जैसी औषधियों से किया जाता है । हृदय की धड़कन को नियंत्रित तथा लयबद्ध करने के लिए कार्डिएक रीसिन्क्रोनाइजेशन तथा पेसमेकर सरीखे उपकरणों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करने की सलाह दी जाती है । हार्ट पेल्योर का अंतिम तथा निर्विकल्प उपाय हार्ट सर्जरी यानी शल्य चिकित्सा है जिस में रोग ग्रस्त हृदय का रिप्लेमेंट सम्मिलित है जिसे हृदय प्रत्यारोपण के नाम से भी जाना जाता है । जो रोगी गंभीरावस्था में हैं, हृदय प्रत्यारोपण के योग्य नहीं है तथा हार्टडोनर (हृदय दाता) का अधिक समय तक इन्तिज़ार नहीं कर सकते, वे लेफ्ट वेट्रिकल असिस्ट डिवाइस नामक हार्ट असिस्ट पम्प की मदद हृदय रोग विशेषज्ञ चिकित्सक के परामर्शानुसार ले सकते हैं ।

طبقات دوزخ سات ہیں۔ستر۔سعیر۔فطی۔حطمہ۔جحیم۔جہنم اور ہادیہ۔

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

قادری قبض روجن ®

گیسٹک کے درد میں؟



بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

زعفرانی تیل ®

گٹھیا کے درد میں؟



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشتک چورن ®



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی ®

شوگر کی کامیاب دوا



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے



دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا ممسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

کیسر فورٹ ®

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



اگر مرد کی قوت میں مردانگی میں کمزوری واقع ہو تو اس کو ضعف باہ کہتے ہیں اور اگر وظیفہ زوجیت ادا کرنے کے بالکل قابل نہ ہو تو اس کو نامردی کہتے ہیں۔ ان کا تکالیف کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے قیمتی یونانی جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کر لی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سوتے وقت دودھ کے ہمراہ

Qadri Dawakhana ™
8-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S. A. Farooque Road. (Akra Road) Kolkata-700 010
Ph. No. 2469-3173-2489-3539 (M) 9830009616 / 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana60@yahoo.co.in

STOCKIST

Qadimi Dawakhana
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

M/s. Shifa Clinic
A-280, Moti Masjid Road,
P.O. Chikamberpur, Shaheed Nagar
Ghaziabad, Ph : 0120 - 2621286

सूखे का सामना करने में समाज की व्यापक भागीदारी ज़रूरी

■ भारत डोगरा

आज देश का एक बड़ा भाग सूखे की चपेट में है । करोड़ों गांववासियों के लिए भूख और कुपोषण की समस्या विकट हो रही है । उसमें से बड़ी संख्या में ज़रूरतमंद लोग रेलों और बसों में लदकर रोज़ी-रोटी की तलाश में अनिश्चित भविष्य की ओर पलायन कर रहे हैं । अन्नदाता किसान स्वयं दाने-दाने को तरस रहे हैं । हज़ारों गांवों में युवाओं के पलायन के बाद असहाय वृद्ध माता-पिता बहुत संकट की स्थिति में रह रहे हैं । भूख-प्यास का संकट गांवों में बढ़ता जा रहा है । गाय-बैल सहित विभिन्न पशुओं का जीवन ख़तरे में है, भूसे-चारे की गंभीर कमी है ।

पर घोर आश्चर्य की बात है कि देश के महानगरों में संपन्न व मध्यम वर्ग का जीवन ऐसे चल रहा है जैसे सब कुछ सामान्य हो, कोई विशेष चिंता की बात ही न हो । यहां तक कि सूखाग्रस्त शहरों के बहुत पास में ही अनेक गांवों में भी ऐसी ही स्थिति द्रिखायी पड़ती है । हां, गांवों से मज़दूरी के लिए आये अनेक लोगों की बढ़ती उपस्थिति से यह ज़रूर दर्ज होता है कि ग़रीबी व बदहाली बढ़ी है, पर इन चिंताजनक संकेतकों को प्राय: नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है और शहरी जीवन ऐसे चलता रहता है जैसे सब कुछ सामान्य हो । अत: यह ज़ोर देकर कहना ज़रूरी है कि स्थिति सामान्य नहीं है । विषमता और अन्याय की व्यवस्था के कारण देश की जनता के एक बड़े हिस्से के लिए ग़रीबी और अभाव की समस्या तो पहले से गंभीर बनी हुई थी । हाल के समय में मौसम बार-बार प्रतिकूल होने के कारण खेती-किसानी की स्थिति और संकटग्रस्त हो गयी है । इस कारण बहुत से गांवों में भूख-कुपोषण, बेरोज़गारी के संकट तेज़ी से बढ़ गये हैं । कुछ तो अनुचित नीतियों के कारण व कुछ सरकार की उपेक्षा के कारण यह सभी समस्याएं और गंभीर हो गयी हैं ।

जलवायु-बदलाव के दौर में यदि आप अनेक सूखाग्रस्त क्षेत्रों के किसानों से बातचीत करें तो पता चलेगा कि केवल मौसम का सूखा नहीं है । मौसम की परिस्थितियां बार-बार प्रतिकूल हो रही हैं–कभी बेमौसमी अति वृष्टि व ओलों से, कभी सूखे की मार से तो कभी बाढ़ से । बढ़ती आपदाओं व प्रतिकूल मौसम के दौर में सरकार ने खेती-किसानी व गांवों की रोज़ी-रोटी की रक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया है । जिस समय गांवों व किसानों को राहत देने व पोषण कार्यक्रमों को बढ़ाने की ज़रूरत थी, उस समय सरकारों ने इन मदों पर बहुत कटौतियां की हैं ! बड़े नेताओं की हालत यह है कि अपने राज्य के गंभीर सूखे की घोषणा के समय में ही एक नेता ने हाल ही में बहुत धूमधाम से जन्मदिन मनाया, बॉलीवुड के सितारों को भव्य बर्थडे पार्टी में बुलाया व 76 किलोग्राम का केक काटा । विलासिता के बाज़ार में भला अन्नदाता किसान और अपनी मेहनत के कंधों पर देश को थामने वाले मज़दूरों की चिंता किसे है । अत: यह और भी ज़रूरी है कि संवेदनहीनता होती इस व्यवस्था की संवेदना और सार्थकता के प्रयासों को जीवित रखने के प्रयास बढ़-चढ़कर किये जाएं । यदि विभिन्न शहरों के संवेदनशील लोग सक्रिय हों तो वे चंद दिनों में करोड़ों रुपये व हज़ारों क्विंटल अनाज एकत्र कर सभी सूखाग्रस्त ज़रूरतमंद गांवों में अनाज बैंक स्थापित कर सकते हैं ।

बुंदेलखंड के कुछ गांवों में जहां यह प्रयास किया गया है वहां गांव में जागरूक गांववासियों (महिलाओं व पुरुषों को बराबरी प्रतिनिधित्व व कमज़ोर वर्ग का मुख्य प्रतिनिधित्व) की समिति बनायी गयी है जो ज़रूरतमंद लोगों की सही पहचान कर अनाज बैंक से उन्हें समय पर अनाज उपलब्ध कर सकती है ताकि कोई भूखा न सोए । एक अनाज बैंक

पांच क्विंटल अनाज से आरंभ हो तो अच्छा है, पर दो क्विंटल से भी आरंभ हो सकता है । दो क्विंटल गेहूं की क़ीमत लगभग 3500 रुपये है । इस तरह अपेक्षाकृत कम ख़र्च पर ही ज़रूरतमंद गांवों में भूख कम करने के प्रयास से एक मर्यादित व संगठित 3500 रुपये है । इस तरह अपेक्षाकृत कम ख़र्च पर ही ज़रूरतमंद गांवों में भूख कम करने के प्रयास से एक मर्यादित व संगठित ढंग से जुड़ा जा सकता है ।

इसके अतिरिक्त ज़रूरतमंद गांवों में अपेक्षाकृत संपन्न परिवारों को इनके लिए और प्रेरित किया जा सकता है कि वे सबसे निर्धन परिवारों के दुख-दर्द से जुड़े रहें । उनके सहयोग व बाहरी सहयोग से असहाय वृद्ध लोगों के लिए कम्यूनिटी किचन का आयोजन किया जा सकता है, जिसमें वृद्ध असहाय व्यक्तियों को दिन में कम से कम एक बार पूरे मान-सम्मान से भोजन पका कर खिलाया जा सके । लगभग 10 वृद्धों को इस तरह एक दिन भोजन खिलाने का ख़र्च 600 रुपये में सिमट सकता है, जो कि महानगर के किसी रेस्त्रां में एक व्यक्ति के भोजन के बराबर है ।

शहरों में बहुत से प्रवासी मज़दूर पहुचं रहे हैं । सर्दी का मौसम सामने है । उनके लिए ऊनी वस्त्र व कंबल एकत्र करने, आश्रय की व्यवस्था करने या पहले से बने रैन बसेरों की जानकारी उन्हें देने, कुछ समय के लिए उनके भोजन या चाय की व्यवस्था करने व उन्हें यथासंभव किसी रोज़ी-रोटी के अवसर से जोड़ने के प्रयास हो तो इससे उन्हें सहायता मिलेगी ।

इस तरह के प्रयास चाहे अपने में छोटे प्रयास ही हैं, पर इनसे हम ज़रूरतमंदों का दुख-दर्द ही कम नहीं करते हैं बल्कि उन्हें यह एहसास दिलाते हैं कि हम देश के लोग एक-दूसरे के दुख-दर्द से जुड़े हैं । इस तरह या काफ़ी संवेदना व बढ़ते दुख-दर्द कम करने का कार्य तो है, साथ ही राष्ट्रीय एकता व देश को जोड़ने का कार्य भी ।

(विविधा फ़ीचर्स)

लघुकथाएं

दीवार

रामकिशन के मां-बाप को गुज़रे छह महीने हो गये थे । अब भी रामकिशन और उसके छोटे भाई जयकिशन की गृहस्थी सांझे में चल रही थी । दोनों भाइयों में बहुत प्यार तथा अटूट विश्वास था । एक दिन घर के आंगन में खेलते-खेलते उनकेद बच्चों में झगड़ा हो गया था । बच्चों के इस झगड़े को लेकर उनकी पत्नियों में भी जमकर कहासुनी हुई और घर को कुरुक्षेत्र का मैदान बना डाला । शाम को दोनों भाई जब दफ़्तर से लौटकर घर आये तो उनकी पत्नियों ने अपने-अपने बच्चो का पक्ष लेकर उनके कान भर दिये । जिसका परिणाम यह निकला कि दोनों भाइयों की बोलचाल बंद हो गयी । बोलचाल बंद होने से उनके दिलों में दूरियां बढ़ती चली गयी ।

घर के जिस आंगन में वे दोनों खेल-कूद कर बड़े हुए थे, आज उसी आंगन के बीचो-बीच दीवार खिंचवा दी गयी थी । अब एक आंगन में दो आंगन हो गये थे । उन दोनों को लगा था कि यह दीवार घर के आंगन में नहीं बल्कि उनके दिलों पर खींच दी गयी है । पर चाह कर भी वे एक-दूसरे को अपने दिल की बात कह नहीं पा रहे थे ।

ईनाम

दंगल में ग्यारह हज़ार रुपये की इनामी कुश्ती चल रही थी । दोनों पहलवान एक-दूसरे को पराजित करने के लिए जी-तोड़ प्रयास कर रहे थे । वे एक-दूसरे पर दांव चलाते पर हर बार विफल हो जाते थे । दोनों में बराबर की टक्कर थी । लड़ते-लड़ते वे दोनों थक कर चूर हो गये थे । लगता था उनकी कुश्ती अब बराबरी पर ही छूटेगी ।

तभी उनमें से एक पहलवान ने दूसरे पर दांव चलाया और उसे अपने नीचे ले आया । उसने नीचे पड़े पहलवान के कान में धीरे से कहा कि कुश्ती के लिए निर्धारित समय ख़त्म होता जा रहा है और हमारी कुश्ती बराबरी पर छूट जाएगी । तू मेला कमेटी के निर्णय को तो जानता ही है । बराबरी पर छूटने वाली कुश्ती के पहलवानों को इनाम की राशि नहीं मिलेगी ।

मेरी बात मान और हार मानकर चित हो जा । ईनाम की राशि हम आपस में बांट लेंगे । हार के नाम पर तू छह हज़ार रुपये ले लेना और जीत के नाम पर मैं पांच हज़ार रुपये में ही संतोष कर लूंगा । नीचे पड़े पहलवान को अपने प्रतिद्वंद्वी की बात पसन्द आयी और अगले ही पल वह चित हो गया ।

● रोहित यादव

प्रिंट मीडिया का बदलता इतिहास

■ नरेश सिहाग 'बोहल'

संसार में मुद्रण यंत्रों का विकास ज्ञान, विज्ञान, संदेश, समाचार धार्मिक आख्याओं का आविर्भाव भी सर्वप्रथम चीन में ही हुआ है । उसके बाद कोरिया व जापान में इसका प्रचलन अस्तित्व में आया । 14वीं शताब्दी में ही चीन देश ने मुद्रण यंत्र योज लिया था । मुद्रण कला में चीन के बाद इटली का नाम आता है । भारत में प्राचीनतम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना गोवा में 1556 में हुई थी । प्रारंभ में इन छापाख़ानों से बाइबल सहित अन्य धार्मिक पुस्तकों की छपाई होती थी । 1779 में कलकत्ता में अंग्रेज़ी भाषा की सामग्रियों के प्रकाशन के लिए प्रेस खोली गयी ।

भारत में 'बंग़ाल गज़ट' के नाम से पहला अंग्रेज़ी समाचार पत्र 1780 में जेम्स आगस्ट्स हिक्की द्वारा कलकत्ता में प्रकाशित किया गया । भारतीय भाषाओं में समाचार पत्रों के प्रकाशन का काम सर्वप्रथम राजाराम मोहनराय द्वारा किया गया । बहुत मंथन के बाद हिन्दी भाषा का सबसे पहला समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' माना जाने लगा । इसके प्रकाशन की शुरुआत 30 मई 1826 को पं॰ युगलकिशोर शुक्ल ने किया था । इसके बाद 10 मई 1829 में राजाराम मोहनराय के प्रयास से 'हिन्द हेराल्ड' नामक अख़बार प्रकाशित होना शुरू हुआ । यह अख़बार हिन्दी, फ़ारसी, बंगला और अंग्रेज़ी भाषाओं में छपता था । 1854 में प्रथम दैकि समाचार पत्र 'समाचार सुधावर्षण' नाम से श्री श्याम

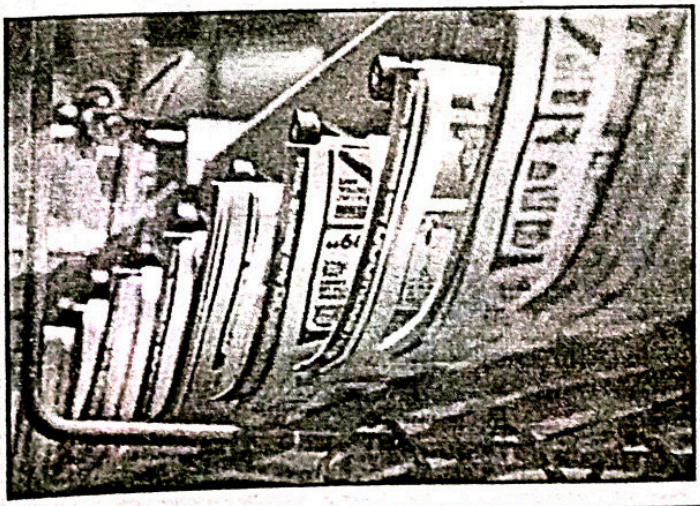



सुंदर सेन द्वारा संपादित एवं प्रकाशित किया गया । वर्तमान समय में प्रिंट मीडिया जन संचार माध्यमों की एक प्रमुख विधा है । मीडिया के क्रांतिकारी विकास के चलते आज पूरे विश्व की परिकल्पना एक 'ग्लोबल विलेज' के रूप में हो गयी है । आज के वैज्ञानिक युग में प्रिंट मीडिया के त्वरित विकास में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों व तत्वसंबंधित मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है । घटनाओं, समाचारों, सूचनाओं संवेदनाओं, विचारों का स्रोत हर मीडिया के लिए लगभग एक ही होता है फिर भी प्रिंट मीडिया की अपनी एक अलग पहचान है ।

प्रेस एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसका जन-मन पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है । जिसके माध्यम से किसी समाचार या विचार के पक्ष, विपक्ष पर और अधिक रोशनी डाल सकते हैं । गहन चिंतन के माध्यम से विशेषकर देश की जनता के विचारों, मनोकामनाओं में पनिवर्तन कर सकते हैं । विभिन्न विधाओं के विशेष लेखों, अभिलेखों, अस्थायी और स्थायी लेखों से पाठकों को इतनी विविध प्रकार की सामग्री प्राप्त होती रहती है, जो अन्य किन्हीं और प्रसार माध्यमों से असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है ।

प्रिंट मीडिया के माध्यम से बड़े-बड़े नेताओं के साक्षात्कार से लेकर वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, संत महात्माओं, समाज सेवियों आदि के मौलिक विचारों को संग्रहित व प्रकाशित कर मस्तिष्क की भूख मिटाने में बहुत बड़ा

योगदान है । इसमें सबसे बड़ी सुविधा यह है कि समाचार पत्र-पत्रिकाएं अपने पास सुरक्षित रख ली जाने के बाद जब-जहां जैसे ही समय मिले वे पढ़ी जा सकती है ।

विशेषकर संदेश, समाचारों के लिए फैक्स मशीनों का उपयोग भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत ही आता है । एक तरह से इसे प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का मिला-जुला रूप कहा जा सकता है । प्रिंट मीडिया से एक ही समाचार पत्र के तमाम शहरों में अलग-अलग प्रकाशन संभाव्य हो गये हैं । इन विधाओं में मोडम, आई॰एस॰डी॰एन॰ एवं सेटेलाइट आदि के नाम उल्लेखनीय है । केवल छपाई की मशीन स्थानीय समाचार संकलन के लिए कुछ संवाददाताओं, विज्ञापन, प्रसार, कर्मियों एवं समाचारों की पंचिग के लिए कुछ कंप्यूटर आपरेटरों की नियुक्ति से पूरा का पूरा संस्करण बड़ी आसानी से प्रकाशित किया जा सकता है ।

कुल मिलाकर प्रिंट मीडिया से जितने अधिक विचारों, समाचारों एवं विविध विषयों की सामग्री पढ़ने को मिल जाती है उतनी अधिक सामग्री दूरदर्शन अथवा आकाशवाणी से देखने-सुनने को नहीं मिलती । प्रिंट मीडिया में अपने पत्र एवं पत्रिकाएं अधिक से अधिक संख्या में पाठकों तक पहुंचाती है । समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं का काम आज सूचनाएं देने तक ही सीमित नहीं रह गया है, अपितु अभिव्यक्ति के संवाहक, वाणी, वाद-राजनैतिक एवं धार्मिक परिवर्तनों के उद्घोषक भी है । जिसमें समग्र मानवता का कल्याण सान्निहित रहता है । भ्रष्टाचारों, पाखंडियों, माफ़ियाओं, घोटालेबाज़ों के ख़िलाफ़ आम व्यक्ति के लिए एक सशक्त दस्तावेज़ है ।

प्रिंट मीडिया में सर्वाधिक महत्व दैनिक समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का ही होता है । बड़े-बड़े समारोहों, चुनाव, सम्मेलनों, अधिवेशनों व धार्मिक समारोहों का प्रचार-प्रसार भी प्रिंट मीडिया द्वारा किया जाता है । विभिन्न विषयों की पुस्तकों, बस टिकट, डाक टिकट, रेल टिकट, स्टांप पेपर आदि का प्रकाशन भी प्रिंट मीडिया के अंतर्गत आता है । वर्तमान में प्रिंट मीडिया में क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहे हैं । समाचार पत्रों, पत्रिकाओं व विभिन्न विषयों की पुस्तकों के कलेवर बड़ी तेज़ी से बदल रहे हैं । आज कलर प्रिंटिंग मशीनों ने उनकी कायाकल्प ही कर दी है । महंगाई के वर्तमान युग में पत्र-पत्रिकाएं निकालना कठिन कार्य है फिर भी प्रिंट मीडिया का भविष्य उज्ज्वल है ।

दोहे

तुलसी पीपल अल्पना, नीम निबौरी गंध ।
नीलामी पर चढ़ गया, रिश्तों का मकरन्द ।।

जीवन का उल्लास से, टूट गया संवाद ।
सुबह उदासी लिख रही, शाम पढ़े अवसाद ।।

जाति-जाति में जाति की, राजनीति का काल ।
नेता अब फैला रहे जाल-जाल में जाल ।।

लक्ष्य नहीं है ज्ञात, पर दौड़ रहा बेकार ।
एक निरर्थक दौड़ में, यह सारा संसार ।।

भगा रहा है आजकल, इसको अर्थ-विकार ।
सन्निपात रोगी हुआ, जाने क्यों सांसार ।।

बना हुआ संसार यह, केवल बड़ी दुकान ।
बिकते हैं सौंदर्य, सुख, दर्द, प्रीति, ईमान ।।

पत्थर महंगे बेचता, यह पागल संसार ।
आंसू की कौड़ी नहीं, देने को तैयार ।।

हंसी, रूदन, किलकारियां, बिकने को तैयार ।
पर क़ीमत देता नहीं, व्यापारी संसार ।।

● राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर'

अतिरिक्त हूं

दुविधा ग्रस्त हूं दुविधा मुक्म हूं,
हूं स्वतंत्र मैं फिर भी युक्त हूं ।
रेशम जल से दूर खड़ा अति,
भाल नीर से सदा सिक्त हूं ।
जागी सांसों का हूं गीत,
मधुर कभी तो कभी तिक्त हूं ।
पत्थर के बिल्कुल विपरीत,
पानी की भाषा में उक्त हूं ।
शब्दों की काया में सीमित,
पर आशय में अतिरिक्त हूं ।

शुचि वन्दना
लाजपत नगर-4, नयी दिल्ली

बदलनी होगी विकास की अवधारणा

■ सवाई सिंह

गत दिनों दिल्ली में प्रदूषण कम करने की दिशा में वाहनों को कम करने के तरीक़े पर विचार किया गया, उस पर क्रिया-प्रतिक्रियाएं हुईं । बात दिल्ली के प्रदूषण की ही क्यों करें, थोड़ी-बहुत हर शहर की यही कहानी है । यह कहानी भारत के शहरों की ही नहीं, बल्कि दुनिया भर के शहरों की है । चीन की राजधानी बीजिंग में भी प्रदूषण की समस्या से रेड अलर्ट जारी कर दिया गया है । बीजिंग की इस स्थिति का फ़ायदा उठाने के लिए भी कनाडा की एक कंपनी आगे आ गयी । कंपनी ने ताज़ी पहाड़ी हवा को बोतल में बंद करके 1850 रुपये में बेचना शुरू कर दिया । वह दिन दूर नहीं होगा जब भारत और अन्य देशों के शहरों में भी शुद्ध हवा के नाम पर कंपनियां बोतल बंद हवा का व्यापार शुय करेंगी । पहले शुद्ध पानी के लिए बोतल बंद पानी का व्यापार आया, अब शुद्ध हवा के लिए बोतल बंद के व्यापार ने प्रवेश कर लिया है । आख़िर यह चक्र अब तक चलेगा ?

यह चक्र तो यहां तक पहुंच गया है कि ओजोन परत में भी छेद हो गया है और पृथ्वी की परत भी प्रदूषित हो गयी अर्थात जलवायु ही बदलती जा रही है, जिसके गंभीर परिणाम के रूप में समुद्री तूफ़ान से लेकर भूकंपों की मार तक मनुष्य झेल रहा है । जलवायु परिवर्तन के प्रश्न पर 21 बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन हुए हैं । हाल ही फ्रांस में भी ऐसा ही एक सम्मेलन हुआ । दुनिया के प्रमुखों ने जलवायु परिवर्तन की गंभीरता पर विचार-विमर्श किया, लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारणों पर कार्य करने के ठोस क़दमों पर निर्णय नहीं हुआ । अर्थात यह कहावत सही साबित हुई कि 'ढाक के तीन पात' । प्रदूषित हवा और प्रदूषित मानसिकता के क्या कारण हैं ? उनके समाधान क्या थे, क्या हैं और कैसे रास्ते निकाले जाएं ? हमें अब यही सोचना होगा । आज जब हम यह सोचने को मजबूर होते हैं कि हर प्रकार के प्रदूषण के मूल कारण क्या हैं ? तो लंबे अनुभव व परिणामों के आधार पर कह सकते हैं कि जो दुनिया भर में विकास की अवधारणा बनायी गयी है ।

वह सही मायने में विकास की कम और विनाश की अधिक है । आज विकास के केन्द्र मनुष्य के स्थान पर मशीन ने जड़े जमा ली है । मशीन मनुष्य के सहयोग के लिए नहीं, बल्कि लाभ का शस्त्र बन गया है । लाभ के लालच ने मशीन को गलाकाट प्रतियोगिता में धकेल दिया । औद्योगकरण को सरकारों ने जमकर संरक्षण दिया, सरकारों को भरोसा था कि इन उद्योगों से व्यापक स्तर पर रोज़गार मिलेंगे । इन उद्योगों ने कुछ रोज़गार के अवसर तो दिये, लेकिन रोज़गार छीने अधिक, लाखों लोगों को विस्थापित भी किया । मशीन मालिक को धन की प्राप्ति जमकर हुई, जिससे पूंजीवाद की रफ़्तार तेज़ हुई, इससे भौतिकवादी सोच से सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का पतन भी तेज़ गति से हुआ है, तो दूसरी ओर कथित औद्यागिक क्रांति ने जल, वायु और पृथ्वी को प्रदूषित किया । इस औद्योगिक क्रांति ने ही मनुष्य के दिमाग़ में मांग पैदा करने की भूख जगाई, इसी से कुटीर और ग्रामोद्योग समाप्त हुए । कुटीर और ग्रामोद्योग के समाप्त होने पर वे भी रोज़गार के लिए शहरों की ओर दौड़े । इससे शहरीकरण हुआ । शहरीकरण ने प्रदूषण की समस्या को व्यापक आधार दिया, जिससे गंभीरतम बीमारियों में भी वृद्धि हुई । औद्योगिक क्रांति से चंद लोगों के पास पूंजी का संग्रह ख़ूब हुआ लेकिन अधिकांश लोग जीवन बसर करने के लिए संघर्षरत ही रहे । समाज में आर्थिक विषमता की खायी गहरी होती जा रही है ।

गांधी जी ने अपने अख़बार 'यंग इंडिया' में 13 नवम्बर 1924 को लिखा कि 'मुझे एतिराज़ मशीनों पर नहीं, बल्कि उसके लिए पागल बनने पर है । यह पागलपन श्रम बचाने वाले यंत्रों के लिए है । लोग श्रम बचाने में लगे रहते हैं, यहां तक कि हज़ारों लोगों को बेकार करके भूख से मरने के लिए छोड़ दिया जाता है । मैं भी समय और श्रम बचाना चाहता हूं । मगर मानव समाज के एक अंग के लिए नहीं, बल्कि सबके लिए । मैं भी धन इकट्ठा करना चाहता हूं, मगर थोड़े से आदमियों के हाथों में नहीं बल्कि सबके हाथों में । आज तो मशीन मुट्ठी भर लोगों को करोड़ों की पीठ पर सवार होने में ही मदद करती है ।

हमारी पाठ्य पुस्तकें

🕮 आसान कहानियाँ	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
🕮 अख़लाक़ी कहानियाँ – 1	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
🕮 अख़लाक़ी कहानियाँ – 2	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
🕮 अख़लाक़ी कहानियाँ – 3	अफ़ज़ल हुसैन		12.00
🕮 अख़लाक़ी कहानियाँ – 4	अफ़ज़ल हुसैन	[set 44.00]	12.00
🕮 क़ुरआन की बातें – 1(बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी		20.00
🕮 क़ुरआन की बातें – 2(बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी	[set 38.00]	18.00
🕮 नेक औरतें – 1	मतीन तरिक़ बाग़पती		15.00
🕮 नेक औरतें – 2	मतीन तरिक़ बाग़पती	[set 27.00]	12.00
🕮 नवीन सरल गणित – 1	सम्पादन समिति		30.00
🕮 नवीन सरल गणित – 2	सम्पादन समिति		35.00
🕮 नवीन सरल गणित – 3	सम्पादन समिति		50.00
🕮 नवीन सरल गणित – 4	सम्पादन समिति		50.00
🕮 नवीन सरल गणित – 5	सम्पादन समिति	[set 279.00]	114.00
🕮 प्यारे रसूल (सल्ल0)	अफ़ज़ल हुसैन		14.00
🕮 सामान्य ज्ञान (भाग – 1)	अफ़ज़ल हुसैन		08.00
🕮 सामान्य ज्ञान (भाग – 2)	अफ़ज़ल हुसैन	[set 18.00]	10.00
🕮 सच्चा दीन (पहला भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		55.00
🕮 सच्चा दीन (दूसरा भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		60.00
🕮 सच्चा दीन (तीसरा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		75.00
🕮 सच्चा दीन (चौथा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		80.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

इस सबके पीछे प्रेरक शक्ति श्रम बचाने की अच्छी भावना नहीं, बल्कि लोभ है । मैं इसी प्रकार की व्यवस्था के विरुद्ध अपनी सारी शक्ति लगाकर लड़ रहा हूं । उन्होंने कहा कि मैं यंत्रों के ख़िलाफ़ नहीं, परंतु उनकी जो बुराइयां आज प्रकट हो रही हैं उनके विरुद्ध लड़ रहा हूं ।' गांधी जी का मानना था कि कारख़ाने और मुनाफ़े के लिए नहीं, बल्कि मानवजाति के फ़ायदे के लिए होने चाहिए । आज जो धन कमाने की पागल दौड़ है, यह तुरंत बंद होनी चाहिए। हमारी सरकारें जे॰डी॰पी॰ बढ़ाने पर ज़ोर देती रही है लेकिन उसका लाभ आमजन तक क्यों नहीं पहुंचा ? ज्यों-ज्यों जी॰डी॰पी॰ बढ़ती है अमीर और अधिक अमीर होता है ग़रीब और अकि ग़रीब । हमारी विकास की नीति ने गत 14 वर्षों में जो विकास किया उसका परिणाम यह है कि एक प्रतिशत लोगों के पास देश की कुल संपत्ति का 37 प्रतिशत हिस्सा था । 2014 में यह बढ़कर 70 प्रतिशत हो गया है । इसका अर्थ यह है कि विकास किन का हुआ सीधे से समझ़ने वाली बात है ? बदले में इस तरह की विकास की अवधारणा ने आमजन के लिए जल, थल और वायु को प्रदूषित किया । जिसके परिणामों को हम भुगत रहे हैं ।

जिस तरह विकासशील राष्ट्रों में कुछ व्यापारिक घरानों के उद्योगों ने प्रदूषण फैलाया, उसी तरह दुनिया के विकसित राष्ट्रों ने ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कर विश्व के पर्यावरण को बड़ी क्षति पहुंचाई है । पेरिस पर्यावरण सम्मेलन 12वां था, लेकिन औद्योगिकरण की नीति में मूलभूत परिवर्तन क्या किया ? इससे पूर्व 20 सम्मेलन हो चुके हैं, लेकिन उनके भी कोई ठोस परिणाम नहीं आये और न ही पेरिस सम्मेलन का भी कोई परिणाम आने वाला है । जब तक आज की विकास की अवधारणा को नहीं बदला जाता है । वर्तमान में जो परिस्थितियां बनी हैं, उसमें हम कह सकते हैं कि जो विकास की अवधारणा बनी है, वह आमजन के लिए न तो आर्थिक रूप से न नैतिक दृष्टि से और न ही पर्यावरणीय दृष्ट से हितकारी है । बल्कि महात्मा गांधी की दृष्टि से जो विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा है, जिसे हम ग्राम स्वराज्य की अवधारणा भी कह सकते हैं, जिसमें आमजन की भागीदारी और आमजन का स्वावलंबन, विस्थापन मुक्त, शोषण मुक्त, प्रदूषण मुक्त और समतामूलक व्यवस्था की दिशा निहित है, उस ओर लौटने पर ही मानव-मात्र का सही विकास हो सकता है । (विविधा फ़ीचर्स)

बालवीथी

चील : तेज़ निगाहों वाला शिकारी

चील शिकार की तलाश में यह बड़े क्षेत्रों पर लंबे समय तक ऊपर उड़ने में सक्षम है । एक बार शिकार नज़र आ जाए, तो यह उस पर अचानक झपट्टा मार लेता है । शिकार करने के लिए चील इतनी रफ़्तार और ताक़त के साथ नीचे आता है कि शिकार के पास बचने का रास्ता ही नहीं होता । यह तकनीक इस पक्षी को अपने से बड़े जीव का शिकार करने में मदद करती है । दुनिया में शायद ही कोई ऐसा अन्य शिकारी होगा, जो इतनी विविध परिस्थितियों में शिकार करने में सक्षम है जैसे खुली चारागाहों में हिरण, जंगल में पेड़ों पर बैठे बंदर, चट्टान पर बैठे रॉक हाइरैक्स और समुद्र में तैर रही मछली पर ऐसी कुछ ही जगहें होंगी, जो चील की नज़र से बच जाएं ।

चील बाज़ परिवार से आने वाला एक पक्षी है । चील की चोंच हुकदार पंजे मुड़े हुए (जिन्हें टैलून्स कहते हैं), नज़र बेहद पैनी, पंख ताक़तवर, शरीर मज़बूत और पैर पंखों से ढके हुए होते हैं । उनकी दृष्टि असाधारण रूप से बहुत तेज़ होती है और यह पक्षी बेहद लंबी दूरी से संभावित शिकार को देखने की क्षमता रखता है । रोम के निवासियों का मानना था कि ज्यूपिटर का प्रिय पक्षी है और इसलिए यह रोमन साम्राज्य का राष्ट्रीय चिह्न बन गया । अमेरिकी भारतीयों की मान्यता के अनुसार एक पौराणिक पक्षी थंडरबर्ड ही तूफ़ान और बिजली के कड़कने के लिए ज़िम्मेदार होता है । इसलिए उन्होंने चील को थंडरबर्ड के प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल किया ।

अमेरिका ने अपने चिह्न के तौर पर बाल्ड ईगल (हैलियाईट्स ल्यूकोसिफैलस) को चुना है क्योंकि यह पक्षी

लंबे जीवन, असीम ताक़त और राजसी दिखावट के लिए मशहूर है । ज़ार के शासन के दौरान रूस ने भी इस पक्षी को अपने राष्ट्रीय चिह्न के तौर पर इस्तेमाल किया था । इसी पक्षी को अल्बानिया, आस्ट्रीया, इक्वाडोर, जर्मनी मैक्सिको, पोलैंड और स्पेन में या तो राष्ट्रीय ध्वजों पर जगह मिली है या फिर यह उनके कोट ऑफ़ आर्म्स के चिह्न में मौजूद है । इसके साथ ही यह इलिनॉयस, इयोवा, मिशिगन, न्यूयॉर्क, नार्थ डेकोटा, आरेगॉन, पैनसिल्वेनिया और उटाह के झंडों पर व अधिकारिक सील में भी दिखता है । यही नहीं यह कई एशियाई देश जैसे इंडोनेशिया, मंगोलिया और थाईलैंड का भी राष्ट्रीय चिह्न है ।

चील विश्व के सबसे शिकारी पक्षियों में से एक है । सबसे बड़े हार्पी ईगल (हार्पिया हार्पिजा) और फिलिपीन ईगल (पिथेकोफैगां जैफ़री) का वज़न 9 किलोग्राम (20 पौंड) तक का हो सकता है । और उनके पंख 2.5 मीटर यानी क़रीब 8 फुट तक फैल सकते हैं (चील के दो मुख्य समूह होते हैं) लैंड ईगल्स, जिनकी टांगों पर पंख होते हैं, जो अंगूठे तक फैले होते हैं; और सी ईगल्स या अर्न्स जिनकी टांगों के पंख अंगूठे के आधे हिस्से तक ही पहुंचते हैं । विश्व में चील की 80 से ज़्यादा प्रजातियां हैं । सबसे सामान्य प्रजाति होती है गोल्डन ईगल जो लैंड ईगल है और बाल्ड ईगल, जो सी ईगल है ।

बाल्ड ईगल इकलौता चील है, जो सिर्फ़ उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है । इसके विशिष्ट भूरे शरीर और सफ़ेद सिर और पूंछ के कारण इसे दूर से भी पहचाना जा सकता है । उड़ान के समय बाल्ड ईगल शायद ही अपने पंख फड़फड़ाती है बल्कि यह अपने पंख सीधे रखते हुए ही बेहद ऊंचाई तक पहुंचने में सक्षम है । इसकी हुकदार चोंच, पैर और पंजे पीले रंग के होते हैं ।

गोल्डन ईगल, उत्तरी गोलार्द्ध में सबसे प्रसिद्ध शिकारी पक्षी है । यह चील की सबसे ज़्यादा पाई जाने वाली प्रजाति में से है । इनके पंख भी बेहद लंबे होते हैं और पूंछ भी ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



With Best Compliment From

DR. M. A. PATANKAR

Al-Khaleej Diagnostic Centre









M-2, 2nd Floor, Above SBI Bank
South Extension Part-2, New Delhi-110049
Email : alkhaleejdc@yahoo.com
Tel. No. : 011-26262680-41646577

Posted on 20-21 March 2016
April 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.03.2016
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

JANSEVA
Making Money Moral

Linking you to the
Best of both Worlds...

Our dream society
without Interest



Save , Invest and Earn Halal Income ensuring fair distribution of income and wealth in the society.

Janseva Cooperative Credit Society Ltd.
Multistate
Interest Free

DARBHANGA BRANCH:- RASOOLPUR, P.O- MEDICAL COLLEGE DARBHANGA BIHAR 846003
CITY OFFICE:- KARAM GANJ BEHIND ZILA SCHOOL LAHERIA SARAINDARBHANGA
CONTACTS:- 06272295436,9386225579,9097852575
Admin: 7/25-A, 2nd Floor, Grants Building, 17, Arthur Bunder Road, Colaba, Mumbai – 400 005
Regd. Office: AICMEU, Vazir Building, First Floor, 179, I.R. Road, Mumbai – 400 003
Website: www.janseva.in Email: janseva@janseva.in Tel: 022- 22818178
JansevaCCS JansevaCCS